आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक
डॉ. सुभाष जैन, उज्जैन
प्रमुख सलाहकार
श्री प्रेमजी डूंगरवाल
35, तिलकनगर, इन्दौर
मोबा. नं.94253-13434
संपादकीय कार्यालय
डॉ.सुभाष जैन
46,सखीपुरा,उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं.-94250-91012
E-mail-Subash3333@yahoo.co.in
इन्दौर कार्यालय
प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''
1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O से **श्री अभ्युदयफाउण्डेशन**, उज्जैन के नाम सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी।

-डॉ.सुभाष जैन

यदि आपकी मनोवृत्ति ईर्ष्या की है तो आप हमेशा दुःखी रहेंगे। सतत नरक में रहेंगे। विक्षुब्ध मनःस्थिति का नाम ही नरक है। अपना स्वर्ग और नरक हम स्वयं चुनते है। - परम पूज्य गुरूदेव

आशीर्वाददाता
प.पू.मालव भूषण आचार्य श्रीनवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.
मार्गदर्शक एवं प्रेरक
प.पूज्य आचार्यश्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन
अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

जावंतऽविज्जा पुरिसा, सव्वे ते दुक्खसंभव।
लुप्पंति बहुसो मूढा, संसारम्मि अणंतए।।
- उत्तरा. सूत्र, 6.1

जितने भी अज्ञानी-तत्वबोधहीन पुरूष है, वे सब दुःख के पात्र है। इस अनन्त संसार में वे मूढ़ प्राणी बार-बार विनाश को प्राप्त होते रहते हैं।

पाथेय

वह सब जो मुझमें सचेतन है, निःशेष रूप में मैं कर चुका हूं तुम्हें अर्पण, और जो कुछ अंधेरी पाषण शैया के समान अचेतन है उसे भी जीतने का निरन्तर मैं कर रहा हूं प्रयत्न। हे प्रेम के दिव्य स्वामी, सनातन गुरू! हम केवल तुम्हें और तुम्हारे लिए ही चाहते हैं करना जीवन धारण। तुम हमारी चेतना को आलोकिक करो, हमारे कदमों को राह दिखाओ और हमें एक दृढ़ संकल्प प्रदान करो कि हम तुम्हारी सेवा एवं कार्य के हेतु ही अपनी संपूर्ण क्षमताओं का करेंगे प्रयोग और करेंगे संसिद्ध तुम्हारे नियम।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रूपये
आजीवन	1000/- रूपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रूपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रूपये
एक प्रति	10/- रूपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-21 माघ-अगहन दिसंबर 2016 अंक (12)

विषय-सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 1

2- विषय सूची 2

3- राष्ट्र है तो धर्म है....(सम्पादकीय)- डॉ. सुभाष जैन 3

4- नव वर्ष 2017 अभिनंदन, स्वागत- श्रीमती प्रभा जैन, जनसेवा की पुजारिन- डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि 4

5- श्री कयावन्ना-चरित्रम्-आचार्यश्री जयानंदसूरीश्वरजी म. 5-7

6- मधु बिन्दु के समान है काम-भोग- आ.श्री विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म. 8

7- माजी म.सा. के गुस्से ने पारणा कराया- साध्वीश्री शशिप्रभा श्रीजी, सतगुरू के दर्शन 9-10

8- पाप की सजा भारी...! -प.पू.आचार्य श्री अरूणविजयजी म. 11-12

9- सुनीलजी ने अट्ठाई करवाई- डॉ. सुभाष जैन, जीवन का सत्य 13-14

10-सागर समुदाय की श्रावक प्रवर समिति की बैठक में हुई चर्चाओं की जानकारी श्रमण एवं श्रावक वर्ग के लिये 15-16

11-तारंगा तीर्थ 17-18

12-सत्परामर्श अपने स्वभाव का एक अंग बने 19-20

13-छोड़ने लायक बावीस अभक्ष्य पदार्थ- प.पू.अमितगुणा श्रीजी म.सा., आशाएं- कु. दिव्या सृष्टि 'दिव्या' 21-23

14-धर्म पुरूषार्थ- मुनिश्री जितरत्नसागरजी 'राजहंस' अक्लमंद बनो, मंदअक्ल नहीं.... प.पू.आनंदसागर म. 24

15-सागर समुदाय के गौरव-पूज्यपाद आचार्यश्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा 25-26

16-शुद्ध प्रतिक्रमण 27-28

17-पूर्ण स्वतंत्रता : आठ कर्मों से मुक्ति, गुरू महिमा- रविलाल वोरा 29

18-वर्ग पहेली क्रमांक-265, 30

19-ज्ञान गंगोत्री कमांक-265 -पंन्यास प्रवर मृदुरत्नसागरजी म. 31

20-आगमोद्धारक भविष्य फल-दिसम्बर 2016-अनु दीपक जैन 32

21-शासन समाचार 33-39

22-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण,सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है 40

संपादकीय

राष्ट्र है तो धर्म है....

संतों की संगति सन्निधिवाले इस राष्ट्र को कोई भी ताकत मिटा नहीं सकती, हमारे धर्मग्रंथों में यह स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि जब तक भारत, भारत की भूमि पर सत्संग का प्रवाह बहेगा तब तक हिन्दुस्तान का कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा। क्योंकि यह राष्ट्र हिंसा को नहीं अहिंसा को महत्व देता है। अहिंसा अजेय है उसे कोई भी ताकत शिकस्त नहीं दे सकती है। यह भारत देश जमीन का एक टुकड़ा मात्र नहीं बल्कि जीता-जागता महापुरूष है, हमारे देश का नक्क्षा इसका जीवित उदाहरण है, हिमालय इसका शीश है, गौरीशंकर इसकी जटायें है, पंजाब और बंगाल इस देश के मजबूत कंधे है, विंध्यांचल इसकी कमर है, नर्मदा इसकी कटधनी है, मजबूत पैर महाराष्ट्र है हिन्द महासागर इसका प्रक्षालन करता है तो कश्मीर की केशर कलियां सिंदूर की तरह भारत की मांग संवार रही है। यह सब हमें विश्व के किसी देश में नहीं मिलता है। भारत यह गौरव भूमि है। जहां के लोग संतों के चरण में से धर्म मनाते है। भारत की भूमि संतों और संस्कारों की जननी है, इस भूमि पर परमात्मा का जन्म होता है, परमाणु का नहीं, इसीलिये भारत देश महान है।

यहां के बांशितों ने इस देश को कठोर परिश्रम से संतों ने साधना से, ऊंचाई तक पहुंचाया है, ऐसा चारित्र प्रदान देश कहीं और देखने को नहीं मिलता है। यहां संवेदना पर जीनेवाला देश है, विश्व के देश सारे संसार को एक व्यापार के रूप में इस्तेमाल करते है जबकि हम सारे विश्व का एक परिवार मानकर चलते है, हमने सभी को जीने का अधिकार दिया है, हम सर्वधर्म समभाव वाली मानसिकता का फैलाव करते है, सबको एक दूसरे के प्रति समभाव से जीने का संदेश इसी भरत भूमि की देन है, तभी तो यहां सभी धर्मों का अस्तित्व है। हमारे हमारी भाषा, धर्म संस्कृति के प्रति गौरव और अभिमान है। हमारा ध्वज तिरंगा एवं कपड़े का टुकड़ा नहीं है, यह भारत की आन,बान,शान है। हमारे लिये संतों और सैनिक दोनों ही महत्वपूर्ण है क्योंकि एक आंतरिक रक्षा करते है तो एक सीमा की रक्षा करता है, संत सबके लिये जीते है। हमारे देश का इतिहास इस बात का गवाह है कि जब भी देश पर कोई विपदा आई तो यहां के लोगों ने इसे स्वयं पर आक्रमण मानकर उसका सामना किया है, संतों ने तो इसे भी आगे बढ़कर जब देश पर आक्रमण हुआ तो उसे धर्म पर प्रहार मान, संस्कृति-सभ्यता-आचरण पर आक्रमण माना, संतों ने अपने तरीके से इस विपदा का सामना राष्ट्र के लोगों के साथ मिलकर किया और अहिंसा भाव रखते हुए उसका अपने तरीके से मुकाबला भी किया।

मैं आपको स्मरण दिलाना चाहुंगा कि हमारे आद्य महर्षि गुरूवर जिनकी दीक्षा का यह 125 वां वर्ष हम मनाने जा रहे है तथा विक्रम संवत 2077 पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री सागरानंद सूरीश्वरजी को आचार्य पद प्राप्ति का 100 वां वर्ष है, ऐसे गुरूदेव जब सूरत में विराजमान थे तथा देश आजादी के जश्न के साथ में बंटवारे से उपजी भयंकर हिंसा में लोगों को मारा काटा जा रहा था, उनकी संपति को लूटकर मकानों में आग लगाई जा रही थी तब सागरजी महाराजा ने जैनों से एक जोरदार अपील कर सभी पीड़ित लोगों के लिये राष्ट्रहित में एक जोरदार फंड कर सबकी मदद की, यही नहीं आपश्री के सुशिष्य मालवोद्धारक आचार्य श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा भी उसी पथ पर आगे बढ़े जब गुरूदेव श्री महाराष्ट्र के खान देश (जलगांव) की ओर विराजित थे तब साम्प्रदायिक हिंसा में गोधरा के अनेक लोग करोड़पति से रोड़पति हो गये थे तब आपश्री ने भी एक बढ़ा फंड इकट्ठा कर हजारों लोगों की मदद करवाई थी, यहीं परम्परा आज भी चल रही है। तो हमारे संतों ने हमेशा धर्म के साथ राष्ट्र की अस्मिता का पहले ध्यान रखा है। अगर मैं प्राचीनकाल की बात करूं तो खारवेल के समय धर्म पर जो आक्रमण हुए थे उस समय भी हमारे महर्षियों ने धर्म और राष्ट्र को बचाने के लिये महत्वपूर्ण कार्य किया था तभी आतातायियों से राष्ट्र और धर्म की रक्षा हो पाई थी उस समय जैनत्व को सबसे अधिक नुकसान उठाना पड़ा था। अगर सार्वजनिक रूप से हम सबसे प्रश्न करें कि समाज बढ़ा कि धर्म बढ़ा तो एक स्वर से यही उत्तर प्राप्त होगा कि -राष्ट्र है तो धर्म है, समाज है, अगर राष्ट्र ही नहीं है तो फिर धर्म, समाज कैसे जीवित रह पायेंगे। हमारे सामने उदाहरण है कि पाकिस्तान, बंगलादेश में स्थित सभी जैन मंदिरों को विध्वंस कर दिया गया है न राष्ट्र बचा न धर्म और न ही समाज। इसलिये राष्ट्रभक्ति सबसे बड़ी भक्ति है। हम गर्व और अभिमान के साथ यह कह सकते है कि हम संसारी हो कि संन्यासी हमारे यहां राष्ट्र भक्ति कूट-कूट कर भरी है।

हमारे राष्ट्र की पहचान, आध्यात्मिक चिंतन और विचार धाराओं से हम वासुदेव कुटुंबम् और जिये और जीने दो के सिद्धांत से है। भारत आज ज्ञान-ध्यान, साधना और संपत्ति में किसी भी अन्य राष्ट्र से कम नहीं है, हमारा राष्ट्र प्राचीनकाल से विश्व के सिर पर मुकुट जैसा है और हमेशा रहेगा। अन्य राष्ट्रों की प्रशंसा कर हम अपने आप को लज्जित नहीं करें बल्कि राष्ट्रहित में जहां भी आवश्यकता हो आगे बढ़कर अपना योगदान देने से नहीं चुके, यही हमारी राष्ट्र और धर्म भक्ति होगी।

तो आईये, आपने भी राष्ट्र भक्ति को हमेशा जीवित रखते हुए अपने धर्म का भी पालन करें तथा राष्ट्र के साथ धर्म के प्रति पूर्ण समर्पित जीवन अर्पित की भावना के साथ एक सच्चे राष्ट्र और धर्म भक्त बनें।

- डॉ. सुभाष जैन

नव वर्ष 2017 अभिनंदन, स्वागत

✻ श्रीमती प्रभा जैन, देवास

सन् 2016 आया था बड़े उत्साह से, धूमधाम से मनाया था, समय जाते देर नहीं लगती, अब कुछ ही दिनों में बिदा लेने जा रहा है, दिन बीते, घंटे बीते, मिनिट बीते व समय बीत गया। अब हम 2017 का स्वागत, अभिनंदन करने को आतुर है। परिवर्तन संसार का नियम है, हमारी जिन्दगी भी कैलेण्डर के समान है, जिस प्रकार प्रतिदिन तारीख बदलती है वैसे ही जिन्दगी भी बदलती रहती है, जिन्दगी की आयु भी कम हो गई, सांसें भी कम हो गई।

सन् 2016 अतीत होने जा रहा है, हम नए वर्ष का अनुचिंतन करें, पल-पल, क्षण-क्षण को सार्थक बनाए, हम कुछ लक्ष्य बनाएं, कुछ संकल्प ले तभी हमारा जीवन सार्थक बन सकता है, कहा भी गया है-

फूल का प्रारंभ कली से होता है
जिन्दगी का प्रारंभ नली से होता है
नव वर्ष का प्रारम्भ संकल्प से होता,
नव वर्ष का स्वागत लक्ष्य से होता है।।

तो आईये हम भी जीवन के कुछ लक्ष्य बनाएँ, जिनका पालन हम सरलता से कर नववर्ष को सार्थक बनाएँ।

✻ हमारे विचारों, भावों में पवित्रता हो।

✻ कम से कम 5 मिनिट मौन चिंतन करें।

✻ समय का मूल्य समझे।

✻ नवकार हमारा ध्येय हो।

✻ पर्यावरण को दुषित होने से बचाएँ।

✻ पोलिथियन से छुटकारा पाएँ, सब्जी आदि कपड़े की थैलियों में लाएँ।

✻ संवेदनशील बनें।

✻ फिजुल खर्च व प्रदर्शन से बचे।

✻ मन का पर्यावरण शुद्ध हो।

✻ स्वाध्याय के प्रति लगन हो, कम से कम 5 मिनिट का स्वाध्याय अवश्य करें।

उपरोक्त बातों का चिंतन, मनन, अनुशीलन कर, अतीत को मूल नववर्ष नई उमंग, नव उत्साह से स्वागत कर अपने प्रति सतत् जाग्रत रहे।

बीती ताहि बिसार दे, भूत सपना था, भविष्य कल्पना है और वर्तमान अपना है।

वर्तमान को संकल्पों से सुसज्जित कर
करें स्वागत, अभिनंदन नव वर्ष का।

जन सेवा की पुजारिन

✻ डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि

महाराष्ट्र के पारसी की बानो जहांगीर कोयाजी बचपन से दयालु, मददगार एवं निर्भीक प्रवृत्ति की थी। एक बार छुट्टियों में वह बलसार के समुद्र के तट से लगे इलाके में अपने मामा के घर गई। बानो और उनकी ममेरी बहनें खेल में लगी हुई थी तभी उन्होंने देखा कि गांधीजी सागर तट पर टहल रहे हैं। गांधीजी को पहचान कर बानो और अन्य बच्चे उनकी ओर भागे। बानो ने गांधीजी का अभिवादन करके पूछा, बापू, आप क्या कर रहे हैं? गांधीजी बोले, बेटे, हम हरिजनों के कल्याण के लिये चंदा एकत्रित कर रहे हैं। बानो बोली, चंदा क्या होता है? गांधीजी बालसुलभ जिज्ञासा को देखकर बोले, चंदा वह पैसा होता है जो सक्षम लोगों द्वारा सार्वजनिक और नेक काम के लिये दिया जाता है। बानो बोली, बापू, क्या चंदा कोई भी दे सकता है? गांधीजी बोले, हाँ, बेटा, जिसकी श्रद्धा हो और जो चंदा देने में सक्षम हो उसे तो अवश्य देना चाहिये। बानो अपनी ममेरी बहनों की ओर इशारा करके बोली, बापू, हम भी अपने-अपने घरों से चंदा लेकर आएं? गांधीजी बोले, कहां है तुम्हारा घर? बानो ने इशारे से अपने घर की ओर उंगली उठाई। उनके बड़े से घर को देखकर वह बोले, तुम तो सम्पन्न हो बिटिया। जाओ तुम सब हरिजन फंड के लिये सौ-सौ रूपये लेकर आओ। यह सुनकर बानो अपनी बहनों के साथ भागकर मामा-मामी के पास आई और उनसे सौ रूपये मांगे। माता-पिता ने सभी बच्चों को सौ-सौ रूपये दिए। बानो ने गांधीजी को सौ रूपये देकर कहा, बापू आपकी हमारी किसी और मदद की जरूरत हो तो बताइएगा। गांधीजी नन्ही बानो की यह बात सुनकर उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोले, बेटा तुम जैसे बच्चे इस देश का भविष्य है। इसी बानो जहांगीर को वर्ष 1993 में जनसेवा के लिये मैगसासम पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

✻ अरिहंत के शासन में, भौतिक सामग्री की प्राप्ति को पूर्ण पुण्य का उदय नहीं कहा है, भौतिक सामग्री के साथ शासन के प्रति समर्पित होने का पुण्य जिसके पास है वहीं पूर्ण शुभ पुण्योदय युक्त है।

श्री कयावन्ना-चरित्रम्

✻ आचार्य श्री जयानंदसूरीश्वरजी म.सा.

गतांक से आगे....

इस प्रकार सेवक के कहने पर कयवन्ना ने उससे कहा कि-अरे! तुम ऐसा क्यों बोल रहे हो? क्या यहां निवास करते मुझे बारह वर्ष व्यतीत हो चुके हैं? मैं तो उतनी रात्रियों को ही जानता हूं। प्रेम की बहुलता से माता मेरे विरह को चिर समय तक सहन करने के लिये समर्थ नहीं हो रही है, इसलिये ही उतनी रात्रियों को भी उतने वर्ष जान रही है। तब आश्चर्य-चकित हुए उस संदेश-हारी पुरूष ने पुनः कहा कि- हे श्रेष्ठी! आपकी माता को बारह दिनों में बारह वर्ष का भ्रम नहीं हुआ है किन्तु काम-परवशता से दिन-रात ज्ञान-विवेक आदि महारत्नों को चुरानेवाली इस वेश्या के साथ क्रीड़ा करते आप ही व्यतीत हुए बारह वर्ष को भी उतने ही दिन मात्र मान रहे हो।

इस प्रकार दूत के वचन को सुनकर श्रेष्ठी के पुत्र ने कहा इस प्रकार ही हो, परन्तु अब तुम जाओ और प्रणाम सहित मेरे माता-पिता को तुम यह कहना कि कितने ही दिनों के बाद तुम्हारा पुत्र आयेगा, इसलिए आप दोनों कोई चिन्ता न करें। आपको देखने के लिए मैं उत्सुक हूं किंतु अब सहसा ही इस सुख को छोड़कर वहां आने के लिये मन अत्यंत खेदित हो रहा है। इस प्रकार कयवन्ना के वचन को लेकर वह दूत जैसा आया था, वैसे ही प्रस्थान किया और आकार के समस्त वृत्तांत उन दोनों से कहा।

उस अवसर पर बड़ेदुःख को करते हुए अत्यंत वृद्ध धनदत्त ने वसुमती से कहा कि- हे प्रिये! पूर्व में तूने मेरे वचन को नहीं गिना था, अब उसके फल को देखो, पुत्र को विलासी बनाने की इच्छा करती हुई अब पुत्र से भी रहित हुई हो और अधिक क्या कहूं? उसके मुख को नहीं देखते हम दोनों को बारह वर्ष बीत जाने पर भी जिसके लिये तूंने यह सर्व ही किया है, उस वधु को भी भूलकर और लज्जा को छोड़कर कुसंग से वहीं पर रह रहा है। पुत्र की शिक्षा के लिये वैसा आचरण करती आपने और वधु ने सर्वनाश को प्राप्त किया है। इस प्रकार वे तीनों भी निराश होते हुए पश्चाताप करने लगे। यह उस वेश्या को छोड़कर कैसे पुनः घर में आयेगा? इस प्रकार विचार करते हुए भी उन दोनों ने किसी उपाय को प्राप्त नहीं किया? उससे वे दोनों उस चिन्ता से निरंतर खेदित होते हुए, जरा से जीर्ण बने, नीरक्त किये गये, भोजनरहित होते हुए पुत्र के शोक से ही मृत्यु को प्राप्त हुए।

तत्पश्चात एकाकी जयश्री सतत महा-दुःख को भोग रही थी और इस ओर दुकान के कोश में से उन कार्य-कर्त्ताओं ने यथा-भाग सर्व धन को आत्म-सात किया तथा जो घर में था उसे भी जयश्री ने पति के आदेश से उसी वेश्या के घर में भेजा। इस प्रकार धन से नष्ट बनी वह जयश्री अपने उदर-पूर्ति को करने के लिये भी दुःख देख रही थी। तब अन्य उपाय को नहीं देखती हुई तकवे से धागा बनाकर काल व्यतीत करने लगी। हां! दुर्दैव का विलास किया गया कैसा हुआ है? जिससे कि सुख की इच्छा से अनुष्ठान किया हुआ उसका सकल भी प्रयास कष्ट के लिये ही हुआ है। भाग्य के विपरीत हो जाने पर महान पुरूषों को भी ऐसी ही दुःखी-अवस्था उत्पन्न होती है, क्योंकि ये जीव भाग्य के अनुसार ही सुख-दुःख को प्राप्त करते हैं, जब-जब अशुभोदय आता है, तब-तब अवश्य सभी के द्वारा भोगना ही पड़ता है।

इस प्रकार अब अपनी दुःखी अवस्था को विचार करती हुई जयश्री शोक-सागर में निमग्न बनी। अब मेरे द्वारा क्या करना चाहिए? अथवा मुझे धर्म से विरोध रहित कैसे जीवन निर्वाह करना चाहिये? इत्यादि बहुत प्रकार से विचार करती हुई अंत में उसने ऐसी युक्ति का स्मरण किया कि पति के द्वारा चिर समय से पालन की हुई, अच्छी प्रकार से पढ़ाई हुई और नर-भाषा से कहनेवाली यह सारिका पक्षी घर में है। मैं मानता हूं कि इसे ही संदेश-हारी कर जो उनके समीप भेजूं तो इष्ट सिद्ध होगा।

इस प्रकार मन में निश्चय कर, उसके समीप आकर मेना को इस प्रकार शिक्षा देने लगी कि-हे प्रिय-सारिका! बहुत दिनों से मेरे पति के द्वारा चिर समय तक पालन की गयी तुम बालक के समान इस घर में रह रही हो और मेरे पति के रहते तुमने बहुत भोगों को भोगे है, इसलिए अब उसका प्रतीकार करो। मेरा और तेरा पालन करनेवाला अब वेश्या के घर में है, वहां जाओ और मेरा कहा तुम यथावत उनसे कहना कि-हे नाथ! आपकी सहचरी जो जयश्री है, वह बारह वर्षों से आपकी वियोग रूपी अग्नि से जलायी जा रही है, उस दिन से आज पर्यंत आपको नहीं देखती हुई उसने निद्रा, श्रृंगार को, शरीर की शुश्रूषा को छोड़ दिया है, मैं और अधिक क्या कहूं? उसकी दुःख-अवस्था को कहने के लिये जीभ भी नहीं खड़ी हो रही है और मेरे मुख से आपको इस प्रकार से कह रही है कि मेरे लिये आप हंस होकर भी कैसे काकपने को प्राप्त हुए हो? मैं स्वर्ण की बुद्धि से आपके समीप आयी थी,

परन्तु प्रान्त में आप पित्तल ही बने हो। हे प्राणेश! मेरी ऐसी कर्कशा वाणी से आप कोप को मत प्राप्त करो, किन्तु इस अपराध को क्षमा कर आप ही एक शरणवाली, अनाथ और अनन्य गति वाली मेरा आप रक्षण करो। आपके दर्शन रूपी अमृत-पान की कांक्षावाली जो मुझको आप चिर समय तक खेदित कर रहे हो, क्या उसे आप उचित मान रहे हो? आप गुणवान और विचारवान् हो, इसलिये मेरे ज्ञान से अथवा अज्ञान से हुए भी अपराध को आप क्षमा करो। आप शीघ्र से मुझ निरपराधिनी, चिर-विरहिणी, जीवित आशा को भी छोड़ती दासी को देखे। बहुत काल से आपके विरह रूपी अग्नि से जलायी जाती हुई अब अधीर बनी किसी भी प्रकार से मन में लेश-मात्र भी धैर्य को धारण करने के लिए समर्थ नहीं हूं। निरंतर नयन-युगल से उत्पन्न प्रभुत पानी से मैं भीगी हुई रह रही हूं और बड़े कुल में जन्म लेकर कुल-लज्जा को तिलांजलि देकर अति-निकृष्ट वेश्या के घर में रहना आप जैसे श्रुतिशाली पुरूषों को लज्जा को ही उत्पन्न करता है। मैं मति-विकल कोई अबला आपकी दासी हूं, इसलिए और अधिक क्या कहूं? हे प्रियतमे। हे मेनके! शीघ्र ही उड़कर वहां जाओ और इस सर्व संदेश को यथावत् भर्त्ता से कहो, इस प्रकार उसे संदेश देकर और गवाक्ष में आकर जयश्री खड़ी हुई।

उस अवसर पर अति-विस्तृत और विशाल महल को देखकर निर्धनपने से प्रेत-वास के समान भयंकर मानती हुई और चारों ओर देखती हुई दुःख से पूर्ण हृदयवाली वह सूचिर समय तक अत्यंत रोने लगी थी। उस अवसर पर कोई आश्वासन करनेवाला भी नहीं था, इसलिए चिर समय के रूदन से उसका आंचल भी अत्यंत भीग चुका था और सतत रोने से उसकी दोनों नेत्र भी उच्छून हुई थी। वहां अकेली जयश्री को अधिक रोती हुई और बार-बार आंचल से अश्रु-धारा को दूर करती हुई को देखती हुई मेना भी दुःख से आतुर बनी रोने लगी थी। इस मेना के रूदन से जयश्री अधिक खेद को प्राप्त हुई। इसलिये धैर्य का आलंबन लेकर उसके आंसुओं को अपने आँचल से पौंछा। उसी अवसर पर जयश्री के शुभ-सूचन के लिए वाम-अक्षि तीव्र से फड़कने लगी थी और जैसे कहा कि-सुग्रीव और राम के मित्रत्व के प्रसंग में, सीता के, कपीन्द्र वलि के और रावण के कमल-कनक-दहन के आकारवाले वाम-नेत्रों परिस्फुरण होते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि स्त्रियों का वामाक्षि स्फुरण तत्काल भावी शुभ-फल सूचक है।

तब दुःख के अंत को जानती हुई जयश्री ने ऊपर देखा था, अकस्माद् ही वहां पर आये किसी पुरूष को देखा। साधारण वेष को धारण करता हुआ यह पुरूष लज्जा और शोक सहित दोनों नेत्रों से अश्रु-धारा को छोड़ रहा था। इसे देखकर वह मन में इस प्रकार विचारने लगी कि यह कौन है? और किस हेतु से सहसा ही यहां पर आया है? तब उसने कहा कि- हे प्रेयसी! तुम कुछ भी शंका मत करो! दुर्दैव विपाक के योग से तुझ अनुरागी और सुशीला को छोड़कर और कुसंग के दोष से अज के समान गर्हनीय आचारवाला और निर्लज्ज वह मैं ही कयवन्ना हूं। अहो! मैंने तुझे कितना क्लेश दिया है? पूर्व में एक बार भी तुझे सुखिनी किये बिना आज पर्यंत दुःख रूपी समुद्र में ही डुबाया है। अपने अत्यंत निर्मल भी कुल को कलंकित करता हुआ वह मैं ही निर्लज्ज हूं और कुलीन भी स्व-स्त्री को छोड़कर वेश्या के घर में उसके अनुराग से चिर समय तक निवास करता हुआ अवश्य ही मैं नराधम हूं। माता-पिता को वियोग रूपी अग्नि से भस्मात् करता हुआ मैं नर-पिशाच ही हूं। इस प्रकार अपने कुलाचार और धर्माचार को जलांजलि देकर दुर्गति प्रदायी कुमार्ग में प्रवर्त्तन करता हुआ वह में ही अज्ञानांध हूं। हे प्रेयसी! तुम मुझे गृहदेवता के समान अत्यंत पूजनीय हो, कुलीन हो और धर्मवती हो, तुम धैर्य-धारिनी हो तथा संकट में गिरकर भी उभय कुल को निर्मल करनेवाली हो और मैं यह जान रहा हूं कि तुम्हारे अति-समुज्जवल शील के प्रताप से पुनः आया हूं। तुम्हारे ऐसे प्रेम की परिपूर्णता ने ही बल से खींचकर मुझे यहां पर ले आया है। हे देवी! मैंने जो अपराध किया है उसे तुम क्षमा करो। इस प्रकार भर्त्ता के कहे सखेद और अनुनय वचन से लज्जा से क्षण-भर नम्र मुखवाली जयश्री पति से कुछ भी कहने की इच्छा नहीं कर रही थी, किंतु अंजलि जोड़ती हुई भर्त्ता से इस प्रकार कहने लगी कि-

हे स्वामी! आज भी कुछ-भी नहीं गया है, सकल भी पुनः होने की संभावना है, इसे आप सत्य जानो। इतने विशेषण से आप मुझे अत्यंत बड़ी मत करो क्योंकि वैसे वचनों से मैं लज्जित हो रही हूं। मैं आपकी दासी हूं, इसलिए उसके उचित वचन से ही मुझे कहे और जो आज तक मैंने दुःख को भोगा है, वहां पर भी आपको लेश से भी दोष नहीं दिया जाता है, किंतु पूरा-कृत निज कर्मों का ही दोष है। इसलिए आपकी क्षमा प्रार्थना भी घटित नहीं होती है। अब भाग्य से आप यहां आये हो, उससे अनुमान किया जाता है कि मेरा भाग्य भी अवशेष रहा हुआ है। जो कि अब आपके घर में दुर्दशा हुई है, परन्तु भविष्य में सर्व परिपूर्णता को प्राप्त होगा, वहां पर आप संशय न करो क्योंकि हम दोनों की अन्तर आत्मा विशुद्ध और शुभ भाववाली है। इस

प्रकार उस जयश्री ने पश्चाताप को प्राप्त हुए भर्त्ता को आश्वासित किया। इस ओर वह देवदत्ता वेश्या कयवन्ना के ऊपर अत्यंत प्रीति कर रही थी। तो क्या हुआ जिससे कयवन्ना ने उस अनुरागिनी को भी छोड़ दी थी? तुम इसे इस प्रकार से जानों-

जब कयवन्ना का गृह निर्धनपने को प्राप्त हुआ, तब उसकी प्रेयसी उसे अल्प भी धन भेजने के लिये समर्थ नहीं हुई थी। तब उसे निर्धन जानती हुई उसकी अक्का देवदत्ता से इस प्रकार कहने लगी कि- हे वत्से! इसके घर से कोई भी कुछ-भी नहीं भेज रहा है, इसलिए अब इस रंक को छोड़े और घर से बाहर निकालो, जो तुझ जैसी वेश्या विलास कर रही है, वह कभी-भी निर्धन को नहीं भजती है, किंतु सधन दातार को ही भजती है। जैसे शाखा-पत्ते आदि से रहित वृक्ष को चिर समय से निवास करनेवाले पक्षियाँ भी तत्काल ही छोड़ देते है अथवा जैसे जलों से विहीन सरोवर को मुसाफिर छोड़ते हैं, तथा वेश्या तो केवल धन की इच्छा से ही बाहर से प्रेम को दिखाती है, न कि कभी भी वास्तविक को और जब तक बहुत धन देता है, तब तक ही उस पर अनुरागिनी रहती है, इस प्रकार यह वेश्याओं की कुल पद्धति है और निर्धनता को प्राप्त हुए पुरूष के मोह में नहीं गिरना चाहिये, उस वृद्धा की उक्ति को वह देवदत्ता अति-श्रेष्ठ नहीं मान रही थी क्योंकि इस देवदत्ता ने उसके साथ यावज्जीवन प्रीति को ही थी और वह अन्य के समान धन मात्र कांक्षावाली नहीं थी किंतु प्रेम की ही इच्छावाली थी, इसलिए ही उसने क्रोध सहित अक्का से कहा कि- हे अक्के! तुम जैसा कह रही हो, वैसा करने के लिये समर्थ नहीं हूं और उत्तम मनुष्यों का चित्त द्विविधता को धारण नहीं करता है, किन्तु पक्षकार ही होता है और जिनका मन प्रति-क्षण विविध संयोग-वियोग करने की इच्छा से चक्र के समान परिभ्रमण कर रहा है, वह मानवीय नहीं है, किंतु उसे पाशवीय ही जानो और मेरे द्वारा तो यावज्जीवन उस एक पर ही निज मन को अर्पित किया गया है। वहां पर मैं कदापि विपरीतता को नहीं करूंगी। जो वैसा करने की इच्छा करती है, वह लोक में अधम-अधमता को अंधता को फैलाती है, इसलिए मैं अन्य दातार अथवा गुणी-जन की इच्छा नहीं करती हूं। इस प्रकार कयवन्ना को छोड़ने की इच्छावाली अक्का देवदत्ता के साथ बार-बार कलह कर रही थी।

जब वह देवदत्ता उस वृद्धा का कहा नहीं कर रही थी, तब वह अक्का उसके निष्कासन के उपाय को सोचती हुई प्रांत में एक दिन पुरूष से इस प्रकार एक कहने लगी कि- अरे! यह कैसा निर्लज्ज है? लेश मात्र भी इसके शरीर में लज्जा उदय को प्राप्त नहीं हो रही है। यह माता-पिता की मृत्यु होने पर भी अपने घर जाने की इच्छा नहीं कर रहा है। ऐसे पशु तुल्य के जन्म से केवल पृथ्वी ही भार से व्याप्त हुई है। इस प्रकार उस दुःसह कटू उक्ति को सुनकर तत्काल ही वह अपने घर के प्रति चलने लगा। इसके चले जाने पर यह सर्व जानकर देवदत्ता अत्यंत खेदित होती हुई अक्का ऊपर आक्रोश करने लगी।

इस ओर जब यह कयवन्ना अपनी प्रेयसी जयश्री के साथ आलाप कर रहा था, तब सर्व आभरणों से मंडित कोई एक अबला वहां आकर आगे खड़ी हुई और कहने लगी कि- हे प्राणेश! जो चन्द्रिका चंद्र के बिना रह सके तो मैं भी आपके बिना रहूं और आपने मुझे सुख पूर्वक छोड़ा है किंतु मैं आप प्राणनाथ को नहीं छोडूँगी और यावज्जीवन आपकी दासी होकर ही रहना चाहती हूं और आप से यही प्रार्थना कर रही हूं कि आगे पुनः इस प्रकार मुझे मत छोड़े।

हे सुज्ञ-जनों! वह देवदत्ता अक्का के साथ कलह को कर अति-प्रिय कयवन्ना को नहीं देखकर उस महल को वन के समान दुःखप्रद जानती हुई और सार-भूत आभरणों को और महामूल्यवान वस्त्रों को लेकर कयवन्ना के घर में आयी थी। और वहां आकर दोनों हाथों से अंजलि जोड़कर तथा उसके आगे उन आभरणों को रखकर इस प्रकार से कहने लगी थी कि- हे जीवितेश! पूर्व इन आभरणों को आपने ही दिये थे और आगे भी इस देह के साथ इन आभरणों के स्वामी आप ही हो, इसलिये इनको बेचकर आप घर की व्यवस्था करें।

इस प्रकार के आश्चर्य को देखकर जब जयश्री आश्चर्य-चकित बनी खड़ी थी, तब देवदत्ता ने उसे भी सादर बड़ी बहन के समान प्रणाम किया और मधुर वचन से आलाप किया। उस अवसर पर उन दोनों ने सोदर दो बहनों के समान परस्पर किसी अकथनीय ही प्रीति को प्राप्त की थी और सपत्नीपने को छोड़कर तथा मन में लेश मात्र भी ईर्ष्या नहीं कर दोनों भी आनंदित हो रही थी। तब उन दोनों के प्रमोद-सागर ने सीमा को छोड़ दी थी और उन दोनों को प्रमोदित देखता हुआ कयवन्ना भी अत्यंत संतुष्ट हुआ था और वह प्रेम-मूर्ति समान इन दोनों के साथ सुख का अनुभव करता हुआ समय को व्यतीत करने लगा था।

(आगे और भी है...!)

✻ द्रव्य मन, संज्ञीपने में भाव मन के साथ रहता है। असंज्ञीपने के भाव विद्यमान रहता है।

मधु बिन्दु के समान है काम-भोग

✽ आ.श्री विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.

मधु बिन्दु के समान है काम-भोग, भगवान महावीर की वाणी है-

काम भोगाणुराएणं केसं संपडिवज्जइ।

- उत्तरा. 517

काम-भोग (इन्द्रिय सम्बन्धी विषय सुख) भोगने के समय तो सुखकारी लगते है परन्तु उनके अनुराग (मोह) में आसक्त होने वाला जीव अन्त में दुःख, क्लेश और पीड़ा को प्राप्त करता है।

काम-भोगों की आसरता तथा क्षणभर के सुख के बदले दीर्घकालीन दुःखों की परम्परा बताने के लिए आचार्यों ने मधु बिन्दु का दृष्टांत दिया है।

एक युवक बहुत वर्षों तक परदेश में रहकर व्यापार करता रहा। बहुत-सा धन कमाकर वह अपने नगर को जा रहा था। मार्ग में अनेक लम्बे जंगल, नदी नाले, पहाड़ी रास्ते भी आते थे। लम्बा रास्ता पैदल पार करता हुआ युवक एक घने लम्बे जंगल में फंस गया। छोटे संकरे रास्ते में सामने एक भयानक काला जंगली हाथी मिल गया। युवक हाथी से डरकर वापस जंगल की ओर भागने लगा। हाथी भी उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगा। खूंखार हाथी पीछे आता हुआ उसे सचमुच मौत जैसा ही लग रहा था। अपनी जान बचाने के लिए वह एक घने पेड़ के ऊपर चढ़ गया। पीछा करता हुआ हाथी आ पहुंचा। युवक ऊंची टहनी पर बैठा था। क्रोध में आकर हाथी उस वृक्ष के तने को सूंड से हिला-हिलाकर गिराने की चेष्टा करने लगा। वृक्ष जोर से हिला तो युवक के हाथों की पकड़ ढीली पड़ गई। डाली से हाथ छूटा, वह नीचे गिरने लगा। भाग्य से उसके हाथ में वृक्ष की नीची लम्बी लटकती दो टहनियाँ (शाखाएं) आ गई। जहां वह लटका, उसके ठीक ऊपर मधुमक्खियों का छत्ता था। उससे बूंद-बूंद शहद (मधु) टपक रहा था। शहद की बूंद उसके मुंह में गिरी, उसे बड़ा सकून मिला। भूखा-प्यासा युवक ऊपर मुंह फाड़कर शहद की गिरती बूंदें चाटने लगा। वृक्ष पर सफेद और काले दो चूहे भी बैठे थे। एक तरफ एक काला तथा दूसरी तरफ सफेद चूहा उन्हीं दोनों टहनियों को कुतर-कुतर काटने लग गये। युवक जहां लटका था उसके ठीक नीचे एक पुराना सूखा कुंआ था। उसके भीतर जहरीले साँप छूपे थे। ऊपर लटके युवक को देखकर दवे भी उसके नीचे गिरने का इंतजार करते फुंफ-कार रहे थे।

आपत्ति में फंसा युवक अपने चारों और मौत को मंडराते देखकर घबरा गया। जाये तो किधर? उसी समय एक विद्याधर उधर से निकला। युवक को मौत के बीच फंसा देखकर उसे दया आ गई। उसने विमान रोका और युवक को पुकारा-'वत्स! देख तेरे चारों तरफ मौत मुंह फैलाये खड़ी है। तू जिस डाली के सहारे लटक रहा है, उसे काला और सफेद चूहा काट रहे है। जैसे ही डाली कटेगी तू नीचे गिर जायेगा। नीचे कुए में गिरते ही जहरीले सांप तुझे जीवित नहीं छोड़ेंगे। जमीन पर कूदेगा तो मतवाला हाथी मार डालेगा। ले. मैं विमान तेरे पास ला रहा हूं। तू इसमें बैठ जा। मैं तुझे सुरक्षित अपने स्थान पर पहुंचा दूंगा।

युवक बोला-'हे दयालु पुरूष! एक मिनट रूक जाओ। शहद की एक बूंद और चाट लूं। बहुत मीठा है मधु!

कुछ क्षण रूकने के बाद विद्याधर ने उसे बार-बार समझाया- 'मधु का लोभ छोड़, अपने चारों तरफ खड़ी मौत को देख और आ जा इस विमान में।

'एक मिनट! एक बूंद और।' इस तरह करते हुए युवक मधु बिन्दु का लोभ नहीं छोड़ सका। थक-हार कर विद्याधर आगे अपने रास्ते चला गया।

मूर्ख लालची युवक की कैसी दुर्दशा हुई होगी, पाठक कल्पना कर सकते हैं।

उपनय : यह संसार ही वृक्षरूप मानव जीवन है। इनमें काल (मौत) रूपी हाथी है। काला चूहा रात, सफेद चूहा दिन का प्रतीक है। जो जीवन की डाली को हर क्षण काटे जा रहे हैं। कुएँ नरक आदि दुर्गति है और मधु बिन्दु के समान संसार के क्षणिक विषय-सुख हैं। विद्याधर के समान सद्गुरू है, जो उसे दुःखों से बचाने के लिए धर्म रूपी विमान लेकर खड़े हैं परन्तु मोह-मूढ़ जीव (युवक) संसार के सुखों का स्वाद नहीं छोड़रहा है। सद्गुरू की चेतावनी भी उसे बचा नहीं सकती।

✽ जो आत्मा शुद्धात्मा बनने हेतु प्रयत्नशील हैं, वह अप्रमत्तत्तापूर्वक जिनाज्ञा पालन में प्रयत्नशील है। जिनाज्ञा पालन करने जैसी है ऐसा मान रहा है वह सदाचारी आत्मा है।

माजी म.सा. के गुस्से ने पारणा कराया

* साध्वीश्री शशिप्रभाश्रीजी

फूल अपनी खुशबु बांटने द्वार-द्वार नहीं जाता, न ही सूरज अपने उगने का संदेश देने घर-घर दस्तक देता है। सूरज के उगने पर सारा संसार अपने आप ही जाग जाता है। ऐसे ही सूरज जैसे प्रखर प्रतापी और पुष्प जैसे तेजस व्यक्तित्व के धनी हीरा जैसे अमूल्य परम पूज्यपाद गुरूदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा का व्यक्तित्व आज भी पूज्यश्री के होने का अहसास करवाता है, आपश्री के असाधारण व्यक्ति की खुशबू देह त्यागने के बाद भी देश के कोने-कोने में फैल रही है और अनुभव की जा रही है एक ऐसा व्यक्तित्व जिसके संपर्क में आने पर लोहा भी सोना बन जाता है। पूज्यपाद श्री राष्ट्रसंत नहीं बल्कि वे जन-जन के संत थे। जन-जन की आस्था के केन्द्र थे। आपश्री की महामांगलिक इस बात का उदाहरण है कि जिसमें सभी जात सम्प्रदाय के भक्त शामिल होकर अपने को कृतज्ञ समझते थे।

बांह छुड़ाये जात हो, निर्बल जानकर मोय।
दिल से निकलकर बताओ तो तब जानुं तोय।।

गुरूवरश्री का इस संसार से जाना दुनिया की सभी इच्छाओं के लूट जाने के समान है, आप तो वीतरागी निस्प्रह निर्मोही बनकर बहते पानी जैसे रमते जोगी बनकर संसार छोड़कर, हम सबको छोड़कर चले गये परन्तु हम हमारे मोह का क्या करें, कैसे आपको भूलें, कैसे आपके बगैर धर्मानुष्ठान से जुड़े जितना आपको भूलने का सोचते है उतने अधिक आप याद आते हैं। तप और ज्ञान के आलोक से दमकता प्रशस्त ललाट और तेजस्वीता से चमकता चेहरा, गेहूं की पक्की बलियों जैसा गहरा रंग सबको मोहित कर देनेवाली सम्मोहित कर देनेवाली तिष्ण दृष्टि रत्नत्रयी की अपूर्व आभा से हृदय के अन्तःस्तल के कोने-कोने में समाई साधना की असीम शक्ति और प्रभाव। सचमुच ही सृष्टि की एक अनुपम कृति थे आपश्री। आपश्री की दीर्घ साधना, अध्ययन, आत्मज्ञान, आगम सम्मत आचार्य के 36 गुणों का निरीतचार, निर्दोष, निःशंक पालन धर्म प्रभावना सभी कुछ अनुपम उत्कृष्ट लक्ष्य और श्रद्धास्पद, आपश्री जब धर्मसभा में अपने श्रीमुख से प्रवचन फर्माते तो उसमें अन्य बातों से ऊपर उठकर सभी आत्मकल्याण और भव सागर से तिरने के लिये तप साधना और साध्य (मोक्ष) को पाने की बातें होती थी।

पूज्यश्री की सम्मोहक दृष्टि एक बार अगर किसी पर टिक गई तो फिर वह हमेशा के लिये गुरूभक्त बन जाता था, आज अगर पूज्यपाद गुरूदेव के जाने के बाद में मैं गुरूदेव के बारे में सोचता हूं तो यही देखता हूं कि आपश्री विरासत में उदारता और उच्च संस्कारों की सम्पदा हमारे लिये छोड़कर गये है। पूज्यश्री अपना पुण्य स्वयं भोगकर हमारे बीच से चले गये। भौतिक सम्पदा जो आपश्री ने बचपन में ही छोड़ दी थी उससे वंचित किंतु संस्कार धर्म की अपार सम्पदा से भरपूर ''नवरत्न'' यादें और प्रशस्त मार्ग हमें प्रदान कर गये हैं।

जीवन का हर क्षण तप-आराधना, धर्मानुष्ठान, साधना जप से परिपूर्ण व्यक्तित्व जीनेवाले गुरूदेव अनेक विशिष्ट तप साधना और अवसरों पर ''अभिग्रह'' धारण कर लेते थे, अभिग्रह की पूर्णाहुति तक किसी को ज्ञात नहीं हो पाता था कि आपश्री पारणा क्यों नहीं कर रहे है। अनेक बार शिष्य-प्रशिष्य से भरा गुरूकुल परिवार भी यह हिमाकत नहीं कर पाता था कि पूज्यश्री के पूछे कि -साहेबजी पारणा क्यों नहीं कर रहे है, क्या बात है पूज्यश्री के प्रति सम्मान, आदर और बहुमान इतना रहता था कि कोई गलती से भी गलती नहीं हो सत्, चित्त, आनंद आत्मा के ज्ञाता दृष्टा चैतन्य रूप को खोजने में मग्न गुरूदेव तो अपने में जीते थे जो ''अभिग्रह'' आपश्री धारणा कर लेते थे वह पूर्ण होता ही था, प्रारब्ध और पुरूषार्थ जैसे चिर प्रतिद्वंदियों के बीच होनेवाले महासंग्राम में हमेशा की भांति पुरूषार्थ की, कर्म की, धर्म की, साधना की ही विजय होती है। यह पूज्य गुरूदेव की साधना में हम देखते आये है। धर्म प्रभावना, विहार, महोत्सव कहीं पर भी किसी भी परिस्थितियों में आपश्री अपने लक्ष्य से विखंडित नहीं हुए। वह सब चलता रहता था और आपश्री साधना अपनी जगह पर चलती रहती थी अखंड-निरंतर निर्बाध।

इस वर्ष पर्वाराधना के लिये मैं शंखेश्वर महातीर्थ स्थित आगम मंदिर में पूज्यपादश्री के युवा शिष्य आचार्यश्री विश्वरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा. के सानिध्य में रहा था। यहीं पर चार्तुमास की आराधना के लिये उच्च चारित्र, धर्म की आराधक आत्मा साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. भी विराजमान रहे। मैं नियमित रूप से आपश्री से ज्ञानार्जन के लिये चर्चा करता था, एक दिन पूज्यपादश्री के बारे में चर्चा करते हुए आपश्री ने एक प्रसंग बताया। संपूर्ण प्रसंग पूज्य साध्वी भगवंतश्री के ही शब्दों में आपको जस का तस अवगत करा रहा है। इसमें गुरूदेव के प्रति आपका मन श्रद्धा और गौरव से भर जायेगा।

पूज्य साध्वीवर्या श्री शशिप्रभाश्री ने बतलाया कि-

सं. 2050 पालीताना यात्रा करवा गया अने त्यां

प.पू.आचार्यदेव नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म. गिरि विहारमां विराजेला हता। प.पूज्य गच्छाधिपति सूर्योदयसागर सूरीश्वरजी म.सा. पण त्यां ज विराजमान हता। अने जामनगर थी विसा श्रीमाली जैन पाठशाला नो श्रीसंघ प.पू.मालव भूषण नवरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा. ने चौमासा नी विनंति करी- पूज्यश्री ए विनंति स्वीकारेलअने संघ ने अमारी पासे विनंति करवा मोकल्यो श्रीसंघ नो आग्रह अने पूज्यश्री नी निश्रा तथा प.पू. गच्छाधिपति नी आज्ञा थी अमे पण विनंति स्वीकार करी, पालीताणा थी विहार जामनगर तरफ प्रारंभ थयो, जामनगर वहार सोसायटी मां पहोच्या अने मेघराजा ए विचार्यु के संघ सामैयु करे ए पेला तो सारे वधामणा करवा छे अने घनघोर बादल धूमधड़का साथे गर्जुवु अने बिजली ना चमकारा साथे पृथ्वी पर मेधराजा खूब आनंद सहित वरसवां मांडया, अने पूज्यश्री ए तो वधामणा नी बधाई, रोज उपवास, वरसाद कहे मारू काम, रोकवानु नहीं नाम। सात दिवस ना उपवास चोविहार थया, प्रवेशना दिवसे पूज्यश्री ने 9 उपवास थया। वीजा दिवसे व्याख्यान पछी वंदना करवा गया, पूछायू के साहेबजी ए शुं कर्यु, आजे पारणुं कर्यु के नहीं ? साथे ना साधु भगवंते किधु के। साहेबजी ने अभिग्रह छे पुस थरो त्यारे एकाशणुं करशे। अमे वधा तो वंदना करी मुकामे गया, 12 वाग्या 1 वाग्या मणना रहयु पाछा अमे पूज्यश्री ने मलवा गया तारे पण अभिग्रह पूर्ण थयुन हतु, अने अमारा माजी म. **(चन्द्रयशा श्रीजी म., पूज्यश्री ना संसारी काकी म.)** जरा जोश मां बोल्या के! आ शु मांडयु छे? 9 उपवास थई गया अने हवे अभिग्रह, आ नाना नाना साधुओं सामे तो जुओ, एकलु पोताना मन नु करवुं छे? ए थोड़क जोश अने जुस्सा मां वोल्या के मके नानपण की हमने साथे घणे प्रेम हतो। अने पूज्यश्री ए साधु म.ने कहंयु के जाओ, आयंबिल नी गोचरी लई आवो, एम कहीं अभिग्रह नी चिट्ठि काठी ने बतावी, तेमां लख्यु हतु के माजी म. जोश थी मने वढ़शे तो एकाशणु करीश अने धीमे वठशे तो आयंबिल करीश। माजी म. ए कीधु के एवी खबर होत तो गृहस्थपणा मां तो लड़ी छु आजे पण लड़त। पूज्यश्री ना अभिग्रह एवा हता के आपणे विचारी न शकीये। पण अभिग्रह साथे समता समाधि संतोष अने प्रसन्नता ए तो एमना स्वाभाविक महज गुणो हता। तेमना गुणो ना वर्णन करवा माटे शब्दों पण नथी....

पूज्यपाद गुरूदेव श्री अपने सम्पूर्ण जीवन में उस ऊर्जा स्फूर्ति एवं क्षमता के संकलन, संग्रहण में लगे रहे जिससे आपश्री परमानंद एवं आत्मरस का स्वाद चख सके ताकि फिर से उन्हें सांसारिक दुःखों की समाप्ति की फरियाद प्रभु से नहीं करनी बढ़े, आपश्री ने स्वयं ही दृढ़ निश्चय से संयम एवं साधना के कठोर अग्निपथ का वरण किया था। आपश्री का एक मात्र लक्ष्य स्व पर कल्याण करना और मुक्तिश्री को प्राप्त करना था जो आपश्री ने प्राप्त की, सादर वंदना।

सतगुरू के दर्शन

एक बार गुरूनानक से किसी ने पूछा- कि गुरू के दर्शन करने से क्या लाभ होता है? गुरूजी ने कहा कि- इस रास्ते पर तू चलेगा तो जो भी सबसे पहले मिले उससे पूछ लेना। वह व्यक्ति उस रास्ते पर गया तो उसे सबसे पहले एक कौवा मिला, उसने कौवे से पूछा कि- गुरू के दर्शन करने से क्या होता है? उस व्यक्ति के यह पूछते ही कौवा मर गया...! वह व्यक्ति वापस गुरूजी के पास आया और सब हाल कह सुनाया.... अब गुरू ने कहा कि- फलाने घर में एक गाय ने बछड़ा दिया है, उससे जाकर यह सवाल पूछो, वह व्यक्ति वहां गया और बछड़े से वही सवाल पूछा कि- गुरू के दर्शन से क्या लाभ होता है? यह सुनते ही बछड़ा भी मर गया...!

वह आदमी वहां से भागकर फिर गुरू के पास आया और सब बता दिया.... अब गुरूजी ने कहाकि -फलाने घर में जा, वहां एक बच्चा पैदा हुआ है उससे यही सवाल पूछना....

वह आदमी बोला- अगर बच्चा भी मर गया तो? गुरू ने कहा- तेरे सवाल का जवाब वही देगा। अब वह आदमी उस घर में गया, जब बच्चे के पास कोई नहीं था तो उसने बच्चे से पूछा- गुरू के दर्शन करने से क्या लाभ होता है?

तब वह बच्चा बोला कि- मैंने खुदने तो नहीं किये है लेकिन जब तू पहली बार गुरूजी के दर्शन करके मेरे पास आया तो मुझे कौवे की यौनी से मुक्ति मिली और बछड़े का जन्म मिला। तू दूसरी बार आया तो मुझे बछड़े की योनी से मुक्ति मिली और मैंने इंसान के रूप में जन्म लिया।

गुरू के दर्शन करने का फल इतना बड़ा हो सकता है फिर वह दर्शन आंतरिक हो या बाहरी-

ऐ सतगुरू मेरे....
नजरों को कुछ ऐसी खुदाई दे....
जिधर देखुं, उधर तू ही दिखाई दे....
करदे ऐसी कृपा आज इस दास पर कि....
जब भी आये तू सिमरन में
सतगुरू तू ही दिखाई दे...!

पाप की सजा भारी...!

✻ प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

लाभ मद-

इतिहास प्रसिद्ध सुभूम चक्रवर्ती 6 खंड पृथ्वी साधकर चक्रवर्ती बना। इतना बड़ा लाभ होने के बाद मुझे हमेशा हर कार्य में लाभ होता ही रहता है इस वृत्ति से उसे लाभ का भी अभिमान चढ़ा। अरे वाह। मुझे तो कभी भी किसी भी कार्य में नुकसान होता ही नहीं है सदा ही लाभ हो लाभ है। सुभूम की इस अहंभाव में ऐसी वृत्ति हुई कि सभा चक्रवर्ती 6 खंड साध कर चक्रवर्ती बनते हैं और उन्हीं की तरह मैं भी 6 खंड जीत कर चक्रवर्ती बना तो इसमें मेरी विशेषता क्या है? नहीं.... नहीं.... मैं तो सातवां खंड भी जीतू तो मेरी विशेषता रहेगी। इस विचार से सैन्य को सज्ज करके लवण समुद्र के किनारे आया। सामने के घातकी खंड के क्षेत्र को भी जीतना चाहता था परन्तु आकाशवाणी हुई! हे सुभूम ! न भूतो न भविष्यति। निरर्थक लोभ मत करो। लेकिन अभिमान किसको सुनता है? वह किसकी सलाह भी कहां मानता है। आखिर तीव्र मद में युद्ध करने गया लेकिन लवण समुद्र में गिरकर बिचारा चक्रवर्ती सुभूम मृत्यु के शरण होकर अन्त में सातवीं नरक में गया। क्या फायदा मिला?

ऐश्वर्य (वैभव) का मद-

पूर्व पुण्यवश आज धन-संपत्ति ऐश्वर्य-भोग-विलास के विपूल साधनों की उपलब्धि हो भी गई है तो फिर उसका अभिमान क्या करना? धनाढ्य-संपन्न श्रीमंत को अक्सर अपनी संपत्ति का भी अभिमान होता देखा गया है। कैफी पदार्थ की तरह शराब की तरह इसका भी नशा होता है। लक्ष्मी के नशे में भी धनांध भी जगत में काफी बड़ा अनर्थ कर जाते है। लक्ष्मी मिलनी सुलभ है लेकिन लक्ष्मी पचनो, संपत्ति का सदुपयोग होना बहुत मुश्किल है। धनवान को सौम्य विनयी बनना चाहिये परन्तु मुश्किल है। दशाणं भद्र जैसे अत्यन्त धनाढ्य राजा को भी प्रभु महावीर को समवसरण में वंदन करने जाते समय अपनी लक्ष्मी का अभिमान चढ़ा। अरे! आज तक कोई न गया हों ऐसी ऋद्धि-सिद्धि का प्रदर्शन करते हुए मैं जाउं। इस विचार से उसने काफी लंबी चौड़ी चतुरंगी सेना हाथी, घोड़े, पैदल आदि लोगों की बड़ी भारी संख्या लेकर राजाशाही आडंबर से प्रभु के दर्शनार्थ निकला। दर्शन-वंदन के ही लिए जाना है और फिर भी उसमें इतने आडंबर का प्रदर्शन क्यों? देवलोक के अधिपति सौधमेन्द्र ने अवधिज्ञान से यह दृश्य देखकर दशार्णभद्र के अभिमान को दूर करने के लिये वह भी सामने डबल ऋद्धि-सिद्धि करके आया। संसार में लक्ष्मीनंदन धनाढ्यों का अभिमान कब उतरता है? जब शेर के सिर पर सच्चा शेर आ जाए तब और यही हुआ। दर्शाणभद्र राजा अपना वैभव और ज्यादा दिखाने लगा। तो सौधर्मेन्द्र ने उससे भी डबल किया इस तरह समवसरण के द्वार पर आए। वैभव प्रदर्शन की स्पर्द्धा में राजा हार गया और प्रभु के पास दीक्षा लेकर रजोहरण से वंदना की। यह देखकर इन्द्र भी पैरों में गिरा। धन्य जो तुम कर सकते हो वहीं मैं नहीं कर सकता। अभिमान के जाने तर नम्रता विनय के आने के बाद तो सब कुछ अच्छा हो जाता है। अभिमानी जितना नुकसान करता है उसके सामने नम्र-विनयी उतना लाभ पाता है। फायदा करता है। अतः अत्यधिक धन-संपत्ति-ऐश्वर्य मिलने पर भी उसका अभिमान नहीं करना चाहिये। त्याग मार्ग ही अभिमान घटाने का उत्तम विकल्प है।

बल मद-शक्ति का अभिमान-

कई लोगों को अपनी शक्ति का भी अभिमान रहता है। अरे मैं तो केसरीहिंद हूं। अरे मेरे को मारने वाला दुनिया में पैदा ही नहीं हुआ है। किसकी ताकत है कि मुझे मारे। मैं अजर-अमर हूं। मगध के सम्राट बिंबिसार (श्रेणिक) जैसे राजा ने गर्भिणि हरिणि का शिकार करके अपने शक्ति का अभिमान किया। वाह मेरे जैसी शक्ति है किसी की? एक तीर के निशाने में दो जीवों का वध किया। सोचिए ऐसी ताकत क्या काम की जो पाप कराए। आखिर इस अभिमान का नतीजा यह आया कि श्रेणिक को नरक में जाना पड़ा। क्या आपको ज्यादा शक्ति मिली है तो वह पाप करने के लिए मिली है? क्या ज्यादा ताकत दूसरों को मारने के लिये मिली है? अरे! इसकी अपेक्षा तो आप.... किसी की रक्षा कर सकते हो, किसी को बचा सकते हो। शक्ति के नशे में चकचूर कई बड़े-बड़े माधां मिट्टी में मिल गए। हिटलर, लेनिन, सुसोलिन, चर्चित-याह्याखान आदि कहलाने वाले बड़ेशक्तिमानों की क्या दशा हुई? हिटलर की मौत किस तरह हुई? बड़े-बड़े... इतिहास प्रसिद्ध मांधाता मिट्टी में इस तरह मिल गए कि आज उनका नाम-निशान तक नहीं रहा। तो हे मृत्युलोक के मानव? नाशवंत शरीर के मिट्टी के पुतले! अभिमान करके क्यों नरक में जाना पसंद करते हो? विश्व सम्राट बनने के स्वप्ने देखने वाला सिकंदर भी आखिर खाली हाथ और खुल्ले हाथ गया। क्या साथ में ले गया? आखिर इसी धरती पर खून बहाते जाना यह क्या अच्छा है?

युद्ध करने वाले अपने चाचाराजा को ही भतीजे भोजकुमार ने चिट्टी में व्यंग के मार्मिक शब्द लिखे चाचाजी! बड़े... बड़े... सम्राट मांधाता और महारथी जैसे राजा-महाराजा सभी तो खाली हाथ गए है किसी के साथ तो पृथ्वी गई नहीं है और शायद मुझे लगता है तुम्हारे साथ यह पृथ्वी आएगी? या तुम साथ ले जाओगे? बस इन मार्मिक शब्दों ने चाचाजी का अभिमान उतार दिया। सब कुछ पानी में मिला दिया। हजारों दंड-बैठक लगाने वाले सशक्त योद्धा को भी रोग ग्रस्त होकर मरना पड़ता है। सप्तधातु की ये मिट्टी की काया, नाशवंत शरीर, क्षणिक आयुष्य और यमराज सदा ही मुंह बहाये खड़ा है, कब आंख बंद हो जाएगी यह पता नहीं और निरर्थक दुनिया भर का अभिमान क्यों करना? प्रशम रतिकार कहते है कि-

बल समुदितोऽपि यस्मान्नरः क्षणेन विबलत्वमुपयाति।
बलहीनोऽपि च बलवान, संस्कारवशात् पुनर्भवति।।
तस्मादनियत भावं बलस्य सम्यग विभाव्य बुद्धिबलात्।
मृत्युबले चाऽबलतां मदं न कुर्याद् बलेनापि।।

कितना भी बलवान-सशक्त मनुष्य भी एक दिन में प्रशक्त कमजोर हो जाता है और सूकलकड़ी जैसा कमजोर भी खूब-खा-पीकर व्यायामादि से संस्कारवश-अभ्यासवश या वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम से.... एक दिन बलवान सशक्त बन जाता है। इसलिए अपनी बुद्धि से शक्ति-बल को अस्थिर जानकर, और यमराज (मृत्यु) के सामने शारीरिक शक्ति की भी निर्बलता समझकर शक्ति का अभिमान कभी भी नहीं करना चाहिये। बाहु-बल बाहुबली ने अपनी मुष्टि प्रहार करने की शक्ति को तुरन्त बदल दी और बड़े भाई भरत पर न मारते हुए अपने ही मष्तक पर मार कर युद्ध के मैदान में ही केश लोच कर दिया। बस इसी में शक्ति के सदुपयोग की महानता है।

रूप का अभिमान-

भिन्न-भिन्न प्रकार के मदों में मिले हुए रूप का भी मद एक प्रकार का अभिमान है। प्रायः स्त्रीयों में यह रूप मद काफी ज्यादा देखा जाता है। पूर्व जन्म के तप-त्याग मय साधना से परोपकार आदि से शुभ पुण्य कर्म उपार्जन करने के अनुसार आज वर्णादि शुभ मिला है और किसी जीवों ने पुण्य नहीं बांधा है। पाप कर्म उपार्जन किया है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपने को मिले हुए शुभ रूप का अभिमान करें? दूसरों की कुरूप देखकर अपने रूप सौंदर्य का अभिमान करना यह मत्सर वृत्ति को मूर्खता है। सनत् चक्रवर्ती को अपने रूप का खूब अभिमान था। देवताओं को अपना रूप दिखाने के अभिमान में अपने रूप को खूब सधा धजाकर सोलह श्रृंगार सजकर देवताओं के समक्ष आया। लेकिन एक दिन देवताओं ने सनत चक्रवर्ती के पान की पिचकारी में चलते कीड़े दिखाए तो राजा आश्चर्य चकित हो गया अरे! ऐसा रूप क्या काम का? यह शरीर तो मलमूत्र और दुर्गंध से भरा पड़ा है.... केवल इस गोरी चमड़ी से ढंका हुआ है इसका क्या अभिमान करना? शास्त्रों में सच ही कहा है कि-

कःशुक्र शोणित समुद्‌भवस्य सततं चयापचयिकस्य।
रोग जरा पाश्रयिणो मदावकाशोऽस्ति रूपस्य।।
नित्यं परिशीलनीये त्वग्मांसाच्छादिते कलुषपूर्णे।
निश्चयविनाश धर्मिणि रूपे मदकारणं किं स्यात्।।

रज-वीर्य के मिश्रण हुआ यह पौद्‌गलिक शरीर जो सदैव घटता-बढ़ता रहता है। बुढ़ापा का स्थान है। इसमें अभिमान का स्थान ही कहां है? इसे हमेशा ही खिलापिलाकर हुष्ट-पुष्ट करते हैं। मांस पिण्ड चमड़ी से ढंका हुआ है। मल-मूत्र से भरा हुआ कफ-थूंक बहता हुआ दुर्गन्ध युक्त शरीर मानों पिशाब हुए गद्‌दे पर गालीचा बिछाने की तरह इस मल-मूत्र की गंदी काया पर गोरी चमड़ी जो मढ़ी हुई है क्या इसको देखकर अभिमान करना? .... अरे रे! ऐसा क्षणिक आयुष्य वाला रोगिष्ट शरीर जो जलकर भस्म होने वाला है इस पर क्या अभिमान करना? यह तो हमारी कमजोरी है। कमजोरी ही ज्यादा अभिमान करता है। गंभीर.... समझदार-ज्ञानी इस काया का कस निकालता है। तपश्चर्या करके आत्म कल्याण साधता है। सुन्दरी ने अपने रूप को घटाने के लिये साठ हजार वर्ष आयंबिल की तपश्चर्या की थी।

तप मद- कभी-कभी ऐसा भी होता है कि तपस्वी को भी अपनी तपश्चर्या पर अभिमान हो जाता है। हां जिन जीवों का क्षुधावेदनीय कर्म शान्त हो गया है वे जीव ज्यादा तपश्चर्या कर सकते हैं। भूख सहन करके तप ज्यादा कर सकते हैं परन्तु जिनका क्षुधावेदनीय कर्म अभी बहुत ज्यादा उदय में है वे ज्यादा तप नहीं कर सकते कइयों को ज्यादा तप का अभ्यास हो जाने से बार-बार बड़ी तपश्चर्या आसानी से कर सकते है परन्तु उनके सामने भी लाल बत्ती रखते हुए ज्ञानी महापुरूषों ने कहा कि - ज्यादा तप करके भी यदि थोड़ा अभिमान करें तो सारे तप पर पानी फिर जाता है। तपस्वी तपश्चर्या हार जाता है तपस्वी का सन्मान होता है पर उसे मन में अभिमान तो नहीं करना चाहिये। नहीं तो बाजी हाथ में से हार जाएंगे। जैसे क्रोध से तप निष्फल हो जाता है वैसे ही मान-अभिमान से भी तप समाप्त हो जाता है। कुरगडु मुनि से तप नहीं होता था और अन्य साथी मुनि मासक्षमण की तपश्चर्या करते थे.... परन्तु कषाय में क्रोध-मान में बाजी हार गए और समता का साधक जीत गया!

(आगे और भी है...!)

सुनीलजी ने अट्ठाई करवाई

* डॉ. सुभाष जैन

ज्योतिमर्य व्यक्तित्व के धनी अनासक्त योगी लोकप्रिय तेजस्वी संतों के संत पूज्यपाद गुरूदेव श्री मालवभूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा जब साहुकार पेठ चैन्नई में चार्तुमास हेतु विराजित थे तब ही पूज्यश्री ने जीरावला ट्रस्ट मंडल की आग्रहभरी विनंती पर यह भाव व्यक्त कर दिया था कि जीरावला जाना है तो निकट ही चार्तुमास करना होगा ताकि श्री जीरावला महातीर्थ की प्रतिष्ठा महोत्सव में निश्रा प्रदान की जा सके और फिर गहरे चिंतन मनन् और मोटेक्स के श्री रमणभाई मुथाजी के साथ श्रीवेलजी भाई मणियार की व्यक्तिगत इच्छाओं के बल पर पूज्यपादश्री ने श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ में सन् 2016 का चार्तुमास करने की स्वीकृति प्रदान कर दी थी।

पूज्यपादश्री के पावन सानिध्य में आपश्री के गुरूकुल और आप ने चैन्नई से लेकर बैंगलोर, मैसूर तक धर्म और अध्यात्म की जो भागीदारी थी उसको इतनी भाव प्रवणता के साथ प्रवाहित होते चैन्नईवासियों ने कभी नहीं देखा था उन लोगों ने पूज्यपादश्री के अध्यात्म के जलवे को अपने जीवन में कभी नहीं देखा था जिनका जीवन धर्म और आस्था की गतिविधियों में बीता था जिसे देखो वह गुरूदेव का दीवाना हो गया था। पूज्यपादश्री तथा पूज्यश्री के गुरूकुल शिष्य और प्रशिष्य परिवार ने चैन्नई -बैंगलोर और मैसूर में जिस तरह धर्म पताका फहराई उसे देख एक ही चार्तुमास में चैन्नई के लोगों का जीवन धर्मोन्मुखी बन गया। पूज्यपादश्री का चार्तुमास चैन्नई के लिये वरदान बन गया था इसके पूर्व भी चैन्नई में अनेक साधु-साध्वीजी के चार्तुमास हुए थे लेकिन सन् 2015 में पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य भगवंत का चार्तुमास सभी के लिये अविस्मरणीय एवं दिव्य अनुभववाला बन गया था। चैन्नईवालों को नित्य प्रतिदिन अनोखे अनुभव हो रहे थे ऐसे अनुभव तो धर्मराह दिखाने के लिये अवतरित महान दिव्यात्मा के सानिध्य और उनके बताये पथ का अनुसरण करने से ही हो सकता है, पूज्यपादश्री का चार्तुमास चैन्नईवासियों के लिये आत्मानुभूति करवाने वाला बन गया था।

पूज्यपादश्री के अगाथपुण्य का प्रताप ही था कि चैन्नई का चार्तुमास एक इतिहास रचकर पूर्ण होने जा रहा था किंतु इसके साथ ही भविष्य की एक पटकथा भी लिखी जा रही थी जिससे सभी अनभिज्ञ थे, कोई नहीं जानता है और न जानता था कि काल आगे कौन सी कहानी रचने जा रहा है, हाँ! मैं यह निश्चित रूप से और प्रमाणिक रूप से कह सकता हूं कि- पूज्यपाद गुरूदेवश्री बहुत कुछ नही सब कुछ जानते थे कि भविष्य में क्या होनेवाला है? आपश्री से चर्चा से जो आभास मिले थे वे उस समय समझ में नहीं आये थे, घटना घटित होते ही सारा पर्दाफाश हो गया। यह सब क्या घटनाएं और क्या संकेत थे उस पर बाद में लिखूंगा। बैंगलोर की अविस्मरणीय महामांगलिक आज भी बैंगलोरवासियों को याद है।

अस्पताल में योगी मुनिश्री आदर्शरत्नसागरजी की गुरूदेव से हुई चर्चा और विहार में अकस्मात घटित ने सारे जैन जगत को हिलाकर रख दिया, आज भी भक्त इस हृदय विदारक हादसे से उभर नहीं पाये हैं। चार्तुमास शंखेश्वर महातीर्थ में निश्चित हो चुका था। इसलिये वहीं होना था अब सारे दायित्व का भार युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी के कंधों पर आ गया था। युवा जैन आचार्यश्री को अपने को सिद्ध करना था कि गुरूदेवश्री की विरासत की हिफाजत करने में शिष्य परिवार सक्षम है। सभी उत्तरदायित्व के बोध की पगड़ी पहनकर युवा जैनाचार्यश्री ने दक्षिण भारत से शंखेश्वर के लिये विहार आरंभ कर दिया। तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र प्रांतों में शासन प्रभावना का परचम लहराते हुए गुजरात पहुंचे। यहां भी सूरत, अहमदाबाद में पूज्यश्री के नाम को चार चांद लगाये।

इधर मेरे अभिन्न कल्याण मित्र छोटे भाई श्री सुनीलजी इन्दौरवाले जो आगमोद्धारक के साथ गुरूदेवश्री कार्यों के प्रकाशन का दायित्व देखते है उनकी प्रेस है, वे भी परम गुरूभक्त है, हम वर्ष में तीन बार साथ में ही प्रतिवर्ष गुरूदेव का सानिध्य प्राप्त करते थे जब हमारे विश्व म.सा. चार्तुमास हेतु गुजरात पहुंच गये थे तब मेरी सुनीलजी से चर्चा हुई थी कि इस बार हम साथ में ही महापर्व पर्युषण शंखेश्वर तीर्थ में पूज्यश्री की निश्रा में मनायेंगे। प्रवेश के तुरन्त बाद ही मैंने रिजर्वेशन करवाकर सुनीलजी को बता दिया था मैंने उन्हें यह भी कहा था कि- बाद में आप मना मत कर देना। मैंने सुनीलजी से यह भी कह दिया था कि- आप महापर्व के लिये शंखेश्वर साथ में चले तो मैं आपको समर्पित करते हुए अट्ठाई करूंगा, तो वे बोले -नहीं मैं निश्चित ही चलूंगा सब तय हो गया था पर्व के शायद एक दो दिन बाकी थे तब मैंने सुनीलजी को फोन लगाया तो वे बोले - मैं नहीं चल पाऊंगा। मैंने आगे कोई बात नहीं करते हुए उनसे बोला- ठीक है। उनका रिजर्वेशन कैंसिल करवाकर मैंने शंखेश्वर जाने की तैयारी आरंभ कर दी, पर्व के एक दिन पूर्व मैं दोपहर 11 बजे के लगभग शंखेश्वर आगम मंदिर पहुंच गया।

पूज्य आचार्यश्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. को वंदन कर आगम मंदिर परिसर में आ गया। यहां मणियार परिवार के भाई अशोकजी, दिनेशजी, ईश्वरभाई सब मिले, कमरे की चर्चा हुई अशोकजी बोले-सुभाषभाई आपकी व्यवस्था हो ही जायेगी, मैं चर्चा में लगा था तभी मैंने देखा सुनील फरबरा राजगढ़ वाले कुछ बहनों के लिये कमरे की व्यवस्था के लिए प्रयासरत थे मुझसे चर्चा हुई बोले-आपकी व्यवस्था हो गई क्या? मैंने कहा हो जायेगी। तब वे बोले -आप मुझे भी अपने साथ एडजेस्ट कर लेना। मैंने कहा- अभी बहनों को नवकार धर्मशाला छोड़कर आओ। मैं यहीं पर हूं। वे बोले- मेरा सामान यही रखा है, मैंने कहा- ठीक है, उनके जाने के उपरांत कुछ ही देर में अशोकभाई मणियार ने मुझे मोन्टेक्स धर्मशाला में एक ए.सी. रूम की चाबी लाकर दी और कहा सुभाषभाई! आप तो हमारे साथ परिसर में ही रहेंगे। मैं अपना सामान धर्मशाला में रख आया। कुछ ही समय बाद सुनील फरबरा आ गये। वे बोले -आपकी व्यवस्था हो गई होगी? आपको तो कोई परेशानी नहीं है, वे बोले- मैं भी आपके साथ आ जाता हूं। मैंने कहा- कोई दिक्कत नहीं आ जाओ। इन्दौर के सुनीलजी नहीं तो राजगढ़ के ही सुनीलजी मैं आश्चर्यचकित था, क्या सब पूर्व निर्धारित ही होता है? एक सुनीलजी के स्थान पर दूसरे सुनीलजी। मैंने परमात्मा को धन्यवाद देते हुए कहा-प्रभु अब तो अट्ठाई और पक्की हो गई।

आप आश्चर्य करेंगे पर्व के आठों दिन में अट्ठाई कितने आराम से हो गई, श्री शंखेश्वर दादा के दरबार में रोज तीन बार वंदन को जाता था यहीं नहीं दादा ने अनहत कृपा कर पर्व के पांच दिन तक मुझे प्रातःकाल द्वारोद्‌घाटन के तुरन्त बाद प्रथम वासक्षेप पूजन का सौभाग्य भी प्रदान किया। आराधना के द्वारा पूज्य आचार्यश्री विश्वरत्नसागरजी म.सा. तथा गुरूकुल के सभी मुनिपुंग ने मंगल आर्शीवाद के साथ कुशलशेम का विशेष ख्याल रखा। आखिर सुनीलजी ने मुझे अट्ठाई करवाई ही दी।

इन आठ दिनों में मैंने अपनी आत्मा एवं मनः मस्तिष्क की स्थिति का आत्ममंथन एवं विवेचन करने का प्रयास किया, निर्विहन सम्पन्न हुई पर्वाराधना के लिये गृहतीर्थ में विराजित अतुल्यवात्सल्य के धनी श्री शंखेश्वर पार्श्वप्रभु, आगम मंदिर में विराजित परम दयालु श्री वीरप्रभु के साथ आचार्यश्री विश्वरत्न सागर सूरीजी, साध्वी श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. के प्रति आभार व्यक्त कर उज्जैन आकर फिर प्रपंच में व्यस्त हो गया।

जीवन का सत्य

जीवन की नश्वरता को जो जान लेते है, वे सत्य को समझ लेते है जिन्हें भी सत्य की अनुभूति हुई है, उन सबने यही कहा है कि जीवन झाग का बुलबुला है, जो इस घड़ी है, अगली घड़ी मिट जाएगा। जो इस नश्वर को शाश्वत मान लेते हैं, वे इसी में डूबते और नष्ट हो जाते हैं लेकिन जो इसके सत्य के प्रति सजग होते हैं, वे एक ऐसे जीवन को पा लेने की शुरूआत करते हैं, जिसका कोई अंत नहीं है।

जीवन के इस सत्य का अनुभव करने वाले एक फकीर को किसी बादशाह ने कैद कर लिया। कैद की वजह यह भी कि उसने बादशाह के सामने सत्य बातें कह दी थी। बादशाह को फकीर का कहा हुआ सच अप्रिय लगा, सो उसने उसे कैद कर लिया। उस फकीर के एक मित्र ने उससे कहा- 'आखिर यह बैठे बिठाए मुसीबत क्यों मोल ले ली, न कहते वे सब बातें तो तुम्हारा क्या बिगाड़ जाता! अपने मित्र की बातें सुनकर फकीर हंस पड़ा और बोला- मैं करूं भी तो क्या? जब से खुदा का दीदार हुआ है तब से झूठे बेमानी हो गया है। कोशिश करने पर भी झूठ बोला ही नहीं जाता।

परमात्मा की सत्ता ही कुछ ऐसी है कि उसे अनुभव करने के बाद असत्य का ख्याल ही नहीं आता। सत्य के अतिरिक्त अब जीवन में कोई विकल्प नहीं है। फिर इस कैद का क्या? यह कैद तो बस, घड़ी भर की है। फकीर की कही हुई यह बात जेल के किसी सिपाही ने सुन ली और बादशाह को बता भी दी। इसे सुनकर उस बादशाह ने कहा- उस पागल फकीर से कहना कि यह कैद घड़ी भर की नहीं, बल्कि जीवन भर की है। फकीर ने जब बादशाह के इस कथन को सुना तो जोर से हंस पड़ और बोला- अरे भाई! उस बादशाह से कहना कि उस पागल फकीर ने कहा है कि- क्या जिंदगी घड़ी भर से ज्यादा की है? सचमुच ही जो जीवन का सत्य पाना चाहते हैं उन्हें जीवन की यह सच्चाई जाननी पड़ती है। इसे समझकर वे अनुभव कर पाते हैं कि एक स्वप्न से अधिक न तो जीवन की कोई सत्ता है और न ही जीवन का सत्य।

✻ *तानसेन सम्राट अकबर के दरबारी गायक थे। एक बार अकबर तानसेन के गुरू हरिदासजी से मिले और उनके गायन को सुनकर मुग्ध हो गए। अकबर ने तानसेन से कहा- 'यों गाते तो आप भी अच्छा है, पर आपके गुरू के गायन में जो रस है, उसकी प्रशंसा हो सकती है।' तानसेन ने कहा- मेरे गुरू भगवान को प्रसन्न करने के लिये गाते थे और मैं आपके लिये । स्वार्थ का अंतर हर वस्तु के स्तर को गिराता और उठाता है तो गायन पर भी वही सिद्धांत क्यों लागू न होगा?*

सागर समुदाय की श्रावक प्रवर समिति की बैठक में हुई चर्चाओं की जानकारी श्रमण एवं श्रावक वर्ग के लिये

घसोई- सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति जिनागम सेवी पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा, अजातशत्रु पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धनसागर सूरीश्वरजी म.सा., पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की पुण्य पावन निश्रा में सागर समुदाय की श्रावक समिति की बैठक का आयोजन किया गया। 19 अक्टूबर को हुई मीटिंग में बैठक के पूर्व पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री को वंदन करने पर आपश्री ने सभी को मंगल आर्शीवाद दिये। बैठक में गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश तथा राजस्थान प्रांत से सागर समुदाय के 21 वरिष्ठ श्रावकों ने भाग लिया। बैठक में सागर समुदाय के श्रमण और श्रावक वर्ग से संबंधित बहुत से मुद् दे पर चर्चा की गई। आप सबके सूचनार्थ जिन बिन्दुओं पर गंभीर चिंतन किया गया वह आपकी जानकारी के लिये प्रकाशित कर रहे है- डॉ. सुभाष जैन- सम्पादक

✻ सवंत् 2072-2073 का वर्ष हम सबके लिये सिरताज पूज्यपाद आगमोद्धारक गुरूदेव श्री सागरानंदसूरीजी महाराजा के संयम जीवन का 125 वां वर्ष है।

✻ आगामी वर्ष 2073 यह पूज्यपादश्री के श्रीमुख से हुई 7 आगम वाचना तथा सूरत में हुई आगमवाचना का सौवां वर्ष है।

✻ सवंत् 2073 की महावद-5 पालीताना आगम मंदिर में दादा के शिखर पर 75 वीं ध्वजारोहण का वर्ष भी है वहां पर ध्वजा के पहले आगमवाचना का सप्ताह मनाया जावेगा।

✻ सवंत् 2074 की वैशाख सुदी-10 का पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री के आचार्य पद की प्राप्ति का 100 वां वर्ष रहेगा इसके निमित्त सूरत में सागर समुदाय के साधु-साध्वी भगवंतों की पूज्य निश्रा में सूरी पद शताब्दी पर्व मनाने का निश्चय किया गया है। इसकी योजना पालीताना में प्रतिष्ठा वाचना प्रसंग पर विचार कर फाईनल की जावेगी।

✻ पालीताना आगम मंदिर प्रतिष्ठा प्रसंग के साथ दीक्षा बड़ी दीक्षा पद प्रदान, 100 ओली पारणा आदि प्रसंग समुह में आयोजित हो यह प्रयास रहेगा। स्वास्थ्य आदि को देखते हुए आप सभी पालीताना प्रसंग पर समुदाय के गौरव को ध्यान में रखते हुए आने की भावना रखना।

✻ श्री जीरावला ट्रस्ट मंडल के द्वारा श्री जीरावला पार्श्वनाथजी तीर्थ में प्रतिष्ठा के प्रसंग पर पूज्यपाद गच्छाधिपति से विनंती की गई है परन्तु समुदाय का प्रसंग (पालीताना) दो वर्ष पूर्व ही निश्चित हो गया था इसलिये पूज्यश्री को जीरावला जाने की अनुकुलता नहीं होगी। सागर समुदाय की ओर से आचार्यश्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. श्री जीरावला महातीर्थ में समुदाय का प्रतिनिधित्व करेंगे।

✻ आसोज सुदी-8 को घसोई में सागर समुदाय के श्रमणोपादक प्रवर समिति के मुंबई, सूरत, अहमदाबाद, मालवा, राजस्थान के 21 पुण्यवंत श्रावकों की मीटिंग हुई थी। समुदाय के उत्कर्ष के लिये तथा सागर समुदाय के तेजस्वी तथा हीरा समान साधु-साध्वी भगवंतों के लिये सरस तथा विस्तार्थ से चर्चा हुई और एक स्वर में एक मत से यह निर्णय मेरी निश्रा में लिये गये जो आपकी जानकारी में लाये जा रहे हैं।

✻ सवंत् 2013 और 2074 के कार्य में मालवा ग्रुप के समस्त साधु-साध्वीजी भगवंत मालवा में ही चार्तुमास करें, कोई विशेष कारण हो तो गच्छाधिपतिजी की आज्ञा के बगैर अन्य क्षेत्र में चार्तुमास की स्वीकृति न देवें, यह गच्छाधिपति से यह विनंती की गई कि आपश्री किसी विशेष कारण को छोड़कर मालवा ग्रुप के सभी साधु-साध्वीजी को मालवा में ही चार्तुमास करने की आज्ञा करें तो अच्छा करेगा।

✻ सवंत् 2073 को वाचना शताब्दी वर्ष के रूप में मनाये पूरे वर्ष में आगम वाचनाओं, आगम से संबंधित उत्सक छोटे बड़ें को आगम कंठस्थ कराना, आगम मंदिर की जानकारी देना, आगम सार वाचना में देना, आगम पूजन, वंदन जाप आदि आयोजन करना, साधु-साध्वी भगवंत दश वैकालिक, उत्तराध्ययन सूत्र, आचरांग सूत्र, ओघ पिंड, नियुर्वित, आवश्यक सूत्र, आचारांग सूत्र, पयन्नादि सूत्र तथा विशेष योगी आगम को कठंस्थ करें। इसके अलावा आगम बहुमान के लिये आगम की रथयात्रा आदि के द्वारा पूज्यपाद सागरजी म.सा. की वाचना करें। जग प्रसिद्ध करवाये।

✻ सवंत 2074 के वर्ष में सूरीपद वर्ष को किस तरह से

भव्य रूप से मनाये इसके बारे में आगे जानकारी देंगे।

✻ समुदाय के प्रत्येक ग्रुप के छोटे-बड़े साधु-साध्वी भगवंतों ने चार्तुमास के लिय जिन क्षेत्रों का परसंद किया है वहां के ट्रस्ट मंडल को जय बुलवाने के लिये पूज्य गच्छाधिपति के पास ही भेजे और जिनको जय बुलाना है वे इस वर्ष पालीताना में महासुद-10 दिनांक 6 फरवरी 2017 के दिन उस समय तक निश्चित हुए चार्तुमास के स्थानों के संघ ट्रस्टियों को जय बुलाने के लिये पालीताना भेजें। इस व्यवस्था से समुदाय की एकता, गौरव, व्यवस्था और अनुशासन के रूप में स्वीकार कर श्रावकों को जय बुलाने के लिये पालीताना भेजें।

✻ सूर्यास्त के बाद किसी विशेष कारण को छोड़कर विजातीय के साथ संसर्ग-वार्तालाप बंद करें तो अच्छा रहेगा।

✻ हमारे समुदाय के खास क्षेत्रों सूरत, कपड़वंज, लुणावाड़ पालीताना आगममंदिर, अहमदाबाद वीतराग सोसायटी पालड़ी रतलाम नागेश्वर आदि स्थानों पर प्रतिवर्ष साधु-साध्वी को जाना ही चाहिये।

✻ चार्तुमास के फार्म नहीं भरकर भेजनेवाले ग्रुप के लिये यह सूचना है कि आगे से इसका ध्यान देने की विनंती की है।

✻ पालीताना में सामुहिक रूप से हुए सम्मेलन में लिये गये निर्णय के अनुसार साध्वी भगवंतों के लिये वैयावच्च व्यवस्था सवंत् 2073 की कार्तिक वद-1 से चालू करने में आ रही है।

अ- गुजरात में विहार के समय विहार में साथ रहनेवाले सेवक-सेविका के लिये पैसे के लिये आचार्यश्री सागरचंद सागर सूरीश्वरजी म.सा.से अथवा आचार्यश्री पूर्णचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. से सम्पर्क करें।

ब- गुजरात में सूरत जानेवाले साध्वीजी म.सा. की विहार व्यवस्था-भक्ति का लाभ सुरेशभाईजी शाह मो.नं.098247-65000 द्वारा दो वर्ष के लिये लाभ लिया गया है। साध्वीजी म.सा. से सूरत की ओर विहार करने पर सुरेशभाई को विहार कर लाभ देने की मेहरबानी करावें।

स- मालवा-राजस्थान की ओर विहार व्यवस्था की जवाबदारी 3 वर्ष के लिये भक्ति का लाभ प्रदान करने के लिये आचार्यश्री जिनरत्नसागर सूरीश्वरजी, आचार्य श्री जितरत्न सागर सूरीश्वरजी एवं आचार्य श्री चंद्ररत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. के प्रेरणा से गुरूभक्तों ने लाभ लिया है। मालवा-राजस्थान में विहार के समय विहार भक्ति का लाभ देने के लिये निम्न मोबाईल पर सम्पर्क कीजिए-

1- आचार्य श्री चंद्ररत्नसागर सूरीजी म.सा.- 94244-25527।

2- प्रदीप भाई मंडोवरा, इन्दौर- 98270-71774

3- गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान को छोड़कर अन्य कोई भी राज्यों में विहार करते समय विहार भक्ति का लाभ देने के लिये आचार्य श्री चंद्राननसागर सूरीश्वरजी म.सा.एवं आचार्यश्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. से सम्पर्क कीजिये।

सूरत, मध्यप्रदेश और राजस्थान को छोड़कर अर्थव्यवस्था श्री वर्धमान जैन आगम मंदिर संस्था के द्वारा की जावेगी। सम्मेलन के समय जिन-जिन ग्रुप के गुरू भगवंतों और साध्वी भगवंतों ने विहार व्यवस्था के लिये स्व-प्रेरणा से तीन वर्ष के लिये फंड लिखवाया था और आपश्री पालीताना आगम मंदिर में पहुंचाने की व्यवस्था करने की मेहरबानी करावें। अन्य साधु-साध्वी भगवंतों को इस सामुहिक आगमोद्धारक वैय्यावच्च निधि फण्ड में अपनी प्रेरणा से अर्थ व्यवस्था करने का भाव हो तो आपश्री सीधे-सीधे आगम मंदिर, पालीताना पेढ़ी पर भेजने की कृपा करावें अन्य सूचना से समय-समय पर आपश्री को अवगत कराने में आवेगी।

महर्षि जावालि ने पर्वत पर ब्रह्मकमल खिला देखा। शोभा और सुगंध पर मुग्ध होकर ऋषि सोचने लगे उसे देवता के चरणों में चढ़ने का सौभाग्य प्रदान किया जाए।

ऋषि को समीप आया देख पुष्प प्रसन्न तो हुआ पर साथ ही आश्चर्य व्यक्त करते हुए आगमन का कारण भी पूछा। जावालि बोले- तुम्हें देव-समीप्य का श्रेय देने की इच्छा हुई, तो अनुग्रह के लिये तोड़ने आ पहुंचा।

पुष्प की प्रसन्नता खिन्नता में बदल गई। उदासी का कारण महर्षि ने पूछा तो फूल ने कहा- देव-सामीप्य का लोभ संवरण न कर सकने वाले कम नहीं। फिर देवता को पुष्प जैसी तुच्छ वस्तु की न तो कमी है और न इच्छा। ऐसी दशा में यदि मैं तितलियों-मधुमक्खियों जैसे क्षुद्र कृमि-कीटकों की कुछ सेवा-सहायता करता रहता तो क्या बुरा था। आखिर इस क्षेत्र को खाद की भी तो आवश्यकता होती, जहां मैं उगा और बढ़ा।

ऋषि ने पुष्प की भाव-गरिमा को समझा और वे भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उसे यथास्थान छोड़कर वापस लौट आए।

तारंगा तीर्थ

गुजरात के पहाड़ों पर के तीर्थों में तारंगा भी एक विशिष्ट तीर्थस्थल है। वि.सं. 1241 में श्री सोमप्रभाचार्य द्वारा रचित **'कुमारपाल प्रतिबोध'** से ज्ञात होता है कि, वेणी वत्सराज नामक बौद्धधर्मी राजा ने यहां तारादेवी के मंदिर का निर्माण करवाया था तब से वह स्थान 'तारापुर' नाम से प्रसिद्ध है। तत्पश्चात आर्य खपुटाचार्य (विक्रम की प्रथम शताब्दी) के उपदेश से उस राजा ने जैन धर्म स्वीकार किया तब उसने यहां जिनेश्वरदेव की शासन अधिष्ठात्री सिद्धायिकादेवी के मंदिर का निर्माण करवाकर उसे जैनों के तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध किया। हालांकि कुछ इतिहासकार इस बात से सहमत नहीं है। इसके बाद लगभग तैरहवीं शताब्दी तक का इस तीर्थ का इतिहास अंधकार में है।

तैरहवीं शताब्दी में तारंगागिरी पर निर्मित बावन देवकुलिकाओंवाला उत्तुंग देवप्रासाद आज भी जैनाचार्य श्री हेमचद्रसूरी और गुर्जरनरेश कुमारपाल की लगभग 900 वर्ष पहले की कीर्ति को भी विस्तृत किये हुए है। इस पर्वत और इसकी गुफाओं में कितने ही योगियों और मुनियों तथा साधकों की स्मृतियाँ जड़ित है, जिस कारण यह वंदनीय तीर्थधाम बन हो गया है।

प्राचीन जैन प्रबंधों और तीर्थमालाओं में तारंगा को तारउर, तारावरनगर, तारणगिरी, तारणगढ़ आदि नाम से उल्लेखित किया गया है। वर्तमान में तारंगा नाम प्रसिद्ध है।

मेहसाणा से आनेवाले रेलमार्ग में तारंगा अंतिम पहाड़ी स्टेशन है।

पहाड़ पर श्वेतांबरों के 5 मंदिर और 3 टोंक अन्य देहरियां है। चार सुविधा सम्पन्न धर्मशालाएं तथा भोजनशालाएं है। दिगंबरों के भी पांच मंदिर, 7 देहरियां और धर्मशालाएं है।

तीर्थ के मुख्यद्वार से प्रवेश करने पर बायीं ओर श्री अजितनाथ मंदिर के सामने लगभग 3 फूट ऊंची एक देहरी में कीर्तिस्तंभ विद्यमान है। उसके ऊपर कुमारपाल के अंतिम वर्ष के समय का लेख लिखा है। पांच मंदिरों में श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर विशाल चोक से घिरा हुआ उन्नत और विशाल है। इस मंदिर को बनाने हेतु कुमारपाल नरेश ने श्रेष्ठी यशोदेव के पुत्र दंडनायक अभय को आदेश दिया था।

राजा कुमारपाल के इधर-उधर भटकने के समय मूषक तथा 32 स्वर्णमुद्राओं की अनुश्रुति-कथा के कारण इस जिनालय को 'मूषक विहार' इस नाम से भी पहचाना जाता है।

मुनि प्रभानंद कृत 'प्रभावकचरित्र' में (वि.सं.1334-ई.स. 1278) उल्लेख है कि कुमारपाल राजा ने अर्णोराज पर आक्रमण किया, उस समय भगवान अजितनाथ की जो मानता मानी थी उसकी मूर्तिस्वरूप उन्होंने तारंगा पर 24 गज ऊंचा मंदिर बनवाया और उसमें 101 अगुल (इंच) की प्रतिमा स्थापित की थी।

'पुरातन प्रबंध संग्रह' के उल्लेख से ज्ञात होता है कि, जब अजयपाल जैनमंदिरों को ध्वस्त करने लगा तब वसाह और आभड़ नामक मुख्य श्रेष्ठियों ने संघ को एकत्रित कर कुमारपाल द्वारा बनवाए गए मंदिर को अजयपाल से कैसे सुरक्षित रखा जाए इसका विचार करते हुए उस समय के शीलनाग नामक अधिकारी से मिल कर शेष बचे हुए तारंगा मंदिर को बचाने हेतु निवेदन किया। शीलनाग ने बुद्धि चातुर्य का प्रयोग कर तारणगढ़ का मंदिर और अन्य दूसरे चार मंदिर बचा लिए थे।

यह मंदिर बत्तीस मंजिलों की ऊंचाईवाला बनाया गया था। ऐसा भी कहा जाता है। आज तो इसके तीन-चार मंजिलें ही विद्यमान है। मंदिर को पहली नजर में ही देखकर कलाविद् शिल्पी द्वारा रचित शिल्पशास्त्र के अनुसार उत्कीर्णित इस सर्वांग सुंदर रचना को प्रमाणिकता को परख लेता है। शिल्पी के द्वारा आलेखित जगति की ऊंचाई, संधियाँ, पद्म कर्णिका, अंतर्णिका, ग्रास पट्टिका, कुंभ, कलशादि शिल्प के नियमानुसार पूर्णतया संरचित है। मंदिर में विस्तृत कला लेखन सामान्य होने पर भी सुंदर और वैविध्यतापूर्ण होने के कारण मनोहर लगता है। सोलंकीकाल की सौंदर्यकला का यह उत्तम नमूना शिल्पयोजना का एक आदर्श उदाहरण कलाविद् के समक्ष प्रस्तुत करता है। हालांकि उसमें बाद में किये गए संस्करण भी दिखाई देते हैं। सत्रहवीं शताब्दी में हुए श्री ऋषभदास कवि 'कुमारपालरास' कहते हैं कि- इस मंदिर के शिखर को कोई क्षति नहीं पहुंची है। अर्थात वह प्राचीनकाल का होना बताते है।

प्रासाद का मंडप और शिखर अनेक प्रकार की नक्काशी से भरा हुआ है। मंदिर के पीछे 64 दीवार मार्ग है, जिनमें से एक भी दीवार नक्काशी विहिन नहीं है। इनमें यक्ष, गंधर्व और नृत्यांगनाओं की भावनात्मक को भावभंगिमा को मूर्तरूप देने में कमी नहीं रखी गई है। आबू के मंदिरों के जैसी महान नक्काशी न होने पर भी इसकी भव्यता आँखों को चकाचौंध कर देनेवाली है। वास्तव में इस मंदिर की ऊंचाई अद्वितीय है। .

मंदिर के आसपास 230 फीट जितना लंबा-चौड़ा एक चोक है। चोक के मध्य में 142 फीट ऊंचा, 150 फीट लंबा और 100 फ ीट चौड़ा भव्य मंदिर स्थित है। लगभग 639 फीट का घेराव लिये हुए यह मंदिर है। समूचा मंदिर खारे पत्थर से बनाया गया है। ईंट

और चूने का ऐसा मिश्रण इतने संतुलित प्रमाण में शास्त्रीय दृष्टि से हुआ कि आज 800 वर्ष गुजर जाने के बाद भी मंदिर के किसी भाग भी को कोई विशेष क्षति नहीं पहुंची है।

मंदिर का मुख और द्वार पूर्वाभिमुख है। पूर्व के द्वार से प्रवेश करने पर अंबिका माता और द्वारपाल की मूर्तियों के दर्शन होते हैं। मंदिर में प्रवेश करने की तीनों दिशाओं में तीन प्रचंड द्वार और त्रिशाखाद्वार है तथा प्रवेशद्वार के गुंबद में दोनों और ग्रासमुख है। सौपान के पदतल आरस पत्थर के किन्तु सादे हैं।

मंदिर के सिंहद्वार के पास एक विशाल अग्रमंडप मंत्री वस्तुपाल ने बनवाया था और उसमें दोनों और दो विशाल गवाक्ष बनवाकर भगवान की मूर्तियां स्थापित की थी परन्तु वह अब विद्यमान नहीं है। मात्र लेख के साथ आसन है।

मंदिर में मूल गर्भगृह, गूढमंडप, रंगमंडप और चोकियों के विभाग की संरचना की गई है। रंगमंडप से मूलगर्भगृह की ओर जाने के लिए दो छोटे द्वार है। उसके बाद ही मूलगर्भगृह का प्रवेश द्वार आता है। मूलगर्भगृह 18 फीट लंबा और 23 फीट चौड़ा है। समूचा गर्भगृह मकराना के आरस पत्थर से मंडित है। मूलगर्भगृह में मूलनायक के रूप में श्री अजितनाथ भगवान की मूर्ति बिराजमान है। यह मूर्ति 15 हाथ ऊंची और मनोहर है। उसके दोनों ओर लकड़ी की सीढ़ियां रखी हुई है। उन पर चढ़कर ही मस्तक की पूजा हो सकती है। आसपास पंचतीर्थी का भव्य परिकर है। मूलनायक की पालथी पर संक्षिप्त लेख है परन्तु उसका अधिकांशतः भाग मिट सा गया है।

सं. 1472 में ईडर के रहनेवाले श्रेष्ठि संघवी गोविंद ने इस तीर्थ के उद्धार करने हेतु नौ भारपट बनाए थे और स्तंभ भी बनवाए थे तथा अपनी पत्नी जयलदे आदि परिजनों के साथ अपने कल्याण हेतु श्री अजितनाथ भगवान की मूर्ति प्रतिष्ठित करवाई थी। इस उल्लेख को पं. प्रतिष्ठासोम के द्वारा सं. 1554 में रचित 'सोमसौभाग्यकाव्य' के सातवें सर्ग के विस्तृत वर्णन से समर्थन मिलता है।

श्री विजयसेनसूरी ने जिन तीर्थों का उद्धार करवाया उसमें तारंगा के मंदिर का भी उल्लेख है और उस उद्धार का सं. 1642 के अषाढ़सुदि-10 का लेख मूल मंदिर के दक्षिणद्वार की दीवार पर विद्यमान है।

मूलनायक के दोनों ओर कोने में एक-एक मूर्ति है। उन दोनों मूर्तियों के परिकर के ऊपर भी लेख उत्कीर्ण है। इन दोनों लेखों में पहला लेख सं. 1304 के अषाढ़मास वदि-7, शुक्रवार का है। दूसरे लेख में श्री धर्मघोषसूरि के शिष्य देवेन्द्रसूरि का नाम अधिक है। दोनों प्रतिष्ठापक आचार्यश्री भुवनचन्द्रसूरि है। इन प्राचीन परिकरों में स्थित मूर्तियों की बाद में स्थापना की गई हो ऐसा अनुमान होता है।

नीचे के भाग में दोनों ओर कोने में एक-एक सुंदर बड़ी-बड़ी कायोत्सर्ग प्रतिमाएं है। ये दोनों कायोत्सर्ग प्रतिमाएं खेरालु और पालनपुर के बीच में स्थित सलामकोट नामक गांव से आधे मील की दूरी पर स्थित पुराने सलामकोट से अथवा उसके आसपास की जमीन से वर्षों से पहले मिली थी। वहां से लाकर यहां स्थापित की गई है। इन दोनों कायोत्सर्ग प्रतिमाओं के बीच में मूलनायक के स्थान पर दो बड़ी खड़ी हुई जिनमूर्तियां निर्मित है और उन दोनों में मूल मूर्ति के दोनों ओर तथा ऊपर से होकर अन्य छोटी-छोटी ग्यारह-ग्यारह जिनमूर्तियां बनी हुई होने के कारण लेख में इसका उल्लेख द्वादशबिंब पट्टक के नाम से किया गया है।

मूलगर्भगृह के आसपास प्रदक्षिणा पथ है। उसमें हवा-प्रकाश के लिये तीन खिड़कियां रखी गई है। मूलगर्भगृह के बाद गूढमंडप है। इसमें एक आले में मूर्ति है।

वि.सं. 1216 के वैशाखमास की सुदि-3 के दिन उत्कीर्ण किये गए आबू के लूण-वसही शिलालेख में वरहुडीयावंशीय शेठ नेमड़ के परिवार के सदस्यों ने आबू और उसके अलावा अन्य तीर्थों में और गांवों में भी मंदिर, मूर्तियां, आले, देहरियां तथा जीर्णोद्धार आदि जो जो कार्य करवाया उसका उल्लेख किया हुआ है। उसमें तारंगा के विषय में इस प्रकार उल्लेख मिलता है।

तारणगढ़ के ऊपर श्री अजितनाथ (मंदिर) के गूढमंडप में श्री आदिनाथ के बिंब से युक्त आला (गोखला) बनवाया। इस शिलालेख का साक्ष्य उक्त समय से पूर्व ही मंदिर के निर्माण किये जाने की बात की भी पुष्टि करता है।

मंदिर का रंगमंडप 190 फीट के घेराव में है और अष्टभद्र और षोडशभद्रवाले आठ स्तंभों पर खड़ा है। इन स्तंभों की ऊंचाई 15 फीट और मोटाई 8 फीट की है। बाद में सावधानी पूर्वक खड़े किये गये स्तंभ उसे सहारा देते हैं। समस्त मंदिर को सुरक्षित रखने हेतु मंदिर के अंदर और बारह सौ से भी अधिक स्तंभों की कतार खड़ी की गई है। स्तंभों की संरचना अति सामान्य है। उनके नीचले छोर पर कुंभियां और ऊपर के छोर पर शिर रखे है। घूमर में विद्याधर और देवी-देवताओं की नृत्य पुतलियां विभिन्न रंगों में नाट्य के वाद्ययंत्रों के साथ भावभंगिमा के अभिनव को प्रदर्शित करती हुई खड़ी है। नृत्य के ये भक्तिप्रकार भारतीय कला-संस्कृति की स्मृति दिलाते हैं। इसमें अन्य शिल्यानक्काशी नहीं है। अन्य प्रकार से घूमट बिल्कुल सादा है। विशालता ही उसका गौरव है।

(आगे और भी है...!) ❋सभार : श्री आनंद कल्याण

सत्परामर्श अपने स्वभाव का एक अंग बने

दीपक से दीपक जलता है और चिनगारी से आग पैदा होती है। प्रचारात्मक प्रक्रिया को हमें स्वयं दीपक गतिशील बनाना चाहिये। दीपक स्वयं जलता है और अपने आपको प्रकाश रूप में परिणत करता है। बर्फ स्वयं गलती है और सरोवर के रूप में परिणत होती है। बीज गलकर ही वृक्ष बनता है, बादल बरसकर अपना रूप तो मिटा देता है पर संसार में जो हरीतिमा, सरसता और शीतलता दिखती है, वह उस बादल के त्याग का ही परिणाम है। परिवार के सदस्यों को यही आदर्श अपनाना चाहिये और अपनी आंतरिक गरिमा को कार्य क्षेत्र में उतार कर उसे विश्वमंगल के रूप में विकसित होने देना चाहिये।

संयोगवश न कोई ऊंचा उठता है और न नीचा गिरता है। विचारों की ही शक्ति है कि मनुष्य को आसमान पर उड़ा ले जाती है या गहरे गर्त में धकेल देती है। अक्सर उच्च विचारणाएं धुंए की तरह यूं ही हलकी-फुलकी मन-मस्तिष्क में घूमती रहती है और लोग उन्हें कहने-सुनने भर के लिए प्रयुक्त करते है, पर यदि सचमुच उन्हें आस्था के रूप में विकसित कर लिए जाए, सच्चे मन से हृदय में बिठाकर श्रद्धा या निष्ठा में परिणत कर दिया जाए, तो फिर आज का सामान्य व्यक्ति भी कल महामानव बन सकता है। इस तथ्य को हमें गहराई से समझना चाहिये और प्रयास यह करना चाहिये कि उत्कृष्ट विचारधारा मस्तिष्क तक सीमित न रहकर हृदय में उतरकर अंतःकरण में स्थान जमाए, रोम-रोम में समाए और कार्य रूप में उतरे। यदि ऐसा हो सके तो समझना चाहिये कि जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर लिया।

अपनी सबसे बड़ी सेवा मनुष्य यही कर सकता है कि अपना मस्तिष्क और अंतःकरण उच्च विचारणाओं में रँग ले। दूसरों की सबसे बड़ी सहायता यही की जा सकती है कि उनके सोचने में जो त्रुटि है, उसे सुधार दिया जाए। मनुष्य शक्ति का पुंज है। वह शारीरिक दृष्टि से अपंग-असमर्थ होते हुए भी यदि मस्तिष्क और हृदय की दृष्टि से स्वस्थ है, तो समझना चाहिये कि उनकी मूल संपदा का 80 प्रतिशत भाग मौजूद है और वह उतने में ही अनेक असमर्थताओं और असुविधाओं के रहते हुए भी अपना और दूसरों का भला कर सकता है। इस संसार का सबसे बड़ा पुण्य-परमार्थ एक ही है कि हम लोगों की अवसादग्रस्त मनोभूमि में प्रकाश की किरणों को प्रवेश कराने में सहायता प्रदान करें, उनका भटकाव दूर करें। उन्हें कुत्सओं और कुंठाओं के दलदल से उबारें। मनोबल प्रदान करने से बढ़कर और कोई अनुदान इस संसार में ही है नहीं। अन्नदान, वस्त्रदान आदि तो किसी विपत्तिग्रस्त की सामयिक शारीरक सहायता मात्र है। इनमें किसी के अंतरंग का पोषण नहीं होगा। यदि अंतःकरण दुर्दशाग्रस्त बना रहे, तो कुबेर जितनी संपदा पाकर भी मनुष्य सुखी नहीं हो सकता।

हम में से प्रत्येक की अटूट निष्ठा इस बात में होनी चाहिये कि अपनी उच्च आस्थाओं का अधिकाधिक पोषण-अभिवृद्धन करेंगे और उस संपदा से अपने समीपवर्ती क्षेत्र को अधिकाधिक लाभान्वित करेंगे। यह एक ही रीति-नीति यदि मजबूती से अपना ली जाए, तो लोगों की दृष्टि में वह भले ही कोई बड़ा काम दिखाई न दें, पर आत्मा और परमात्मा के दरबार में उसे अति उच्चकोटि का परमार्थ माना जाएगा। व्यक्तिगत उत्कृष्टता के अभिवर्द्धन के लिए हम जीवन की गुत्थियों को सुलझाने वाला दैवी संपदाओं की और उन्मुख करने वाला स्वाध्याय, सत्संग, चिंतन और मनन अपनाने का अधिकाधिक प्रयत्न करते रहना चाहिये।

लोकसेवा के लिए, जनकल्याण के लिये, पुण्य-परमार्थ के लिए, देश-धर्म-समाज को समुन्नत बनाने के लिए एक रीति-नीति अपना ही लेनी चाहिये कि अपने संपर्क क्षेत्र में उत्कृष्टता की आस्थाओं का बीजारोपण करेंगे। यह कार्य सरल है, कठिन नहीं। वे कार्य कठिन लगते है, जो पहले किये नहीं गए हैं, अनभ्यस्त है। अभ्यास और व्यवहार में आने वाले कार्य वस्तुतः कठिन होते हुए भी नितांत सरल हो जाते है। हमारा संपर्क सैकड़ों से स्थायी और हजारों से अस्थायी होता है। लोगों से मिलना-जुलना बना ही रहता है। बातें भी करनी ही पड़ती है। वे अपनी बातें हम से कहते है या हमें उनसे अपना कुछ प्रयोजन कहना पड़ता है। यह क्रम बंद नहीं हो सकता।

सांसारिक वार्तालाप के बीच उत्कृष्टता, आदर्शवादिता का पुट देते रहने की आदत डाल लेना आरंभ में ही कुछ सतर्कता, चेष्टा और मनोयोग की अपेक्षा करेगा, पीछे तो वह नितांत सरल और स्वाभाविक हो जाएगा। कितनों को गालियाँ देने, बकते रहने की आदत पड़ जाती है। कईयों को निंदा-चुगली किये बिना, छिद्रान्वेषण में अकल लड़ाए बिना रोटी हजम नहीं होती। यह सब केवल वार्तालाप में कुछ अतिरिक्त मिला देने की आदत मात्र है, जो पीछे इतनी मजबूत हो जाती है कि हानि उठाने पर भी वह छुड़ाए नहीं छुटती। इसी प्रकार अपने स्वभाव में लोगों को

सत्परामर्श देते रहने की, उनकी भूलों की ओर इंगित करते रहने की आदत डाल लें, तो उसका भारी हितकर परिणाम हो सकता है। संभव है कोई तत्काल आपकी बात न मानें, पर यह भी निश्चित है कि सुलझे हुए विचारों में असाधारण शक्ति होती है, वे कहीं ठीक तरह बैठ जाएं, तो आज न सही कल, जब भी अवसर मिलता है, उभर कर आते है और सुधरी हुई गतिविधियाँ अपनाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करते हैं।

इसके लिये न अलग से समय निकालने की आवश्यकता है और न अतिरिक्त कार्यक्रम बनाने की। साधारण दैनिक वार्तालाप में आदर्शवादी परामर्श एवं प्रेरणा देते रहने की अपनी आदत भर बनानी पड़ती है और यह परामर्थ-प्रयोजन सहज ही, अनायास ही स्वसंचालित रीति से अपना काम करता रहता है।

यहां एक ही बात ध्यान रखने की है कि किसी व्यक्ति को उसकी गलती सुनता मंजूर नहीं। हर आदमी अपने को सही समझता है। गलती बताने वालों को अपना अपमानकर्त्ता समझता है और अपने पूर्वाग्रह को प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर उसी का समर्थन करने में अपनी मानरक्षा समझता है। इस जनमानस की अति दुःखद दुर्बलता को हमें ध्यान में रखना होगा और जो बात कहनी है, सीधे आदेश देने या सीधी गलती बताने की अपेक्षा घुमाकर कहना चाहिये। यदि इतनी कुशलता सीख ली गई, तो फिर बिना विरोध का सामना किये अपना तीर निशाने पर लगता रहेगा। जो कहना है, किसी दूसरे का विवरण सुनाते हुए कहना चाहिये। जैसे किसी को नशा न पीने का परामर्श देना हो, तो सीधी बात कहने से नशेबाज रूष्ट होगा झुँझलाएगा। यदि किसी अन्य नशेबाज को उठानी पड़ी हानि का दुःखद वर्णन क्रोध का नहीं करूणा की भाषा में कहकर सुनाए जाए, तो व्यक्ति परोक्ष रूप से उसका प्रभाव अपने ऊपर अधिक अच्छी तरह ग्रहण कर सकता है। यह बड़ें की, विरानों की बात रही, पर अपने अति घनिष्टों को, छोटों को सीधा परामर्श भी दिया जा सकता है। हाँ, एक ही बात ध्यान में रखनी होगी कि उसमें आक्रोश, घृणा, तिरस्कार के भाव नहीं शालीनता, आत्मीयता, करूणा और सद्भावना का पुट रहे। लोग सत्परामर्श से नहीं, कहने के ढंग पर नाराज होते हैं। अक्सर होता यह है कि जिन बातों से हमारी असहमति-सी होती है, उनके प्रति आक्रोश भी होता है। मन का उथलापन उस आक्रोश को ही पहले उभार लाता है और जो कहा जाना चाहिये, उसकी अपेक्षा आक्रोश अधिक व्यक्त कर दिया जाता है। बस यही विरोध का कारण बनता है। यदि सामने वाले के प्रति अपनी सहज आत्मीयता, हितकामना और सहानुभूति का पुट लगाते चला जाए, तो मतभेद वाले संदर्भों को भली-भांति व्यक्त किया जा सकता है और बिना विरोध का सामना किये उसका सत्परिणाम देखा जा सकता है।

हमें अपने आपको यह प्रकाश यंत्र के रूप में प्रचार तंत्र के रूप में विकसित करना चाहिये। भले ही लेख लिखना, भाषण देना न आए पर सामान्य वार्तालाप में आदर्शवादिता का पुट घोले रहने की आदत डाले रह सकते है और इस प्रकार अपने संपर्क क्षेत्र में नवनिर्माण की विचारधारा के लिए गहरा स्थान बना सकने में सफल हो सकते हैं।

सत्य और असत्य नाम के दो भाई थे। सत्य, स्वच्छ और सुंदर तथा असत्य मलिन और देखने से ही अप्रिय लग रहा था। असत्य जहां जाता ठुकराया और दुतकारा ही जाता, इसलिये उसने सत्य से ईर्ष्यावश बदला लेने का निश्चय कर लिया।

एक बार दोनों तीर्थयात्रा पर निकले, वहां भी यही स्थिति रही। सत्य का तो सम्मान होता, क्योंकि वह सुंदर लगता था और असत्य का अनादर, क्योंकि न उसके वस्त्र साफ थे न आकृति।

घूमते-घूमते दोनों बद्रीनाथ पहुंचे। स्नान के लिये एक सरोवर में उतरे। सत्य देह मल-मलकर स्नान करने में लगा रहा, उसने यह भी न देखा कि इस बीच असत्य चुपचाप उसके कपड़े पहनकर भाग गया। बाहर निकलने पर सत्य को विवश होकर असत्य के कपड़े पहनने पड़े। तब से दोनों बराबर घूम रहे हैं और हर व्यक्ति के पास जाते हैं, पर असत्य की पूजा होती है क्योंकि उसने सत्य के कपड़े पहन लिए है और सत्य अब दर-दर मारा फिर रहा है।

✻ मानव भव में ही भाव शुद्ध बनते हैं। भाव विशुद्ध बनना अर्थात् केवलज्ञान प्राप्त होना। केवलज्ञानी को भाव मन की आवश्यकता ही नहीं रहती। वह भाव से युक्त बन जाता है। केवलज्ञानी के पास द्रव्य मन रहता है।

छोड़ने लायक बावीस अभक्ष्य पदार्थ

✽ प.पू.अमितगुणा श्रीजी म.सा.

अभक्ष्य यानि? अनंत जीवों की हिंसा वाला, त्रस जीवों की हिंसावाला अयोग्य भोजन, शरीर, मन व आत्मा के लिये अहितकारी भोजन, शरीर टिकाने के लिये अनुपयोगी भोजन, दुष्ट वृत्तियों को उत्पन्न करें में ऐसा तापसी भोजन इहलोक व परलोक को बिगाड़े। ऐसा भोजन अभक्ष्य कहलाता है।

श्री सर्वज्ञ प्रभु ने 22 अभक्ष्य को त्याग कहा है, वह वास्तव में युक्ति-युक्त है, किन-किन दोषों के कारण भोज्य पदार्थ व अभक्ष्य गिना?

1- कारण-

1- कंदूमल आदि कितने ही पदार्थों में अनंत जीव का नाश तथा कितने ही मांस-मदिरादि पदार्थों में बेइद्रिय से लेकर पंचेंद्रिय तक के असंख्य त्रस जीवों का नाश होता है। इस प्रकार महा हिंसावाला भोजन होने से ज्ञानियों ने अभक्ष्य कहा है।

2- अभक्ष्य पदार्थ के खान-पान से आत्मा का स्वभाव कठोर और निष्ठुर बनता है।

3- आत्महित का नाश होता है।

4- आत्मा तामसी बनती है।

5- हिंसक वृत्ति जाग्रत होती है।

6- अनंत जीवों को पीड़ा देने से अशाता वेदनीयादि अशुभ कर्म बंध होता है।

7- धर्म विरूद्ध भोजन है।

8- जीवन टिकाने के लिये आवश्यक नही है।

9- जीवन में जड़ता उत्पन्न करता है अर्थात् धर्म के प्रति अरूचि भाव।

10-आयुष्य में दुर्गति का बंध कराता है।

11-काम-क्रोध में वृद्धि होती है।

12- रस वृद्धि से भयंकर रोग की उत्पत्ति।

13-अकाल असमाधिमय मृत्यु होती है। अनंत ज्ञानी के वचन का भंग होता है।

इन सभी हेतुओं को ध्यान में लेकर अभक्ष्य पदार्थों का जीवन भर त्याग करना चाहिये।

अभक्ष्य अनन्तकाय के त्याग से फायदेः-

2- आत्मा में कोमलताः-

1- बहुत ही सुन्दर परिणाम उत्पन्न होते है।

2- इन परिणामों से सर्व जीवों के प्रति मैत्री भाव जागृत होता है।

3- मैत्री आने पर द्वेष नष्ट हो जाता है।

4- राग के बंधन टूटने लगते है और आत्मा में उत्तरोत्तर शुभ भावों की तरंगे उठती है।

5- इहलोक व परलोक दोनों ही सुधरते है और अन्त में वीतराग दशा की प्रतीति हो जाती है।

इस प्रकार आत्मिक गुणों को प्राप्त करने में सहायक ऐसे त्याग को जीवन में अपनायें। तिलांजलि दे दो अभक्ष्य अनंतकाय के भक्षण को।

ये है 22 अभक्ष्य :-

3- पांच उंबर फल-

1- बड़ का टेटा। 2- पीपल की टेटीयों 3- लक्ष की रोटी 4- उंबरा (गुलर) की टेटी 5- कचुंबर (काला ऊंबर) की टेटीयां चार महाविगई 6- मद्य 7- मंदिरा 8- मांस 9- मक्खन 10- हिम (वर्ष) 11- विष (जहर) 12- करा (ओला) 13- सर्व प्रकार की मिट्टी 14- रात्री भोजन 15- बहु बीज 16- अनन्त काय 17- बोल अथाणु (अचार) 18- धोलवड़ा (द्विदल) 19- बैंगन 20- अजाणे फल 21- तुच्छ फल 22- चलित रस।

4- पांच उंबर फल-

ये पांच प्रकार के वृक्षों के फल में मच्छर के आकार के अति सुक्ष्म बहुत सारे त्रस जीव होते है। बीज की संख्या भी (अधिक मात्रा) अत्यधिक होती है। इसलिये इनका भक्षण अगणित जीवों की हिंसा रूप होने से त्याज्य है।

अनर्थकारी चार महाविगईयों :-

5- मद्यः- मदिरा, मांस, मक्खनः-

1- इन चारों महा विबईयों उन-उन वस्तुओं के रंग जैसे असंख्य बेइन्डियादि त्रस जीव निरंतर उत्पन्न होते रहते है।

2- इन चार महाविगईओं का भक्षण अति विकार एवं कामवासना को उत्तेजित करता है।

3- मानसिक एवं शारीरिक दोषों को उत्पन्न करता है।

4- अनेक रोगों को जन्म देता है।

6- मद्य :- कुन्ती, भंवरी और मधुमक्खी ये तीन जन्तु स्वयं ही लार में से मद्य बनाते है यह तीनों प्रकार के मद्य में उसी के रंग के असंख्य त्रस जीव निरन्तर उत्पन्न होते रहते हैं।

असख्य त्रस जीवों की हिंसा के कारण मद्य को अभक्ष्य कहा है।

7- मदिरा :- मद्य सूरा कांदबरी विस्की दारू शराब द्राक्षासव बाईन लट्ठी बीयर, में उसी के वर्ण के असंख्य सुक्ष्म

त्रस जीव निरन्तर उत्पन्न होते है और मरते है तथा इसका सेवन करने से अनेक नुकसान होते हैं। इसलिये अभक्ष्य कहा है।

8- मांस :- पंचेन्द्रिय प्राणियों के वध (मारे) बिना मांस तैयार होता नहीं इसमें क्षण में क्षण अनेक समुच्छिम जीवों अनन्त निगोद के जीव सुक्ष्म त्रस कीड़े उत्पन्न होते रहते है। इसलिये मांस को अभक्ष्य कहा।

9- मक्खन :- छाछ से बाहर निकालते ही तुरन्त मक्खन में अति सूक्ष्म उसी वर्ण के त्रस जीवों का समूह पैदा हो जाता है इसलिये अभक्ष्य कहा है।

एक भी जीव को मारना अत्यन्त पाप है तो जन्तुओं के समुदाय से भरपूर इस मक्खन का कौन सुज्ञ मनुष्य भक्षण करें? अतः परमात्मा के उपासक कभी भी भक्षण नहीं करता है इस मक्खन को बाजार में पैकेट बनाकर पोल्शन बटर नाम से बेचा जाता है पश्चिम के लोगों के अधिक संसर्ग से भारतीय लोग भी ब्रेड बटर (पाऊ रोटी) तथा मक्खन का उपयोग करने लगे लेकिन धार्मिक दृष्टि से यह उचित नहीं है। पाऊ रोटी को बनाने के लिये आटे में रात्री को जिस प्रकार से खमीर उठाकर बनाते है वह रीति ही अभक्ष्य है तथा पाऊ ब्रेड नरम होने के कारण बासी ही गिनाते है जिससे उसमें लालिया (बेइन्द्रिय) जीव को उत्पत्ति हो जाती है। वीतराग के उपासकों को पाऊ रोटी और मक्खन का उपयोग करना बिलकुल भी उचित नहीं है पाऊ में उठाया खमीर तथा जीव जन्तु वाला मैदा और मक्खन अभक्ष्य होकर त्रस जीवों के नाश के साथ आरोग्य की हानि करते है इसलिये इनको त्याग करना उचित है।

10- हिम (बर्फ) :- इसमें बहुत दोष है, पानी की एक बून्द असंख्य जीवमय होता है, उसमें एक जीव के शरीर को सरसव जितना बनाये तो (कल्पना करें) पानी की एक बून्द के जीव एक लाख योजन के जंबूद्वीप में भी समा नहीं सकते है इतने सुक्ष्म शरीर वाले होते हैं, पानी की मशीन में बहुत ठंडा करने पर बर्फ जमता है इसमें असंख्य अपकाय के जीव कण-कण में होते है, बर्फ जीवों का जत्था है, छना हुआ पानी जीवन निर्वाह के लिये जरूरी है अतः पानी को अभक्ष्य गिना नहीं परन्तु बर्फ तो जीवन निर्वाह के लिये बिन जरूरी है तथा अधिक जीवों की हिंसा का कारण होने से अभक्ष्य कहा है और शरीर के लिए भी हानिकारक है।

11- विष (जहर) :- विष अर्थात् जहर जो पेट में जाते ही मनुष्य के प्राण हरण करता है मनुष्य को धीरे धीरे मारता विष स्व. पर का घातक है इसीलिये अभक्ष्य माना है, विष खाकर अपधात करने से परभव में नरक आदि हल्की गति प्राप्त होती है, अतः खाना भी नहीं चाहिये नहीं व्यापार करना चाहिये।

12- करा :- यह बर्फ के समान पानी का कच्चा गर्भ है कभी-कभी बारिस में ओले पड़ते है जिससे असंख्य पानी के जीव होते है। अतः यह भी बर्फ के समान हानिकारक अतः ज्ञानियों ने इसे अभक्ष्य माना है।

13- सर्व प्रकार की मिट्टी :- सर्व प्रकार की मिट्टी क्षार, नमक, अभक्ष्य है कारण कि उसके कण-कण में पृथ्वीकाय के असंख्य जीव होते है, एक हरे आंवले प्रमाण पृथ्वीकाय में असंख्य जीव है उन सभी का शरीर कबुतर जैसा हो जाय तो पूरे जंबुद्धीप में समा नहीं सकते है, इतने जीवों का नाश करके अल्प तृप्ति का अनुभव करना इससे बेहतर है कि इन चीजों का त्याग करके उन्हें अभयदान देवें।

14- रात्री भोजन :- सूर्यास्त से दूसरे दिन के सूर्यास्त तक के चार प्रहर को रात्री गिनी जाती है उसमें भोजन करना उसका नाम रात्री भोजन।

रात्री भोजन त्याग के मुख्य कारण :- सूर्यास्त के बाद अनेक सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति हो जाती है जो बिजली के प्रकाश में हमें दिखाई नहीं देते ऐसे जीव भोजन में आकर नष्ट हो जाते है।

1- रात्री में उड़ते मच्छरादि भोजन में आने से उनका नाश तथा खानेवाले व्यक्ति को मलेरिया वि.रोग होता है।

2- जहरीले जन्तुओं की लार टपकने से मृत्यु हो जाती है।

3- रात्री भोजन से तिर्यच नरक गति का बन्ध होता है।

4- रात्री भोजन करने वाले मनुष्य कौआ, बिल्ली, गीध, सुअर, सर्प, बिच्छु और चन्दन धो तिर्यच रूप में उत्पन्न होने से कठोर परिणाम होने पर नरक गति सुलभ हो जाती है। इस प्रकार रात्री भोजन में अनेक दोष होने से इसे अभक्ष्य माना है-

रात्री भोजन छोड़ने के कारणः-

1- रात्री भोजन से इस भव में हानि और परभव में दुर्गति।

2- आयुर्वेदिक शास्त्र में कहा है कि- हमारे शरीर में सूर्यास्त के बाद हृदय कमल सकुचित हो जाते है उसके बाद डाला गया भोजन अत्यन्त हानिकारक शरीर के लिये होता है, स्वभाव कठोर बनता है, सुक्ष्म जन्तुओं के भक्षण से हिंसा होती है अतः रात्री भोजन का त्याग करना योग्य है।

3- अज्ञानी पशु,पक्षी भी रात को भोजन नहीं करते है लेकिन विश्राम करते है जबकि मनुष्य को तो अभक्ष्य आदि का पाप अनन्त दुःख का मूल समझकर रात्री भोजन का त्याग करना चाहिये।

4- नरक में ले जाने के चार कारण है-

1- रात्री भोजन 2- परस्त्री गमन 3- आचार 4- अनन्तकाय (कदमूल) का भक्षण 5- जो पुण्यात्मा रात्री भोजन का त्याग करते है वे महिने में 15 उपवास का फल प्राप्त करते है तथा जो जिन्दगी भर का त्याग करते हैं उन्हें आधी जिन्दगी के उपवास का लाभ मिलता है।

15- बहुबीज :- जिन फलों के दो बीज में अन्तर पट होता नहीं अर्थात् बीज से बीज चिपके हुए हो जिन फलों में इस प्रकार के बीज रहे हुए हो तथा गर थोड़ा और बीज अधिक बीजों को रहने के लिये अलग-अलग खाने अथवा स्थान नहीं होवे फल बहुजीव कहलाते है, जैसे- बैंगन, अंजीर, टमाटर सभी के बीज-बीज में अलग-अलग जीव होते है। इसलिये अभक्ष्य है।

16- अनन्त काय :- एक शरीर में अनन्त जीव हो उसे अनन्त काय कहते हैं। अनन्त काय की पहचान-जिस वनस्पति के पत्ते और फल की प्रमुख नस एवं संधि दिखाई न दे, गांठे गुप्त हो और व तोड़ने पर बराबर दो भोग होते हो तार और रेशे नहीं काटने के बाद बोने पर वापस उग जाते है उन्हें साधारण वनस्पति तिकाय समझना चाहिये, कन्द मूल आदि अनन्तकाय में अनन्त जीवों का नाश होने से इसे अभक्ष्य माना है इसके त्याग से अनन्त जीवों के अभयदान का पुण्य हमें प्राप्त होता है।

17- अचार- नींबु, केरी, गुन्दा, केर, करमदे, ककड़ी चीभड़े, मिर्ची के अचार तीन दिन उपरान्त चौथे दिन अभक्ष्य बन जाते है, चौथे दिन इन अचारों में अनेक त्रस कोव उत्पन्न होते और मरते है। धूप में कड़क करे बिना अचार में बेइन्द्रिय जीव उत्पन्न हो जाते है, झूठे हाथ से स्पर्श करें तो पचे, समूर्च्छिम जीव उत्पन्न हो जाते है।

अचार के लिये मात्र धूप देना ही नहीं लेकिन केरी, मिर्ची गुन्दा, वि. को चुड़ी के समान कड़क सुख न जाए तब तक पांच सात अथवा अधिक दिन तक धूप देना चाहिये इस प्रकार उपयोग पूर्वक किये गये अचारों के बाद में भी बहुत उपयोग पूर्वक रखना चाहिये।

18- घोलवडा (द्विदल) कढोल- जिसकी दो फाड़ होती ऐसे अनाज के साथ कच्चा दूध, दही अथवा छाछ मिलने पर उसमें तुरन्त ही बेहदिय जीव उत्पन्न हो जाते है। द्विदल जैसे कि चने, मुंग, मठ, उड़द, तुवर, दाल, चवले, कथली, बटले मैथी, छोड़ वि. तथा उनसे बना हुआ आटा दाल अथहा उनसे बनी हुई वस्तुएं द्विदल कहलाती है। जैसे- दाल, कढ़ी, गाठीया, पूरी पापड़, बून्दी दहीबड़े बड़ी के साथ कच्चे दूध, दही, छाछ का उपयोग करने से अभक्ष्य बनने जिसमें से तेल निकलता हो बे द्विदल नहीं कहलाते जैसे- राई, सरसव (सरसू) तिल, मुंगफली सोयाबीन, सांगरी। परन्तु कच्चे दूध, दही, छाछ को खूब गरम (हाथ जल जाय ऐसा) करके अथवा गरम करके ठंडा करने के बाद यदि उसमें चने का आटा वि. डाले तो द्विदल नहीं कहलाता है। **(आगे और भी है...!)**

आशाएं

✻ कु. दिव्या सृष्टि 'दिव्या', फिरोजाबाद (उ.प्र.)

सितारों के झरोखे से
बादलों के आशियानों तक
मुस्कराते चांद से
गुनगुनाती हवाओं तक
यह दुनिया थमती नहीं
थमती नहीं
एक कदम आगे रहकर
जीलो ये दुनिया जी भरकर
इन मासूम आँखों में ये जल्दी बसती नहीं,
बसती नहीं,
फूलों की मुस्कान से,
सूरज की किरणों तक
बारिश की बूंदों से
बर्फीले चादर तक
आशाएं रूकती नहीं
रूकती नहीं
जिंदगी है छोटी सी
किताबों के पन्नों सी
खत्म होने से थमती नहीं
थमती नहीं,
मोतियों के रूप से
लहरों की बौछार तक
हिमालय की गोद से
पेड़ों की छांव तक
दिल भरता नहीं,
भरता नहीं,
यही पल है यारो
जीलो जी भरकर
कल न जाने हम हों या नहीं हों।

धर्म पुरूषार्थ

✻ जैनाचार्यश्री जितरत्नसागरजी 'राजहंस'

पांचवां अंग-धार्मिक सम्पत्तियाँ

देव-द्रव्य एवं ज्ञान द्रव्य की व्याख्या एवं उपयोग गतांग में बताया था। अब आगे पढ़िए।

गुरू द्रव्य :- यहां गुरू शब्द में साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका, इन चारों के लेना या नहीं? यह प्रश्न होता है। चारों सर्वविरति घर-देशविरति धर सम्यग् दर्शनी होने से गुरू शब्द के व्युत्पव्यर्थ के आधार पर यह दूसरे की दृष्टि में गुरू शब्द प्रवृत्ति निमित्तक भी बन सकते हैं। परन्तु सामान्यतया रूढ़ी तथा प्रवृत्ति से श्रमण-श्रमणी महात्माओं के लिये ही गुरू शब्द प्रचलित है।

उन गुरूदेवों से संबंधित द्रव्य समावेश इस गुरू द्रव्य में होता है। किन-किन तरीके से आया हुआ द्रव्य किन-किन कार्यों में उपयोग करना, यह शास्त्रों से या गुरूवरों से समझ ले।

हाँ इतना अवश्य है कि गुरू द्रव्य, ज्ञान द्रव्य, देव द्रव्य में जा सकते है किंतु देवद्रव्य या ज्ञान द्रव्य का उपयोग गुरू द्रव्य में नहीं किया जा सकता। ठीक उसी प्रकार से देवद्रव्य का उपयोग ज्ञानद्रव्य में नहीं किया जा सकता।

साधारण द्रव्यः-

साधारण द्रव्य के मुख्यतया सात भाग है तथा पेटा भाग अनेक हो सकते है। 1- प्रतिमा 2- मंदिर 3- ज्ञान 4- साधु 5- साध्वी 6- श्रावक 7- श्राविका। ये मुख्यतः सात क्षेत्र साधारण के 7 भाग है।

साधारण द्रव्य स्पष्ट नाम निर्देश बिना प्रथम तीन क्षेत्र में उपयोग करने का निर्धारित प्रकाल्पित द्रव्य है। स्पष्ट नाम निर्देश पूर्वक प्रकल्पित द्रव्य जिसके नाम का निर्देश हो उसमें उपयोग करना चाहिये।

उदाहरण तौर पर- एक व्यक्ति देवद्रव्य में 11/-, ज्ञान द्रव्य में 25/-, गुरूद्रव्य में 31/- लिखवाता है तो उपरोक्त रूपये उसी खाते में वापरना चाहिये परन्तु एक व्यक्ति 70/- साधारण खाते में लिखवाय तो उस द्रव्य का उपयोग कैसे करना? उसके दो विकल्प है। पहली प्रवृत्ति यह है कि साधारण खाते के सात भाग है। जिस समय जिस खाते में जितने द्रव्य की आवश्यकता हो उसमें उतनी राशि का उपयोग कर लें।

दूसरी बात ऐसी है कि साधारण खाते की जितनी भी राशि एकत्रित हो वह सभी सात भागों में बराबर बांट कर उन-उन खातों में उसका उपयोग कर लेना चाहिये उसमें यह तो पहले ही बता गए है कि नीचे के खाते की राशि ऊपर के खातों में उपयोग कर सकते हैं।

आज देव का साधारण, गुरू का साधारण या ज्ञान का साधारण ऐसा शब्द प्रयोग किया जाता है किंतु इसके बजाय साधारण में से प्राप्त देव निमित्तक द्रव्य इसी तरह ज्ञान एवं गुरू निमित्तक द्रव्य ऐसी शब्द रचना ठीक लगती है।

साधारण द्रव्य स्पष्ट नाम निर्देश बना प्रथम तीन में उपयोग करने का निर्धारित-प्रकल्पित द्रव्य है। स्पष्ट नाम निर्देश पूर्वक प्रकाल्पित द्रव्य जिसके नाम का निर्देश हो उसमें उपयोग करना चाहिये।

अक्लमंद बनो, मंदअक्ल नहीं....

✻ मुनिश्रीआनंदचंद सागर म.

यह कहा जाता है कि बुद्धिमान व्यक्ति वर्षों में जिंदगी जोड़ने का कार्य करता है जबकि बुद्धु व्यक्ति केवल जिंदगी में वर्ष जोड़ता है, मंदअक्ल होना यानि करीब-करीब बुद्धु होना है, इसके तीन लक्ष्य है।

1- पहला बुद्धु वह है जो 'कहने' में अव्वल होता है करने में पिछड़, 'जीभ' तो उसकी अच्छी चलती है लेकिन उसे शरीर चलाने में जोर पड़ने लगता है। कथनी-करनी का तालमेल न होना इसका तात्पर्य है।

2- दूसरे नंबर का बुद्धु वह है.... शक्ति सम्पन्न होने के बावजूद जो आए अतिथि सत्कार नहीं करता, संपत्ति का वह मालिक नहीं गुलाम होता है। कंजूसी एक प्रकार का हृदय रोग है जो कंजूस और मक्खीचूस होते है वे लक्ष्मीजी के वॉचमेन कहलाते हैं।

3- तीसरे नंबर का बुद्धु वह है जिसकी आँखें तो अच्छी है मगर 'दृष्टि' खराब है। वह रोज उठता जरूर है पर जागता नहीं है। प्रभात होने पर भी उसके भीतर में कालिमा का साया बरकरार है। याद रहे, खूबसूरत 'गोगल्स' नहीं परन्तु मानवीय संवेदना से छलकते आंसू ही, आंखों की शोभा है।

सागर समुदाय के गौरव

पूज्यपाद आचार्य श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा

पूज्यपाद श्री आगमोद्धारकश्री के संयम वर्ष के 125 (वि.सं.2073) एवं आचार्य पद प्राप्ति के 100 (वि.सं.2074) वर्ष पर हम एक नया कॉलम शुरू करने जा रहे है। सुविशाल सागर समुदाय के साधु-साध्वी भगवंतों ने दर्शन-ज्ञान-चारित्र के क्षेत्र में उत्कर्ष्ट साधना करते हुए सागर समुदाय को गौरांवित किया है। आपश्री ऐसे गुदड़ी के लाल है जो आज भी जैन जगत की आँखों से ओझल रहते हुए चारित्र धर्म की साधना में रत है। हम उनके त्यागमय जीवन से आपको अवगत कराना चाहते है। इस लेखमाला में हम प्रतिमाह सागर समुदाय के श्रमण-श्रमणी भगवंतों में से किसी एक पर लेख प्रकाशित करेंगे। श्रावक-श्राविका, साधु-साध्वी भगवंत भी हमें आलेख भेज सकते हैं। आपके लेख का स्वागत है- सम्पादक

पुष्प स्वयं सुन्दर है। उसे सुन्दरता का बाना पहनाने की आवश्यकता नहीं होती। पुष्प के सौंदर्य का वर्णन करना नहीं पड़ता, न ही उसकी याद में स्मृतिधाम बनाने होते हैं। फूल से प्रसारित सुवास ही उसका जीवन और दर्शन बन जाती है। उसे चाह नहीं होती कि कोई उसके पास आये और उसकी तथा उसकी महक की प्रशंसा करें। फूल की सुवास को संग्रहीत करने के लिये कलम कॉपी या केमरा सक्षम नहीं है। जैन शासन में ऐसा कई विभूतियों का उद्‌भव हुआ है, जिनकी साधुता की सुवास आज भी सर्वत्र फैली रही है। मालवोद्धारक पूज्य आचार्यदेव श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी म. उन्हीं पुष्पों में से एक है, जिसकी सुवास पर जन साधारण सश्रद्धा सभक्ति दीवाने हैं।

वि.संवत् १९५० कार्तिक शुक्ला ११ के दिन अहमदाबाद (दोशीवाड़ा की पोल) में श्री जेसिंगभाई की धर्मपत्नी सौ.प्रधानदेवी की रत्नकुक्षी से अवतरित इस बालक का नाम चिमनलाल रखा गया। आर्य संस्कृति और धर्म संस्कृति के अनुरूप चिमनभाई का जीवन माता-पिता के सात्विक संस्कारों से सुन्दर और सुदृढ़बना। बचपन से ही धार्मिक शिक्षा के प्रति आकृष्ट चिमनभाई दूज के चांद की भांति वृद्धिगत होते हुए पूज्य आचार्य श्री विजयनीति सूरीश्वरजी म. के सम्पर्क में आए। फलतः वे धर्मक्रियाओं में तत्वज्ञ आराधक के रूप में प्रसिद्ध हुए। धर्मक्रिया, तप और जप से जुड़े चिमनभाई के अन्तस्थल में संयम जीवन का बीजारोपण कब हो गया यह तो उन्हें भी ज्ञात नहीं हुआ। किंतु युवा वय में माता-पिता के आग्रहवश उन्हें विवश होकर लग्नग्रंथि में आबद्ध होना पड़ा। आपकी जीवन संगिनी थी सौ. फूलकुंवर देवी। संसारी जीवन व्यतीत करते हुए आप नियमित रूप से प्रतिक्रमण, पूजा, प्रवचन, श्रवण, आयंबिल आदि के माध्यम से अपने लक्ष्य से जुड़े रहे। आपकी आँखों में परमात्मा का शासन और रजोहरण (ओघा) ही तैरता रहता था। संयम प्राप्ति के लिये आपने अनेकविध अभिग्रह धारण किये।

व्यवसायार्थ बम्बई में बसकर आपने अपनी धार्मिक प्रवृत्तियां जारी रखी और संसारी अवस्था में ही अपनी तेजस्वी मुखमुद्रा तथा प्रभावशाली वक्तृत्व से सैकड़ें आत्माओं को धर्मानुरागी बनाया। पायधुनी स्थित श्री गोड़ी पार्श्वनाथ मंदिर में आप अपने कल्याण मित्रों का नेतृत्व करते हुए धार्मिक क्रियाओं के माध्यम से सभी को सरोबार कर देते थे। आपने अनेक आत्माओं को वर्धमान तप की आराधना से जोड़कर स्वपुरूषार्थ से बम्बई कुभार टुकड़ा में आयम्बिल शाला की स्थापना की और सिद्धचक्र आराधक समिति का गठन किया। इस समिति द्वारा आज भी प्रतिवर्ष स्थान-स्थान पर हजारों आरधकों को ओली की आराधना करवायी जाती है।

चिमनलाल पूज्य आगमोद्धारकसूरीजी की श्रुत समर्थता तथा संयम साधना से बहुत प्रभावित थे। परिणाम स्वरूप दृढ़ वैराग्य को धारण कर संसार रूपी कीचड़ से निकलने के लिये तड़फने लगे। परन्तु धर्मपत्नी फूलकुंवरदेवी की प्रबल मोहदशा एवं बाधक मनोवृत्ति मार्गाविरोध बनती रही। पत्नी एवं साले के भय से पूज्य आचार्य श्री विजयनीति सूरीजी म.आदि भी

चिमनभाई को दीक्षित करने का साहस जुटा नहीं सके।

एकदा कल्याण मित्रों के साथ पौषध व्रत करते समय चिमनभाई के मधुरकंठ सरस्वती प्रस्फूटित हुई। भावातिरेक में एकाग्र होकर वे स्तवन गा रहे थे 'मने संसार सेरी विसरी रे लो...।'

तब एक मित्र ने सहसा कटाक्ष किया। चिमनभाई! वास्तव में आपको संसार के प्रति सच्चा वैराग्य उत्पन्न हो गया है? घबराइए मत, हम भी तुम्हारे साथ है।

बस, अक्लमंद को तो इशारा ही काफि था। चिमनभाई ने सजाग हो, सभी को संयम स्वीकार हेतु अभिग्रह प्रदान कर उन्हें प्रोत्साहित करना आरंभ कर दिया।

अपने मित्रवर श्री हीराभाई के दीक्षा प्रसंग पर आपकी अहमदाबाद में पूज्य आगमोद्धारकसूरीजी से भेंट हुई। आचार्यश्री ने कहा- पटवा! तम सबको दीक्षा के लिये प्रेरित करते हो, लेकिन स्वयं कब ले रहे हो?

साहब! मैं तो तैयार हूं, आप पूज्य की देरी है, प्रत्युत्तर में चिमनभाई ने विनम्र हो अपनी विषम परिस्थिति से पूज्यश्री को अवगत किया।

किन्तु सागरजी म. इस कार्य में माहिर जो ठहरे। उन्होंने चिमनभाई को हरी झंडी दिखा दी। निर्दिष्ट समयानुसार बम्बई में पूज्य आचार्य श्री विजय लब्धिसूरीजी म. के श्रीमुख से अट्ठमतप का प्रत्याख्यान स्वीकार कर आपश्री अहमदाबाद आए और वि. संवत् १९४८ जेठ कृष्णा ६ के शुभ दिन पूज्य आचार्यश्री सागरानंदसूरीजी म. के चरणों में दीक्षित हो मुनिश्री चन्द्रसागरजी बन गये। दीक्षा के समाचार वायुवेग से सर्वत्र प्रसारित हो गये। विरोध की आंधी अवश्य उठी किन्तु सागरजी म. की कुशलता से अल्पावधि में ही सब कुछ शान्त हो गया।

बम्बई समाचार मिलते ही डायाभाई, हीराभाई, शनाभाई, मूलचन्द भाई हठीसिंगभाई आदि ने भी अपने बिस्तर-बोरियाँ समेटने शुरू कर दिये और पूज्य सागरजी म. के सानिध्य में संयम स्वीकार कर मुनिश्री चन्द्रसागरजी के क्रमशः मुनिश्री देवेन्द्रसागरजी म., मुनिश्री हीरसागरजी, मुनिश्री सुबोधसागरजी मुनिश्री धर्मसागरजी, मुनिश्री हंससागरजी म. आदि नाम से शिष्य बन गये।

ज्ञानी गुरूदेव के सानिध्य में मुनिश्री चन्द्रसागरजी म. ज्ञानध्यान की प्रवृत्ति में आकंठ डूब गये और अल्पसमय में ही व्याकरण शास्त्र में पारंगत हो, आपश्री ने 'आनंद बोधिनी' टीका का सर्जन किया। आपकी विद्वता वाग्पटुता, प्रतिमा, स्थुलकाया, बुलंद आवाज तथा तप-त्याग, संयममय ओजस्वी साधना के बल पर अनेकानेक धर्म कार्य सम्पन्न होने लगे।

आगमोद्धारक पूज्य आचार्यश्री के वरदहस्त आपको पालीताना में वि. संवत १९९७ अगहन शुक्ला ५ के दिन गणिपद, अगहन शुक्ला ९ के शुभ दिन पंन्यासपद और वि.संवत् २००७ माघ शुक्ला १३ के शुभ दिन सुरत में पूज्य आगमोद्धारकाचार्यश्रीजी की भावनानुसार गच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्री माणिक्यसागरसूरीजी ने आचार्य पद अर्पण किया।

आपश्री ने श्रीपाल मयणासुन्दरी द्वारा की गई नवपद आराधना भूमि उज्जैन में श्री सिद्धचक्राराधना तीर्थ की स्थापना कर श्री केशरियाजी की संदेह प्रमाण प्रतिमा का निर्माण करवाकर सोत्साह उनकी अंजनशलाका करवायी और वहां जीर्ण-शीर्ण पाँच जिन मंदिरों का जीर्णोद्धार कर प्रतिष्ठा करवायी। आपश्री की पुनीत प्रेरणा से मालवा में अनेक स्थलों पर जीर्णोद्धार प्रतिष्ठाएं तथा आयंबिलशाला, पाठशाला, उपाश्रय आदि की स्थापना हुई। प्रभासपाटन तीर्थ की अंजनशलाका-प्रतिष्ठा भी आपके सानिध्य में सम्पन्न हुई थी।

आपश्री ने पूज्य आगमोद्धारक गुरूदेवश्री के प्रवचनों द्वारा जैन धर्म का प्रचार-प्रसार करने हेतु सिद्धचक्र मासिक का प्रकाशन आरंभ किया। साथ ही आगम आदि अनेक ग्रंथों का सम्पादन कर तथा नवीन रचना कर मुद्रित करवाई।

गुजरात, सौराष्ट्र, मध्यप्रदेश, बिहार, बंगाल, महाराष्ट्र, आपश्री का विचरण क्षेत्र रहा है। जहां आपकी स्मृति आज भी कायम है।

अनेकविध शासन प्रभावना के कार्यों में अहर्निश रात होने के उपरांत भी आपने ७० वर्धमान तप की ओली, १०८ नवपदजी की शाश्वती ओली, ज्ञानपंचमी, पोषदसमी, वर्षीतप आदि की तपाराधना की।

आपश्री के स्वशिष्यों की संख्या १४ थी। वर्तमान में आपके लगभग ८०-८५ शिष्य-प्रशिष्य अनेकविध कार्यों के माध्यम से शासन की प्रभावना कर रहे हैं।

वि.संवत् २०११ चैत्र बिदी ६ के दिन सुरत में ८४ लाख जीवराशि के साथ क्षमापना कर 'अब मोहे ऐसी आय बनी' स्तवन श्रवण करते हुए, आपश्री का समाधिपूर्वक अवस्था में सूरत में देहावसान हुआ।

शुद्ध प्रतिक्रमण

प्रतिक्रमण का साधारण सा मतलब होता है पापों से पीछे हटना। वैसे तो हम सभी (जो करते है वो) व्यवहार से सूत्रों को बोलकर या सुनकर एक विधि कर लेते है और मान लेते है कि हमारे पापों का प्रायश्चित हो गया लेकिन जितनी सावधानी क्रिया में है उतनी यदि जीवन में, आचरण में रखें तो प्रतिक्रमण करना ही ना पड़े। प्रतिक्रमण करना पड़ता है इसलिये यह विष कुंभ के समान ही समझना। भूलें करनी फिर माफी मांगनी यह तो आदत पड़ गयी है। हम भूले दूसरों से करते है और माफी भगवान से मांगते है पर भूल करना छोड़ने की आदत नहीं डालते उसकी जितनी कोशिश या पुरूषार्थ करना चाहिये वो नहीं करते।

हम जितनी देर सामायिक, प्रतिक्रमण, भक्ति या नवकार का पाठ करते है उतरी देर तक ही पापों से दूर रहते है और उतनी देर तक ही पापों का नाश या संवर होता है यह सारे शुभ भाव से होता है और वितरागता तो चारों कषायों को छोड़ने से ही होती है। मैं किसी को मार बचा सकता नहीं इसलिये मुझे पाप या पुण्य लगता नहीं यह अध्यवसान हमेशा हमारे भाव में रखते हुए आत्मलीनता को महत्व देना है। बेदरकारी से पाप व सावधानी से पुण्य बंधता है। मैं आत्मा मोक्ष में आत्मा, भूल आत्मा से, कर्म-बंध आत्मा को तो यह पुद्‌गल शरीर बीच में कहां से आया। अनादि काल से दृष्टि पुद्‌गल की तरफ होने से आत्मा का तो ध्यान ही नहीं है, उपचार सारे पुद्‌गल में ही ढूंढते है। पुद्‌गल की क्रिया के साथ कर्म निर्जरा का कोई संबंध नहीं, महत्व तो अंदर की परिणति एवं भाव का ही है, पुद्‌गल तो निमित्त या कारण मात्र है। बाहरी क्रियाओं से बचाने से भी अपनी भावों को बचाना जरूरी है।

परिग्रह इकट्‌ठा करने का भाव, दूसरों को अपनी महत्ता बढ़ा चढ़ाकर बताने का भाव, मैं-मेरापने का भाव (शरीर में) आदि सारे कर्म बंध ही कराते है। मिथ्यात्व (शरीर को 'मैं' मानना) ही सबसे बड़ा परिग्रह है, यही कषायों को बढ़ावा देता है और यह आत्मा का भाव नहीं है फिर भी अपने पास रखा हुआ है। शरीर यह तो धर्मशाला है, जेल है, कर्म यह हथकड़ी है और मित्र परिवार वाले इसके पहरेदार है जो हमें बंधनों से छुटने नहीं देते और हम मोह माया जाल में फंसे रहने में आनंद या सुख मानते है। वैसे प्रतिक्रमण किसका करना? भूल का स्वीकार करना, उसका पश्चाताप करना और भूल फिर से नहीं करने का संकल्प करना यही प्रतिक्रमण कहलाता है। भूल कौन सी? सुदेव-सुगुरू-सुधर्म का वास्तविक स्वरूप नहीं समझा, नव तत्वों का वास्तविक स्वरूप नहीं समझा, सम्यग् का स्वरूप नहीं समझा, शरीर की एकत्वता, पुत्र-परिवार का ममत्व, व्यापार-धंधे का एकत्व, मैंने किया यह कर्ता पना, मैं भोगता हूं यह भोक्तापना आदि भूलों को नहीं समझा। हीरा, सोना आदि पृथ्वीकाय मुर्दो को मानना या वस्तु छोड़ने से भी उनके विकल्पों का ही त्याग करना जरूरी है 'गया वो मेरा नहीं, मेरा कभी जाता नहीं' यह प्रतीति हमेशा रहनी चाहिये।

यहां अपनी स्वयं की आत्मा से 'स्व' से माफी मांगनी है, इसके एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक जीवों के जन्म-मरण में घुमाया, वहां जो कष्ट भुगताया उसकी माफी मांगनी है। हर रोज जीवन में 'आत्मा' के ऊपर जो नये कर्म कषायों के माध्यम से बांध रहे है उसकी माफी मांगनी है यह कार्य इस पुद्‌गल द्रव्य से जीव द्रव्य को करनी है। रात्री भोजन, जमीनकंद आदि खाना तो छोड़ना ही है परन्तु मुख्य तो खाने का भाव ही छोड़ना है। भगवान की पूजा, पाठ भी कुछ मांगने के लिये, इच्छा पूर्ति के लिये करते हैं, उसमें भी हिंसा होती है क्योंकि वीतरागता का सच्चा स्वरूप समझा नहीं, वीतराग के सिवाय यह सिर कहीं नहीं झुके यह श्रद्धा नहीं रखी, देह को ही 'मैं' माना, अपना मानकर उससे सारे संबंध अपने माने इनका प्रतिक्रमण करना है। सिर्फ इंद्रियों द्वारा कोई कार्य करने से या भोगने से कोई कर्म बंध नहीं होता, इन्द्रियों से तो वस्तु को जानने का काम होता है परन्तु उससे जो भाव विकृत होता है उससे कर्मबंध होता है। इसलिये सम्यग् दृष्टि जीव को संसार में रहते हुए भी कर्मबंध नहीं है ऐसा कहा जाता है क्योंकि ब्राह्य कार्य करते हुए भी उनकी दृष्टि 'स्व' की ओर याने अपने आत्मा की ओर होती है, कार्य में कर्ता-भोक्ता भाव नहीं होता। पर का ज्ञान ही हमारे भावों को विकृत कर सकता है, इसलिये भावों को पलटना ही मुख्य हेतुं है।

शरीर, यह हाड़ मांस का पुतला, इसका ही हमेशा ध्यान रखकर कार्य किये, अब दृष्टि को 'स्व' की ओर घुमाकर शुद्धात्मा का कार्य करना है। जीव (आत्मा) और अजीव की वास्तविक पहचान नहीं की इसका प्रतिक्रमण करके आप अपने आत्मा में ही रमने का काम करके प्रायश्चित करना है। आत्मा इन शरीरों के लिये बहुत समर्पित कर दिया अब इस शरीर को आत्मा के लिये समर्पित करना है। शरीर के मोह-भाव से आत्मा मलीन हो रहा है, पुण्य-पाप में धर्म माना, इनको अलग माना,

दोनों बंध रूप नहीं माना इसका हमें प्रतिक्रमण करना है। पाप तो छोड़ना ही है, वह तो लोहे की जंजीर है परन्तु शुद्ध धर्म में जाने के लिये पुण्य को भी धर्म मानना (दान, व्रत, तप, जप, स्वाध्याय आदि) यह सोने की जंजीर का काम करता है परन्तु शुद्ध धर्म (आत्मा तत्व) में जब तक नहीं जावें तब तक शुभ धर्म (पुण्य धर्म) को नहीं छोड़ना है।

वीतराग भाव, उदासीनता, वैराग्य, आदि भाव निराशा के भाव लगते थे, अज्ञानी व राग-द्वेष वालों को ज्ञानी माना, घर जायदाद-परिवार आदि ब्राह्य परिग्रह को, पर को अपनी संपत्ति माना-विपत्ति नहीं, साधु-संत, ज्ञानी आदि को बिचारा माना, कहा- अतिन्द्रिय आनंद का धनी नहीं माना- संवर स्वरूप वितरागी नहीं माना-अनंत सुखी नहीं माना आदि का प्रतिक्रमण करना है। शरीर के बाह्य तप-त्याग-व्रत आदि को ही तप माना, पुद्‌गल की क्रिया से अपनी आप को धर्मात्मा माना जिससे 'तपेश्वरी सो राजेश्वरी', राजेश्वरी सो नरकेश्वरी, बात पर आत्मा को चलाया इसका प्रतिक्रमण हमें करना है। मैंने किसी को उपदेश दिया या सिखाया या सच्चा धर्म बताकर सही मार्ग बताया आदि माना, कर्ता बुद्धि मानी यह अहंकार भाव पैदा किया इसका प्रतिक्रमण करना। यह सारा प्रतिक्रमण भी व्यवहार से बाह्यभाव ही है, सिर्फ थेयरी का ही भाग है जिससे हमें यह पता चले कि जिसका हमने प्रतिक्रमण किया है वह सारी बातें हेय याने छोड़ने योग्य है, जिसका हमें रोज चिंतन-मनन करना है। वास्तविक तो भूतकाल के सर्व पापों को भूलकर सिर्फ ज्ञान का ही अनुभव करना, ज्ञान स्वभाव में रहने की कोशिश करना यही सही प्रतिक्रमण होगा। चलते-फि रते, उठ्ते-बैठते, खाते-पीते-सोते हर वक्त ज्ञायक का याने 'स्व' का, शुद्धात्मा का ही भान रहे, अपने-आप में लीन रहे, निज गुणों में ही रमता रहे वही वास्तविक प्रतिक्रमण कहलायेगा। 'स्व' भाव को जानने से सभी राग-द्वेष कम होते जायेंगे, वीतरागता बढ्ती जायेगी और प्रतिक्रमण से अप्रतिक्रमण की ओर बढ्ते जायेंगे, राग-द्वेष के भाव करना यही सबसे बड़ा अभक्ष है। स्व-पर का भेद नहीं करना, शरीर में 'मैं' पना, राग करना ही अभक्ष है और ऐसे अभक्ष का सेवन किया उसका हमें प्रतिक्रमण करना है, उसकी आलोचना, निंदा-गर्हा करनी है, इनसे कब छुटू इसका सच्चा प्रायश्चित करना है और अंत में इन राग-द्वेष के, 'मैं' 'मेरा' पने के भाव में वापस ना पडू, इनको बार-बार ना दोहराने का प्रयत्न करूं ऐसा प्रत्याख्यान करना है।

जैसे ही किसी के प्रति गलती या दोष हो जाय तो उसी वक्त करने की प्रतिक्रमण विधि। प्रत्यक्ष सिद्ध भगवान की साक्षी में, देहधारी (जिसके प्रति दोष हुआ हो, उस व्यक्ति का नाम) के मन-वचन-काया के योग, भावकर्म-द्रव्यकर्म-नोकर्म से भिन्न ऐसे है शुद्धात्मा भगवान, आपकी साक्षी में, आज दिन तक मुझसे जो-जो दोष हुए है, उसके लिये क्षमा मांगता हूं। हृदय पूर्वक बहुत प्रायश्चित करता हूं। मुझे क्षमा करें और फिर से ऐसे दोष कभी भी नहीं करूं, ऐसा दृढ़ निश्चय करता हूं। उसके लिये मुझे परम शक्ति दीजिए। (क्रोध-मान-माया-लोभ, विषय-विकार, कषाय आदि से किसी को भी दुःख पहुंचाया हो, उस दोषों को मन में याद करें।) हर रोज रात को सोते समय भी श्री सीमंधर स्वामी के मुखारविंद का निदिध्यासन करते हुए (फोटो सामने दिखाई दे ऐसे) 'मैं' शुद्धात्मा हूं....' खुद के ही कानों में सुनाई दे, उस प्रकार बोलते बोलते सो जायें।

मगध के राजा सर्वदमन के राजगुरू की नियुक्ति अपेक्षित थी। यह स्थान बहुत समय से रिक्त पड़ा था। एक दिन महापंडित दीर्घलोम उधर से निकले। राजा से भेंट-अभिवादन के उपरांत महापंडित ने कहा- राजगुरू के स्थान आपने रिक्त छोड़ा हुआ है। उचित समझे तो उस स्थान पर मुझे नियुक्त कर दें। राजा बहुत प्रसन्न हुए साथ ही एक निवेदन भी किया, आपने जो ग्रंथ पढ़े है कृपया एक बार सबको फिर पढ़ लें। इतना कष्ट करने के उपरांत आपकी नियुक्ति होगी। जब तक आप आवेंगे नहीं, यह स्थान रिक्त ही पड़ा रहेगा। विद्वान अपनी कुटी में वापस चले गये और सब ग्रंथ ध्यानपूर्वक पढ़ने लगे जब पढ़ लिये तो फिर नियुक्ति का आवेदन लेकर राजदरबार में उपस्थित हुए। राजा ने अबकी बार फिर और भी अधिक नम्रतापूर्वक एक बार फिर उन ग्रंथों को पढ़ लेने के लिये कहा। दीर्घलोम असमंजस पूर्वक फिर पढ़ने के लिये चल दिये। नियत अवधि बीत गई, पर पंडित वापस न लौटे। तब राजा स्वयं पहुंचे और न आने का कारण जानना चाहा। पंडित ने कहा-गुरू अंतरात्मा में रहता है। बाहर के गुरू कामचलाऊ भर होते है। आप अपने अंदर के गुरू से परामर्श लिया करें। राजा ने नम्रतापूर्वक पंडितजी को साथ ले लिया और उन्हें राजगुरू के स्थान पर नियुक्त कर दिया। बोले-अब आपने शास्त्रों का सार जान लिया, इसलिये आप उस स्थान को सुशोभित करें। धर्म का अर्थ मात्र कथावाचन-कर्मकांड भर समझ लेना नहीं, अपितु उसके अनुरूप आचरण करना भी है। दिव्यदर्शी ऋषियों ने इसी कारण आदर्शवादी चरित्रनिष्ठा को धर्म का पर्यायवाची माना है।

पूर्ण स्वतंत्रता : आठ कर्मों से मुक्ति, गुरू महिमा

✻ रविलाल वोरा, मुंबई

किसी को बंधन नहीं करना चाहिये। हमें स्वतंत्र रहने की इच्छा है परन्तु जब तक हम सिद्ध भगवंत नहीं बनते तब तक हम बंधन में पड़े रहेंगे। हमें स्वतंत्रता के स्वरूप को जानना चाहिये। प्रभु की देशना हमें आत्म स्वतंत्रता प्रदान करती है। भारतीय संस्कृति का मूल स्वतंत्र बने परन्तु हम स्वच्छन्दी न बनें। स्वच्छंद का अर्थ स्व इच्छा। इसके विपरीत स्वतंत्र का भाव सबको नियंत्रण में रहना अर्थात अपनी आत्मा के नियंत्रण में रहना।

पाश्चात्य संस्कृति आत्मा की खोज कर रही है। जब भारतीय संस्कृति में आत्मा की अनुभूति की है। आत्म साक्षात्कार किया है। भारत अहिंसा प्रधान देश है। सहअस्तित्व को स्वीकार करता है। आजकल हम सब प्रदूषण के शिकार बन चुके है। हम प्रदूषण को ब्राह्य कारणों को ढूंढते है। जैसेकि वृक्षों का काटना, उद्योगों का विस्तार, रासायनिक सामग्रियों का उपयोग और प्रयोग बगैर हम हिंसा की भावना के कारण हमारा सह अस्तित्व का भाव क्रूर हो जाता है और संघर्ष की स्थिति पैदा हो जाती है। हम आज भारतीय संस्कृति को भूले जा रहे है और पाश्चात्य संस्कृति के कारण प्रदूषण का भोग बन रहे है। आजकल विग्रह की बातें हो रही है, क्यों? क्योंकि महत्वकांक्षा असहिष्णुता और आगमवाणी के अभाव के कारण विग्रह की बातें हो रही है जो हमें हमारे नाश की भविष्यवाणी कहती है। भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति में क्या अंतर है? पाश्चात्य संस्कृति के मुताबिक वह ब्राह्य व्यक्तित्व को देखते है और भारतीय संस्कृति अन्तर्दुष्टा है।

गुरू निष्ठा बहुत महत्वपूर्ण वस्तु है। आज इसका व्यापक रूप से अभाव दिखाई देता है। यह स्थिति बड़ी सीमा तक आध्यात्मिक, वैचारिक क्षेत्र में प्रदूषण उत्पन्न करने के लिये हम जिम्मेदार है। आध्यात्मिक और वैचारिक क्षेत्रों में प्रदूषण अब धार्मिक क्षेत्र को प्रदूषित करता है। गुरू निष्ठा इससे प्रभावित होती है। गुरू की महिमा अपरंपार है। उसे भगवान से भी बड़ा बताया गया है। गुरू की कृपा का आश्रय लेकर ज्ञान रूपी सत्य को जानने के लिये प्रयत्न करो। बिना भाव से गुरू की सेवा करो जिससे वह तुम्हारे ह्रदय के अंधकार को निकाल कर ज्ञान का प्रकाश भर दे। ज्ञानी कहते है गुरू के बिना किसी को मुक्ति नहीं मिलती जब तक गुरू की कृपा दृष्टि नहीं मिलती तब तक सब व्यर्थ है।

एक बात समझ लेने की है कि यदि सामाजिक जीवन में प्रदूषण समाप्त हो जाता है, धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में भी उसका सफाया हो जायेगा और यदि इस क्षेत्र में प्रदूषण समाप्त होता है तो प्राकृतिक प्रदूषण के लिये कोई स्थान नहीं रहेगा। आज जो वैचारिक शून्यता सम्पन्न हो गई है यही उन सभी समस्याओं का मूल कारण है। गुरू का नियंत्रण, गुरूवाणी श्रवण और गुरू का सानिध्य एक मनोवैज्ञानिक स्थिति का निर्माण करेंगे। इसमें स्वतंत्रता का भाव रूप ग्रहण कर सकेगा जो प्रत्येक प्राणी की रक्षा करता हुआ एवं संतुलित सापेक्ष संबंधों से जोड़ देगा जिसमें स्वतंत्रता और पराधिनता शब्द स्वयं की बेईमानी हो जायेगी ऐसी स्थिति का निर्माण हम गुरू कृपा से करें, यह आज की प्राथमिक आवश्यकता है।

✻ संत इब्राहीम ने ईश्वर भक्ति के लिये घर छोड़ दिया और वे भिक्षाटन पर निर्वाह करके साधनारत रहने लगे। किसी किसान के यहां वे भिक्षा मान रहे थे, तो उसने रोककर कहा- आप जवान है, परिश्रमपूर्वक निर्वाह करें। बचे समय में साधना करें। समर्थ का भिक्षा मांगना उचित नहीं। इब्राहीम को बात जंच गई। उन्होंने इस सद्उपदेशकर्त्ता का एहसान माना और पूछा- तो फिर इतनी कृपा और करें कि मुझे काम दिला दें, ताकि गुजारे के संबंध में निश्चिंत रहकर भजन करता रह सकूं। किसान का एक आम का बगीचा था। उसकी रखवाली का काम सौंप दिया साथ ही निर्वाह का प्रबंध कर दिया। दोनों को सुविधा रही। बहुत दिन बाद आम की फसल के दिनों में किसान बगीचे में पहुंचा और मीठे आम तोड़कर लाने के लिये कहा। इब्राहीम ने बड़े और पके फल लाकर सामने रख दिये। वे सभी खट्टे थे। नाराजी का भाव दिखाते हुए किसान ने पूछा- इतने दिन यहां रहते हो गए, इस पर भी ये नहीं देखा कि कौन से पेड़ खट्टे और कौन मीठे फलों का है? इब्राहीम ने नम्रतापूर्वक कहा- मैंने कभी किसी पेड़ का फल नहीं चखा। बिना आपकी आज्ञा के चोरी करके मैं क्यों चखता? किसान इस रखवाले की ईमानदारी, वफादारी पर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा- आप पूरे समय भजन करें। निर्वाह मिलता रहेगा। रखवाला दूसरा रख लेंगे। इब्राहीम दूसरे दिन बड़े सबेरे ही उठकर अन्यत्र चले गये। चिट्ठी रख गए। आपने आरंभ में कहा था, बिना परिश्रम के नहीं खाना चाहिये। आपकी उस अनुशासन भरी शिक्षा से ही मेरी श्रद्धा बढ़ी थी। अब तो आप ठीक उल्टा उपदेश करने लगे। मुफ्त का खाने लगूं, यह कैसे होगा? आपकी बदली हुई शिक्षा को देखकर मैंने चला जाना ही उचित समझा। संस्कारों की प्रबलता सही मार्ग पर चलने वाले को कभी दिग्भ्रांत नहीं कर सकती।

वर्ग पहेली क्रमांक-264

इस यंत्र के अक्षरों से बनाएं-

अमावस्या की अंधेरी रात के गगनांगण में तारों के साथ शत्रुंजय के 21 नाम छिप गये हैं। आप इन्हें ढूंढ निकाले। एक अक्षर का दूसरी बार भी प्रयोग कर सकते हैं।

*	*	म	*	त	*	*
*	सु	ज	भ	शा	श	*
द्व	य	रा	र	अ	हा	मो
*	श्व	व	*	श्वा	कं	*
क	सि	ला	गि	द्र	ब	द
*	रि	च	न	हे	नं	*
*	*	वि	*	यं	*	*

प्राचीन परम्पराओं की तुलना में विवेकशीलता का अधिक महत्वपूर्ण प्रतिपादन करने वाले संत सुकरात को वहां के कानून से मृत्युदंड की सजा दी गई।

सुकरात के शिष्य अपने गुरू के प्राण बचाने चाहते थे। उन्होंने जेल से भाग निकलने के लिए एक सुनिश्चित योजना बनाई और उसके लिये सारा प्रबंध ठीक कर लिया।

प्रसन्नता भरा समाचार देने और योजना समझाने को उनका एक शिष्य जेल में पहुंचा और सारी व्यवस्था उन्हें कह सुनाई। शिष्य को आशा थी कि प्राणरक्षा का प्रबंध देखकर उनके गुरू प्रसन्नता अनुभव करेंगे।

सुकरात ने ध्यानपूर्वक सारी बात सुनी और दुःखी होकर कहा- मेरे शरीर की अपेक्षा मेरा आदर्श श्रेष्ठ है। मैं मर जाऊं और मेरा आदर्श जीवित रहे, वही उत्तम है, किंतु यदि आदर्शों को खोकर जीवित रह सका तो वह मृत्यु से भी अधिक कष्टकारक होगा। न तो मैं सहज विश्वासी जेल कर्मचारियों को धोखा देकर उनके लिये विपत्ति का कारण बनूंगा और न जिस देश की प्रजा हूं, उनके कानूनों का उल्लंघन करूंगा। कर्त्तव्य मुझे प्राणों से अधिक प्रिय है। योजना रद्द करनी पड़ी। सुकरात ने हंसते हुए विष का प्याला पिया और मृत्यु का संतोषपूर्वक आलिंगन करते हुए कहा- हर भले आदमी के लिये यही उचित है कि वह विपत्ति आने पर भी कर्त्तव्य-धर्म से विचलित न हो।

वर्ग पहेली क्रमांक-263 का परिणाम

श्री पार्श्वनाथ प्रभु के 10 गणधरः-

1- शुभदत्त 2- आर्दघोष 3- वशिष्ठ
4- आर्यब्रह्म 5- सोम 6- आर्यश्रीधर
7- भद्रयश 8- वारिषेण 9- जय 10-विजय

श्री पार्श्वनाथ प्रभु का सांसारिक परिवार :-

1- अश्वसेन-पिता 2- वामादेवी- माता
3- प्रभावती-पत्नि 4- प्रसेनजिन-ससुर

सज्जनता- *महाराजा रणजीतसिंह अपने परिवार के साथ एक वृक्ष के नीचे छाया में बैठे हुए थे। थोड़ी ही दूरी पर एक बुढ़िया रहती थी। उसके पास भोजन की कोई सामग्री नहीं थी। वह भूखी थी। वृक्ष पर लगे आम के फल को देखकर उसने एक पत्थर फेंका। एक आम नीचे गिर पड़ा। पुनः दूसरा पत्थर फेंका। निशाना चूक जाने से वह पत्थर महाराजा को लगा। चोट लगते ही पास में खड़े सैनिक दौड़े और उस बुढ़िया को पकड़ लाए। बुढ़िया काँप रही थी। महाराजा ने बुढ़िया को पत्थर फेंकने का कारण पूछा। बुढ़िया ने अपनी परिस्थिति बतला दी। तत्काल राजा ने मंत्री को आदेश दिया- 'इसके घर पर पर्याप्त अनाज, वस्त्र एवं खाद्य सामग्री पहुंचा दी जाय। महाराजा के इस अजीब न्याय को सुनकर मंत्री ने कहा- जहांपनाह! अपराधी को दण्ड के बजाय इनाम? राजा ने कहा- क्या मैं उस वृक्ष से भी हीन हूं? वह वृक्ष पत्थर फेंकने वाले को भी मीठा फल देता है तो फिर मैं उसे दण्ड कैसे दूं? यह सामने खड़ा वृक्ष भी हमें अपकारी के ऊपर उपकार करने की मूक प्रेरणा देता है। राजा के हृदय की इस विशालता को देख मंत्री का मस्तक शर्म से नीचे झुक गया।*

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशःतीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रूपये 31/-, 21/-, 11/-एम.ओ.भेजें जावेंगे। सही उत्तर वाले नाम हम छांपेगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-265

✲ पंन्यास प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

हाँ या ना में उत्तर दीजिये-

1- खरतरगच्छ की उत्पत्ति तपागच्छ से पूर्व हुई।
2- केवली आहार करते है।
3- निरूपक्रमी आयु बीच में टूट सकती है।
4- नरक में सभी मिथ्यात्वी ही होते हैं।
5- सिद्ध भगवंत को मन होता है।
6- लोक से अलोक बड़ा है।
7- सोलह सतियां मोक्ष में गयी।
8- लिखने की कला आदिनाथ प्रभु ने सिखाई।
9- साधुओं को आर्तध्यान नहीं होता है।
10-केवली स्वप्न देखते है।

ब्राह्मण पुत्र ब्रह्मचर्य आश्रम की अवधि पूरी करके घर लौटा। आँगन में आकर माता के चरण स्वर्श किये और पूछा-पिताजी कहां है? उन्होंने अंदर की ओर संकेत से ही बता दिया। ब्रह्मचारी अंदर गया। पीछे का दरवाजा खुला था, पर पिताजी का कहीं पता न लगा। परिवार वाले चिंतित हुए। गाँववालों ने भी खोज-बीन की। पूरा वर्ष बीतने पर पिताजी घर लौट आए। पुत्र ने पूछा- 'आप कहां चले गये थे?' पिता ने कहा- जब तुम ब्रह्मचर्य आश्रम से लौटकर अपनी माँ के चरण स्पर्श कर रहे थे, उस समय मैं तुम्हें देख रहा था। मैंने तपस्या से जगमगाते हुए तुम्हारे दीप्त ललाट को देखा। तेजस्वी मुखमंडल अपनी आभा बिखेर रहा था। उसी क्षण मेरी आत्मा ने जब अपने को टटोला तो पाया कि मैं तुम्हारा प्रणाम लेने योग्य नहीं।

इतने वर्षों से सांसारिक संघर्ष में रत रहने के कारण मेरा चरित्र मलीन हो गया था, अतः विलंब करना मैंने उचित नहीं समझा और पीछे के द्वार से तपस्या हेतु मैं वनगामी हो गया। एक तपस्वी से प्रणाम कराने का पात्रत्व जब मुझमें आ गया तो मैं घर लौट आया। वर्ष भर में मेरी तपस्या पूरी हुई। अब तुम सहर्ष मेरे चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हो। प्रणाम लेने का अधिकार उसे है, जो कि प्रणाम करने वाले से अधिक योग्य हो।

वर्गपहेली क्रमांक-264 के विजेता

विजेता :-

1-श्रीमती शान्ता बापना, इन्दौर (म.प्र.) - प्रथम
2-शान्ता पोरवाल, उज्जैन (म.प्र.) - द्वितीय
3-प्रिती हिंगड़, नरवर (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे-

स्नेहलता जैन, मंदसौर, प्रीति जैन, रतलाम, जवाहरलाल जैन, उज्जैन, सुधा धारिवाल, देवास, श्रीमती प्रभा जैन, देवास, सुधा लोढ़ा, उज्जैन, प्रियांशी जैन, नरवर, रोहितकुमार सकलेचा, नलखेड़ा।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-264 के परिणाम

सही उत्तर-

1- सुकोशल मुनि, 2- कपिल केवली, 3- चंद्धरूद्धाचार्य के शिष्य, 4- संधक मुनि के 500 शिष्य, 5- कुर्मापुत्र, 6- वल्कल गिरी, 7-अर्णिका पुत्राचार्य, 8- प्रसन्नचंद्र मुनि 9- पुष्प चुला साध्वी, 10- मरूदेवी माता।

विजेता :-

1-शान्ता पोरवाल, उज्जैन (म.प्र.) - प्रथम
2-प्रियांशी जैन, नरवर (म.प्र.) - द्वितीय
3-प्रिती जैन, रतलाम (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे-

प्रीति हिंगड़, नरवर, विमला कोठारी, नीमच

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डाले।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-12-2016 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-,31/-,21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी।

- सम्पादक

✽ अनु दीपक जैन, जयपुर, मो.नं. 9782499999

आगमोध्दारक भविष्य फल दिसम्बर-2016

मेष :- आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, किसी प्रकार कार्य में परिवर्तन शुभ फलदायक रहेगा, दूर स्थानों से शुभ समाचार प्राप्त होगा, परिवार में कुछ तनाव की स्थिति रह सकती है, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर समय रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि- 2,9,16,20,27 ।

वृषभ :- आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, गत समय से चली आ रही व्यापारिक समस्याओं का समाधान निकलेगा, अधिकारी वर्ग का बेहतर सहयोग प्राप्त होगा, माह की उत्तरार्द्ध में महत्वपूर्ण निर्णय सोच विचार करके लें।

मिथुनः-आपके लिये यह माह सामान्य फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ हेतु परिश्रम करना होगा, तनाव की स्थिति उभर सकती है, व्यय की अधिकता रहेगी, परिवार में किसी प्रकार का आयोजन संभावित है, विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम का समय है।

महत्वपूर्ण तिथि- 4,9,12,20, 26 ।

कर्कः- आपके लिये यह समय शुभ रहेगा, व्यापारिक लाभ में वृद्धि होगी, कार्य में आ रही समस्त बाधाएं दूर होगी, मित्रजनों का बेहतर सहयोग प्राप्त होगा, सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में रूचि रहेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर समय है।

महत्वपूर्ण तिथि- 3,9,15,17,18,24,31 ।

सिंहः-आपके लिये यह समय शुभ रहेगा, कार्य क्षेत्र में बेहतर सफलता प्राप्त होगी, रूके हुए पूर्ण होंगे, पारावारिक वातावरण बेहतर रहेगा, यात्रादि का योग बन सकता है, विद्यार्थी वर्ग को रोजगार के अवसर मिलेंगे।

महत्वपूर्ण तिथि- 5,8,14,19,22,30 ।

कन्याः-आपके लिये यह समय मिश्रित फलदायक रहेगा, मित्रों व सहयोगियों के सहयोग से व्यापारिक लाभ में वृद्धि होगी, पदोन्नति की प्रबल संभावना रहेगी, परिवार में उत्साह का वातावरण रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये शुभ परिणाम प्राप्ति का समय रहेगा। **महत्वपूर्ण तिथि- 4,9,12,16,21,24,29 ।**

तुलाः-आपके लिये यह माह सामान्य फलदायक रहेगा, व्यापार में लाभ प्राप्ति हेतु परिश्रम करना होगा, अधिकारी वर्ग से कुछ मतभेद संभावित है, बिना सोचे विचारे कोई भी निर्णय न करें, विद्यार्थी वर्ग में परिणामों को लेकर निराशा रहेगी।

महत्वपूर्ण तिथि- 2,8,15,22,29 ।

वृश्चिकः- आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, कार्य क्षेत्र में बेहतर परिस्थितियां बनेगी, अचानक लाभ की स्थिति बन सकती है, यात्रादि से बेहतर लाभ रहेगा, सामाजिक व धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर परिणाम रहेंगे।

महत्वपूर्ण तिथि- 1,4,7,9,12,20 ।

धनुः-आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापार वृद्धि हेतु प्रयास करने होंगे, किये गये परिश्रम के अनुसार फल मिलने से मन उत्साहित रहेगा, माह के उत्तरार्द्ध में कुछ तनाव संभावित है, विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम का समय रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि- 5,10,12,19 ।

मकरः-आपके लिये माह शुभ फलदायक रहेगा, व्यापार में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन संभावित है, अधिकारी वर्ग का बेहतर सहयोग मनोबल में वृद्धि करेगा, परिवार में कोई विशेष आयोजन संभावित है।

महत्वपूर्ण तिथि- 1,9,16,24,31 ।

कुम्भ :- आपके लिये माह शुभ फलदायक रहेगा, कार्य क्षेत्र में पदोन्नति की प्रबल संभावना रहेगी, धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र में रूचि रहेगी, किसी विशेष कार्य पर ध्यान रहेगा, विद्यार्थी वर्ग को महत्वपूर्ण सफलता मिलेगी।

महत्वपूर्ण तिथि- 4,8,14,20,25 ।

मीनः-आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यवसाय में आशानुसार फल प्राप्ति होगी, सामाजिक क्षेत्र में वर्चस्व वृद्धि होगी, पारिवारिक कारणों से व्यय की अधिकता रहेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर समय है।

महत्वपूर्ण तिथि- 3,7,12,18,22,27,31 ।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी जी की निश्रा में उपधान तप की पूर्णाहुति हुई

- उपधान तप में 200 आराधक से आगम मंदिर में श्रमण महोत्सव का माहौल बना।
- 18 जनवरी को श्री पंकजभाई गांधी दीक्षित होंगे।
- अंजन प्रतिष्ठा हेतु 2 फरवरी 2017 को श्री जीरावला पधारेंगे।
- फरवरी के अंतिम सप्ताह में अहमदाबाद में शासन प्रभावक कार्यक्रम होगा।
- फरवरी के बाद मालवा विहार की संभावना।

शंखेश्वर- पूज्यपाद आचार्य गुरूदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के देह त्यागने के बाद अपने जीवन का सबसे यशस्वी और गरिमामय चार्तुमास श्री शंखेश्वर महातीर्थ की पुण्य भूमि पर स्थित आगम मंदिर में दादा चरम तीर्थ का परमात्मा श्री प्रभुवीर की छत्रछाया में कर युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. ने शासन प्रभावना में चार चांद लगा दिये। यही नहीं अनेक विशिष्ठ आयोजनों के साथ श्रावक से श्रमण बनने के अनुष्ठान को उपधान तप के आयोजन के साथ 18 जनवरी 2017 को मुंबई के सुश्रावक श्री पंकजभाई गांधी का संयमोत्सव भी परमात्मा के शासन की अभिवृद्धि में सहायक बनेगा। पूज्यपाद गुरूदेव मालव भूषण जैनाचार्य श्री रहते आपश्री गुरूदेवश्री की 16 दिवसीय मौन सूरीमंत्राराधना की उत्तम व्यवस्था का भार संभालते आये है। अब आपश्री इस चार्तुमास में प्रथम बार सूरीमंत्राराधना का अनुष्ठान मौन साधना की। इन सब धर्म शासन प्रभावना के कार्यों में बढ़े योगदान के रूप में शंखेश्वर महातीर्थ का चार्तुमास यादगार धर्मानुष्ठान के रूप में जाना जाता रहेगा। मणियार श्री वेलजीभाई माणकचंद्र परिवार के द्वारा भी गुरू भक्ति ऋण को उतारने के लिये कराये गये अभूतपूर्व चार्तुमास के रूप में याद किया जाता रहेगा। अभी उपधान तप की माल और 18 जनवरी 2017 को श्री पंकजभाई गांधी का दीक्षा महोत्सव प्रसंग बाकी है।

युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. 2 फरवरी 2017 को अजंन प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये जीरावला पधारेंगे। इसके बाद अहमदाबाद तथा अन्य स्थानों पर धर्मानुष्ठान करते हुए मालवा की ओर विहार होगा।

बैंगलोर में पंन्यास प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी एवं वैराग्यरत्न सागरजी की निश्रा में उपधान तप

बैंगलोर- यहां के श्री आदिनाथ जैन श्वेतांबर श्री संघ चित्रपेठ तथा श्री संभवनाथ जैन श्री संघ वी.वी.पुरम् जयनगर में चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य पंन्यास प्रवर श्री मृदुरत्न सागरजी म.सा. तथा पंन्यास श्री वैराग्यरत्न सागरजी म.सा.,साध्वी श्री हेमेन्द्रश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की महत्वपूर्ण तपाराधना उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है।

उपधान तप का प्रथम प्रवेश मुहूर्त 11 अक्टूबर को दूसरा 13 अक्टूबर को हुआ। 27 नवंबर को उपधान तप निमित्त भव्य वरघोड़ आयोजित हुआ तथा उपधान मालरोपण 28 नवंबर को हुई। उपधान तप की सफलता हेतु तैयारियां चल रही है।

गुरू का हाथ पकड़कर चलो।
लोगों के पैर पकड़ने
की नौबत नहीं आयेगी।।

शासनरत्न श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के आगामी कार्यक्रम

✻ 2, 3,4 दिसंबर 2016 : जीवित महोत्सव एवं पूजन गुलबर्गा (कर्ना.)
✻ 5 दिसंबर 2016 : वार्षिक स्तवन सिद्ध 18 अभिषेक, 62 जिनालय मंडचल (आं.प्र.)
✻ 7, 8,9 दिसंबर 2016 : जिनालय प्रतिष्ठा महोत्सव राऊकेला (उड़ीसा)
✻ 15 दिसंबर 2016 : सक्रांति महोत्सव, महावीर स्वामी कर्नूल (आं.प्र.)
✻ 25 दिसंबर 2016 : 108 जोड़े से नाकोड़ा पार्श्वनाथ भैरव पूजन, उज्जैन (म.प्र.)
✻ 19, 20, 21 जनवरी 2017 : अंजनशलाका प्रतिष्ठा तंडलम्, चैन्नई (त.ना.)
✻ 21, 22, 23 जनवरी 2017 : योगीराज गुरू मंदिर शीलान्यास समारोह सूरत (गुज.)

पू.जैनाचार्य अशोकसागर सूरीजी के शिष्य पंन्यास श्री सोमचंद्र सागरजी को 28 नवंबर को आचार्य पद पर आरूढ़ किया गया

पालीताना- जैनाचार्य श्री अशोक सागर सूरीश्वरजी म.सा.के सुशिष्य पूज्य पंन्यास प्रवर श्री सोमचंद्रसागरजी म.सा. को आचार्य पद पर विराजित किया गया। पालीताना स्थित जम्बुद्वीप परिसर में हुए आचार्य पद प्रदान महोत्सव में पालीताना में विराजित सभी आचार्य भगवंतों के साथ सैकड़ों की संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों का आगमन इस कार्यक्रम में हुआ। सैकड़ें की संख्या में गुरूभक्तों धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही। अत्यधिक उत्साह भरे वातावरण में पूज्य पंन्यास प्रवरजी का पद प्रदान भी क्रिया करवाई गई। गुरू मित्र प्रदान किया गया। भव्य आपश्री आचार्यश्री सोमचंद्र सागर सूरीश्वरजी म.सा. के नाम से जाने जायेंगे। पंचान्हिका महोत्सव के अंतर्गत विविध महापूजन भी पढ़ाई गई।

श्री शांतिसूरी गुरूपाद पूजन सूरत में हुई

सूरत- गुरूश्री धर्म-तीर्थ विजय शांति सेवा संघ ट्रस्ट के तत्वावधान में सिटी लाईट रोड़ सूरत में श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ जिनालय, गुरू योगीराज श्री शांतिसूरीजी म.सा. के गुरूमंदिर तथा श्री नाकोड़ा भैरव मंदिर के भूमि शुद्धि के साथ गुरू महापूजन का आयोजन सिटी लाईट में 3 जुलाई को किया गया। शासन रत्न श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्ग दर्शन और प्रेरणा से यह आयोजन सम्पन्न हुआ।

कुणसी में प्रतिष्ठा महोत्सव मना

कुणसी- पूज्य आचार्य भगवंत श्री राजतिलक सूरीश्वरजी म.सा. की जन्म भूमि पर श्री मनमोहन पार्श्वनाथ प्रभु के गृहमंदिर की प्रतिष्ठा के साथ पेढ़ी तथा यात्रिक भवन का उद्‌घाटन विगत दिनों 5 से 7 जुलाई तक किया गया। पूज्यश्री के साथ साधु-साध्वी मंडल की निश्रा में 6 जुलाई को ॐ पुण्याहम्‌ ॐ पुण्याहम्‌ के उद्‌घोष के साथ प्रतिष्ठा का आयोजन सम्पन्न हुआ। आपश्री का चार्तुमास कर्नुर में था।

दादर में ऐतिहासिक चार्तुमास

दादर- श्री आगरतड़ शांतिनाथजी जैन मंदिर, दादर वेस्ट, मुंबई में इस वर्ष प.पू. शासन सम्राट आ.श्री विजयनेमी सूरीश्वरजी म.सा. के समुदायवर्ती, नवग्रह आराधना धाम गोधरा के प्रेरक विद्वान वक्ता पूज्य मुनिराज श्री भुवनहर्ष विजयजी म.सा., पूज्य मुनिश्री नवरत्न विजयजी म.सा. तथा प.पू.आ.श्री केसर सूरीश्वरजी म.सा.के समुदायवर्ती पूज्य साध्वी श्री श्रेयस्कर श्रीजी म.सा., पूज्य साध्वी श्री भाग्योदय श्रीजी म.सा. चार्तुमास विराजमान रहे।

पूज्यश्री के सानिध्य में यहां कई तपश्चर्या और विभिन्न अनुष्ठान हुए जिसमें बच्चों से लेकर वयोवृद्ध सभी जुड़े। सामुहिक सिद्धितप के 43 तपस्वी, मासक्षमण के 5 एवं अट्ठाई से लेकर 16 उपवास के 160 तपस्वियों ने भाग लिया जिसमें 50 बच्चे थे। समुह सांजी, मेहंदी रस्म, समुह पच्चक्खाण, सामुहिक वरघोड़ा, शाही बहुमान समारोह एवं राजाशाही पारणा के प्रोग्रामें में जन सैलाब उमड़ पड़ा। ये सभी कार्यक्रमों के लिये विशिष्ट हस्तिनापुरी नगरी बनाई गई थी। पर्युषण महापर्व के दिनों में प्रवचन यह नगरी में होने से आराधकों के लिये सानुकूलता हो गई। दादर के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ।

श्री संघ का उत्साह और उमंग देखते हुए पूज्य मुनिश्री ने आगामी वर्ष में सामुहिक वरसी तप कराने की प्रेरणा दी। ट्रस्ट मंडल ने बड़ेउत्साह से 'जय' बुलाई। लाभार्थिओं ने दान की गंगा बहाई। 20 मार्च 2017 से यहां पूज्य मुनिश्री भुवन हर्षविजयजी म.सा. के सानिध्य में सामुहिक वर्षीतप का आरम्भ होगा।

पूज्यपाद सागरजी महाराजा के संयम जीवन के125 वर्ष पर 360 व्याख्यान का प्रकाशन जम्बुद्वीप के द्वारा किया जायेगा

*** पूज्यपाद श्री अशोकसागरसूरीजी की सागरजी म.सा. की भेंट।**

*** पू.श्रीपूर्णचंद्रसागरसूरीजी द्वारा सागर समाधान का पुनः प्रकाशन होगा।**

*** पूज्य सागरचंदसागर सूरीजी द्वारा श्री सागरजी के ग्रंथों का सम्पादन होगा।**

पालीताना- जैन जगत को आगम का वारसा प्रदान करनेवाले बहुश्रुत ज्ञानी हम सबके परम उपकारी पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री सागरानंदसूरीजी महाराजा के संयम जीवन का यह 125 वां वर्ष तथा आचार्य पद प्राप्ति का 100 वां वर्ष है। यह पुण्य अवसर सागर समुदाय के श्रमण और श्रावक समुदाय के लिये गर्व और अभिमान का है। पूरे वर्षभर सागर समुदाय के द्वारा देशभर श्रीसंघों में अनेक विशिष्ठ कार्यक्रमों का आयोजन करने की योजना बनी है। पूज्यपाद आचार्यदेवेश श्री अशोकसागर सूरीजी म.सा. के द्वारा 360 व्याख्यान का प्रकाशन कर पूज्य श्री सागरजी म.सा. को भावांजलि अर्पित करने का निश्चय किया गया है साथ ही पूज्यपाद श्री सागरजी म.सा. के नवरचित ग्रंथों का सम्पादन का प्रकाशन करवाया जा रहा है। निश्चित रूप से पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री को श्रुतभक्ति की इससे अच्छी भेंट और क्या हो सकती है। आगमोद्धारक मासिक भी पूरे वर्षभर प्रत्येक अंक में प्रति माह पूज्य सागरजी महाराजा पर आलेख का प्रकाशन करेगा। इसी माह दिसंबर से यह आरंभ होने जा रहा है। आगमोद्धारक श्रीजी से संबंधित जानकारी का प्रकाशन भी किया जावेगा।

जिनालय की 51 वीं वर्षगांठ मनेगी

गढ़ सिवाना- यहां के श्री चौमुखी पार्श्वनाथ जिनालय की 51 वीं ध्वजारोहण तथा यहां नवनिर्मित होने वाले स्वर्ण जयंति भवन के भूमि पूजन तथा खाद मुहूर्त पर रत्नत्रयी महोत्सव का आयोजन 7 से 9 दिसंबर तक होगा। कार्यक्रम को पूज्य पंन्यास श्री पद्मभूषण विजयजी म.सा. आदि साधु-साध्वीजी निश्रा प्रदान करेंगे। इस अवसर पर 18 अभिषेक ध्वजारोहण तथा भूमि पूजन और खाद मुहूर्त सम्पन्न होगा।

*** जिन-जिन आत्माओं ने सद्गुरू की निश्रा बिना आगम पढ़े है, उनमें से कितनेक लोगों की बुद्धि में विकृति आई है। जैसे किसी भाषांतरकार ने लिख दिया कि मूल सूत्रों में भूल है।**

विकलांगों को कम्बल वितरण किया

पालीताना- यहां के बंनासकाठा धर्मशाला में 8 नवंबर को 200 से अधिक विकलांग (झियांश) लोगों को कम्बल वितरण किये गये। यह आयोजन गणिवर्य श्री विरागसागरजी म.सा.की निश्रा में साध्वीवर्या श्री सिद्धिपूर्णा श्रीजी म.सा. की प्रेरणा से किया गया।

बैंगलोर में नवान्हिका महोत्सव मनाया गया

बैंगलोर- चिकपेठ के श्री आदिनाथ जैन श्वेतांबर श्री संघ में चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य मालव भूषण, गुरूदेव आचार्यश्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के शिष्यरत्न पूज्य पंन्यास प्रवर श्री वैराग्यरत्नसागरजी म.सा., साध्वी श्री दिव्ययशा श्रीजी म.सा.की निश्रा में यहां मुनिश्री पार्श्वरत्नसागरजी के 500 आयंबिल तप एवं साध्वीश्री प्रशमप्रज्ञा श्रीजी म.सा. की 11 वीं पुण्यतिथि निमित्त नवान्हिका जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन किया गया। 8 से 16 अक्टूबर तक सम्पन्न हुए मंगल महोत्सव में विविध पूजन, श्री नमस्कार महामंत्र, श्री 108 पार्श्वनाथ, श्री भक्तामर, श्री सिद्धचक्र जैसी महापूजन पढ़ाई गई।

इसमें बहुत स्कोप है

एक पढ़ा लिखा नवयुवक गुरूदेव के पास वंदन के लिये गया। वंदन के बाद गुरू से उसने पूछा- गुरूजी मुझे क्या बनना चाहिये, किस क्षेत्र में मेरा अच्छा केरियर बन सकता है? गुरूजी बहुत ही सहज भाव से उत्तर दिया- भाई- ''इंसान बन जा इसमें बहुत स्कोप है और कोई कॉम्पिटिशन भी नहीं है।''

तृप्ति - प्रियंका ने श्री प्रभुवीर का मंगल श्रमण मार्ग स्वीकार कर संसार से मुंह मोड़ा

- * साध्वी श्रीमितपूर्णा एवं हितपूर्णा नाम पाया।
- * साध्वी श्री कलापूर्णा श्रीजी की सुशिष्या बनी।
- * पूज्य बंधु बेलड़ी आचार्य भगवंतों ने निश्रा एवं दीक्षा विधि सम्पन्न कराई।

इन्दौर- सम्पूर्ण इन्दौर और जैन जगत की निगाहें छजलानी परिवार की बहनों तृप्ति और प्रियंका के संयम मार्ग पर जाने पर लगी हुई थी, विगत 16 से 23 नवंबर तक गुमास्ता नगर की आगमोद्धारक वाटिका का नजारा अद्‌भूत संयम स्वीकार के दर्शन करा रहा था। विगत 10-15 दिनों से यह क्षेत्र जैन जगत के धर्मिष्टों के लिये मंगल बन गया था। पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री जिनचंद सागर सूरी तथा आचार्य श्री हेमचंदसागर सूरीजी महाराजा के साथ बड़ी संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की पावन निश्रा में तृप्ति एवं प्रियंका के संयम मार्ग ग्रहण करने के मंगल प्रसंग पर नवान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया। श्री नाकोड़ा पार्श्व भैरव जिनालय गुमास्ता नगर के समीप यह संयम महोत्सव आगमोद्धारक वाटिका में सम्पन्न हुआ। निरंतर 9 दिनों तक विविध धार्मिक आयोजनों, विभिन्न अतिथियों के आगमन और संयम की स्वास से मेहकता रहा। 22 नवंबर को संयम मार्गी बहनों का वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित हुआ। 23 नवंबर को प्रातःकाल शुभ लग्नांश वेला में आचार्य भगवंतों ने दीक्षा क्रिया विधि संगति की झरना तथा संयम उपकरणों की बोलियों के मध्य सम्पन्न करवाई। अब दोनों बहनें साध्वी तथा श्रीमितपूर्णा एवं हितपूर्णा कहलायेगी।

पादरू में पंन्यास श्री पद्‌मभूषणविजयजी को आचार्य पद प्रदान किया गया

पादरू- राजस्थान के इस नगर में नगर के शासन समर्पित रत्न पूज्य पंन्यास प्रवर श्री पद्‌मभूषणविजयजी म.सा. को अनेक विशिष्ट अतिथियों की मंगल उपस्थिति आचार्य पद प्रदान किया गया। पूज्य आचार्यश्री पुण्यरत्नविजयजी म.सा. आचार्य श्री यशोरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि साधु-साध्वी भगवंतों की पुण्य पावन निश्रा में पंचान्हिका महोत्सव के साथ यह आचार्य पद का कार्यक्रम गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। 15 से 20 नवंबर तक सम्पन्न हुए आयोजन में श्रीउसग्गहरम्,श्री गौतमस्वामी, श्री सिद्धचक्र आदि महापूजन पढ़ाई गई। 18 नवंबर को भव्य रथयात्रा का आयोजन किया गया। 19 नवंबर को पद प्रदान की क्रिया विशाल धर्मसभा में हुई। इस अवसर पर अनेक विशिष्ट अतिथि का आगमन हुआ।

✻ द्रव्य मन, संज्ञीपने में भाव मन के साथ रहता है। असंज्ञीपने में भाव विद्यमान रहता है।

प्रतिष्ठा महोत्सव पत्रिका का लोकार्पण प्रतिष्ठा 4 दिसंबर को सम्पन्न हुई

कापरड़- शिल्प एवं स्थापत्य में विशिष्ट भूतल से 95 फीट ऊंचा चौमंजिला चौमुख ध्वजा, दण्ड, कलश से सुशोभित प्राचीन कापरड़ तीर्थ पर होने जा रहे अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव की आमंत्रण पत्रिका का लोकार्पण तीर्थ के अध्यक्ष श्री शांतिलालजी जागंड़ ने किया।

शासन सम्राट आचार्य श्री विजय नेमिसूरीजी महाराज के समुदायवर्तीय आचार्य श्री विजयसोमचंद्रजी सूरीजी, आचार्यश्री विजय श्री चन्द्रसूरीजी, आचार्य श्री विजय कुलचन्द्रसूरीजी, आचार्य श्री विजय प्रशमचंद्र सूरीजी आदि सहित लगभग 70 साधु-साध्वी भगवंतों के पावन सानिध्य में प्रतिष्ठा महोत्सव 27 नवंबर 2016 से शुभारंभ हुआ जो नौ दिवस तक चलेगा। मुख्य प्रतिष्ठा महोत्सव एवं कुमारी अंकिता की भागवती दीक्षा रविवार 4 दिसंबर को सम्पन्न हुई प्रतिष्ठा महोत्सव की तैयारियां जोरों से की गई।

श्री पार्श्व जन्म दीक्षा कल्याणक महोत्सव मनेगा

अमीझरा तीर्थ- श्री 108 पार्श्वनाथ तीर्थ में गिने जानेवाले प्रसिद्ध श्री अमीझरा पार्श्वनाथ तीर्थ में डुआ गुजरात में परमात्मा के जन्म देव एवं दीक्षा कल्याणक पर पंच दिवसीय महोत्सव का आयोजन होने जा रहा है। 21 से 25 दिसंबर तक होनेवाले महोत्सव में अट्ठम तपाराधना, चैत्य परिपाटी, स्नात्र महोत्सव आदि धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा। पूज्य आचार्य श्री अधिप्रभसूरीजी म.सा. आदि साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा रहेगी।

श्री अयोध्यापुरम् तीर्थ में मुनिपुंग श्रीपद्मचंद-सागरजी और श्री आनंदचंद्र सागरजी म.सा. गणिपद पर आरूढ़ किये जावेंगे

✽ गणि पदवी 2 फरवरी को होगी। तैयारी आरम्भ हुई।

इन्दौर- पूज्यपाद बंधु बेलड़ी आचार्य भगवंत श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी एवं आचार्य श्री हेमचंद्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की पावन निश्रा में गणि पदवी का भव्य आयोजन श्री अयोध्यापुरम् तीर्थ में होने जा रहा है। 2 फरवरी 2017 को आयोजित होने वाले श्रमणोत्सव के इस आयोजन में मुनिश्री पद्मचंद्रसागरजी एवं मुनिश्री आनंदचंद्र सागरजी म.सा. को गणिपद प्रदान किया जावेगा। गणि पद कार्यक्रम के लिये व्यापक कार्यक्रम की रूपरेखा बन गई है। आयोजन की तैयारी चल रही है। इन्दौर में चल रहे उपधान तप की आराधना में 200 आराधक जुड़ेहुए है। 130 आराधकों की माल होगी।

श्री भक्तामर अभ्युदयधाम धार में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव 2018 में होगा

धार- श्री शंखेश्वर आगम मंदिर संस्थापक पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी म.सा. की देवलोक भूमि पर निर्मित श्री भक्तामर अभ्युदयधाम तीर्थ पर नवनिर्मित श्री भक्तामर की 44 गाथा की देहरियों में 24 तीर्थंकर परमात्मा एवं 20 विहारमान जिनेश्वर प्रभु की प्रतिमा के साथ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ श्री नाकोड़ा भैरव, माता पद्मावतीदेवीजी आदि प्रतिमा प्रतिष्ठा एवं अंजनशाला का मुहूर्त प्राप्त हो चुका है। प्रतिष्ठा सागर समुदाय के गच्छाधिपति पूज्यपाद जिनागम सेवी आचार्य देवेश श्री दौलतसागरसूरी महाराजा के वरद् हस्ते सम्पन्न होगी। महोत्सव में अंजनशाला का माघ शुक्ल-4, दिनांक 2018 तथा प्रतिष्ठा माघ शुक्ल-5 दिनांक 22 जनवरी 2018 को सम्पन्न होगी। महोत्सव का मंगल आगाज 14 जनवरी से होगी। सम्पूर्ण महोत्सव ज्योतिर्विद आचार्यश्री जिनरत्नसागर सूरीजी, आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी एवं आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागरसूरीजी म.सा. के मार्गदर्शन प्रेरणा में होगी। कार्यक्रम की तैयारियां आरम्भ हो गई है।

पूज्य पंन्यास प्रवर श्री अभयसागरजी म.सा. की पुण्यतिथि मनाई गई

नागेश्वर- विश्व प्रसिद्ध श्री नागेश्वर महातीर्थ के उद्धारक आगम विशारद पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री अभयसागरजी म.सा. की पुण्यतिथि पर २२ नवंबर को भव्य गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। पूज्य साध्वी श्री मुक्तिरेखा श्रीजी की निश्रा में गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री पार्श्व पंचकल्याणक पूजन तथा साधार्मिक वात्सल्य का आयोजन भी हुआ।

मृत्यु मातम नहीं महोत्सव है

✽ प.पू. आनंदचंद्रसागर म.

मृत्यु मातम नहीं महोत्सव है। मृत्युमय जीवन से बेहतर है जीवनमय मृत्यु। मौत, जब तक नजर नहीं आती....जिन्दगी राह पर नहीं आती। जिन्दगी अभ्यास है, मृत्यु इम्तिहान है और परलोक रिजल्ट है। अगर इम्तिहान में कामयाब होना है तो कड़ी से कड़ी प्रेक्टिस करना होगी, जिन्दगी संवार लो, मौत खुद ब खुद सुधर जाएगी। 'मृत्यु एक महोत्सव' विषय पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए युवा मुनिश्री ने अपने प्रवचन में बतलाया-व्यापारी अपना हिसाब-किताब ईमानदारी से रखता है तो उसे इन्कमटेक्स आफिसर का भय नहीं सताता। इसी प्रकार जो व्यक्ति जिन्दगी को स्वच्छ रखता है, उसे मृत्यु का भय नहीं सताता। 'चले जाना' इस दुनिया का अटल दस्तूर है.... उगने वाला सूरज सांझ होते-होते ढल जाता है। हमें भी एक दिन जाना है। मृत्यु का स्टेशन आने से पहले जिन्दगी की ट्रेन में से हमें पाप के बोझ को कम कर देना होगा तभी हम सुविधा से प्राणों का त्याग कर सकेंगे। प्रभु स्मरण की तरह नित्य मृत्यु-स्मरण भी जरूरी है। जिन्दगी किराये का घर है, जो एक दिन तो बदलना पड़ेगा। मौत जब हमको आवाज देती है तो घर से बाहर निकलना पड़ेगा। जिस प्रकार 'मृत्यु' अनिवार्य है, उसी प्रकार 'मृत्यु के समय समाधि' भी अनिवार्य है।

✽ जिस आत्मा में किसी प्रकार की शुभ विचारणा ही नहीं है, केवल भौतिक पदार्थों की प्राप्ति के लिये ही पागल बनकर भटक रहा है, वह असदाचारी है।

जम्बुद्वीप परिसर में चांदी के श्री नागेश्वर तथा श्री प्रभुवीर प्रतिमा की प्रतिष्ठा होगी

* **108 फीट के श्री आदिनाथ प्रभु का महामस्त अभिषेक 26 जनवरी को होगा।**
* **अभिषेक प्रतिष्ठा की बोली 28 नवंबर को हुई।**
* **प्रतिष्ठा 9 फरवरी को होगी।**
* **सागर गच्छाधिपति की मंगल पावन निश्रा रहेगी।**

पालीताना- शाश्वत महातीर्थ श्री सिद्धाचल में स्थित जग विख्यात जम्बुद्वीप में परिसर एक बार फिर आल्हादकारी मंगल जयनाथ के घोष का मंगल अवसर आया है। पूज्यपाद जिनागम सेवी गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा की अमृत निश्रा में होने जा रहे इस प्रतिष्ठा अभिषेक महोत्सव में सैकड़ों की संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों के साथ में अनेक आचार्य भगवंत उपस्थित रहेंगे। पूज्य आचार्य भगवंत अशोक सागर सूरीश्वरजी महाराजा के साथ नूतन जैनाचार्य श्री सौम्यचंद्रसागर सूरीश्वरजी एवं श्री मतिचंदसागर सूरीश्वरजी म.सा. का मंगल मार्गदर्शन महोत्सव में प्राप्त होगा। 28 नवंबर को अभिषेक और प्रतिष्ठा के चढ़ावे सम्पन्न हुए। 26 जनवरी को दादा का महामस्तकाभिषेक तथा 9 फरवरी को प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी।

जैसलमेर दुर्ग जिनालयों का ध्वजा महोत्सव सम्पन्न

जैसलमेर– विश्वविख्यात स्वर्णनगरी जैसलमेर महातीर्थ के दुर्ग स्थित जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान व सभी जिनालयों का त्रिदिवसीय वार्षिक ध्वजारोहण महोत्सव 05 नवम्बर 2016 को जिनाज्ञा युवा ग्रुप अहमदाबाद परिवार ने बड़े ही हर्षोउल्लास के साथ ध्वजारोहण महोत्सव संपन्न किया।

इस भव्य ध्वजारोहण महोत्सव के मुख्य अतिथी जैसलमेर के विधायक छोटुसिंह भाटी थे। इस वर्ष जैसलमेर दुर्ग के सभी जिनालयों की ध्वजा, स्वामीवात्सल्य, का संपूर्ण लाभ जिनाज्ञा युवा ग्रुप अहमदाबाद परिवार द्वारा लिया गया।जैन ट्रस्ट के तत्वावधान में अभिनंदन समारोह मे पधारे मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथियों एवं लाभार्थी परिवार का जैन ट्रस्ट मंडल जैसलमेर ने तिलक, माला, साफा, स्मषति चिन्ह व श्रीफल भेंटकर बहुमान किया।विधायक छोटूसिंह भाटी ने कहा कि जैन धर्म त्याग, तपस्या, और संयम प्रधान धर्म है। उन्होने बाहरी नगरों से पधारे हुए समस्त जैन बंधुओं को कहा कि स्वर्णनगरी में इसी तरह हरवर्ष ध्वजा महोत्सव व तीर्थ यात्रियों का काफिला अनवरत चलता रहे। विधायक भाटी ने कहा कि मेरा और जिला प्रशासन का पुर्ण सहयोग हरवर्ष ऐसे आयोजनों को रहेगा। जिनाज्ञा युवा ग्रुप के राजा भाई ने पधारें हुए समस्त अतिथियों व यात्रियों का अभिवादन करते हुए महोत्सव में पधारने पर धन्यवाद दिया।जैन भवन से ध्वजा कि भव्य शोभायात्रा निकाली गई जिसका शुभारंभ मुख्य अतिथि छोटूसिंह भाटी ने जैन ध्वज लहराकर किया । विजय मुहुर्त में सभी शिखरों पर ध्वजारोहण किया गया।जैन ट्रस्ट जैसलमेर के अध्यक्ष महेन्द्रसिंह भंसाली ने बताया कि आगामी वर्ष 2017 ज्ञानपंचमी की ध्वजा का लाभ समस्त खीमत जैन समाज हस्ते अनील त्रिभुवनदास शाह नवसारी वालों द्वारा लिया गया। सभी जिन प्रतिमाएं व दादागुरुदेव व भैरुजी की पक्षाल पूजा के बाद सभी प्रतिमाओं की फूलो से अंगरचना की गई। सभी श्रद्वालुओं ने ज्ञान भंडार के ग्रंथों की वासक्षेप से पूजा की ।

– महेन्द्रसिंह भंसाली

पूज्य मुनिश्री आगमचंद्रसागरजी गणिवर्य पद पर विराजित होंगे

सूरत-पाल- पू.आचार्य श्री नयचंद्र सागरसूरी एवं आचार्यश्री पूर्णचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि साधु-साध्वी भगवंतों की पावन निश्रा में सूरत के समीप ही पाल में पूज्य मुनिश्री आगमचंद्र सागरजी म.सा. को गणि पद से विभूषित किया जा रहा है। गणिपद प्रदान महोत्सव 8 दिसंबर को सूरत के समीप पाल श्रीसंघ में होगा।

*** निश्चय को लक्ष्य में रखकर व्यवहार से वर्तन करनेवाला आत्मा ही सिद्ध-बुद्ध बन सकता है अन्य नहीं।**

सागर समुदाय में आकाश और मैथिलभाई ने दीक्षित हो श्रीवीरप्रभु की श्रमण परम्परा को आगे बढ़ाया

✻ पूज्य जैनाचार्य श्रीसागरचंद्रसागरसूरीजी का शिष्यत्व ग्रहण करेंगे।
✻ श्री आगमोद्धारक उपधान नगरी में संयमोत्सव होगा।
✻ अजंन प्रतिष्ठा भी हुई।

मुंबई- पूज्य जैनाचार्य श्री सागरचंद्र सागर सूरीश्वरजी म.सा. का मुंबई का यह चार्तुमास सागर समुदाय और श्रमण परम्परा के लिये ऐतिहासिक बनने जा रहा है। यही नहीं पूज्यपाद सागरजी महाराजा के दीक्षा का 125 वां वर्ष होने से भी यह पूज्यश्री को भावभरी वंदना है। सम्पूर्ण कार्यक्रम मुंबई में जैन जगत की शान श्री बाबू अमीचंद पन्नालाल आदिश्वर देरासर के प्रांगण में हुआ। 16 नवंबर को प्रातःकाल शुभ लग्नांश वेला में वर्षीदान वरघोड़े के उपरांत दीक्षा की क्रिया विधि आरंभ हुई। भव्य संघ महोत्सव में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों की उपस्थित रहे। मुख्य वर्षीदान वरघोड़ 14 नवंबर को आयोजित हुआ।

इसके पूर्व 13 नवंबर से श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ परमात्मा की अजंन प्रतिष्ठा का महोत्सव आरंभ हुआ। पावन प्रतिष्ठा 19 नवंबर को सम्पन्न हुई।

सांकरिया परिवार के द्वारा राजोद से श्री नागेश्वर महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन

✻ राजोद से प्रस्थान 2 दिसंबर को।
✻ माल 13 दिसंबर को होगी।
✻ पूज्य आचार्य श्री जिन-जित-चन्द्रसागरसूरीजी की पावन निश्रा।

राजोद- यहां के श्रीमती सरोज बहन कन्हैयालालजी सांकरिया परिवार के द्वारा राजोद से श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ के छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन होने जा रहा है। मालवा के तीन आचार्य भगवंत ज्योतिर्विद आचार्य श्री जिनरत्नसागरसूरीजी, आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी एवं आयंबिल आराधक आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी म.सा. के साथ शताधिक साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में यह पैदल यात्रा संघ 2 दिसंबर 2016 को राजोद से मंगल प्रस्थान किया एवं विश्व विख्यात श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ में संघ की माल 13 दिसंबर को सम्पन्न होगी। संघ की व्यापक तैयारियां आरंभ हो गई है। सम्पर्क- 99815-17432

✻ शुद्ध ध्येय के लक्ष्य से की गई क्रिया ही आत्मा का हित करती है। वही क्रिया तारक भी है अशुद्ध ध्येय से की जाने वाली क्रिया मारक भी बन सकती है।

जय जिनेन्द्र सेवा संघ चैत्र ओली के सारे 52 तीर्थो की यात्रा करवायेंगे

पूना- जय जिनेन्द्र सेवा संघ के द्वारा चैत्र की शाश्वती ओली आराधना भेरूतारकधाम तीर्थ में कराई जावेगी। इसके साथ ही आराधकों को 52 तीर्थों की यात्रा करवाई जावेगी। पूज्य आचार्यश्री जिनेशरत्नसूरीजी म.सा. की निश्रा में 2 से 13 अप्रेल तक चैत्र ओली महोत्सव मनाया जायेगा। प्रभुवीर का जन्म कल्याणक 9 अप्रेल को महोत्सवपूर्वक मनाया जायेगा। म.प्र. के आराधक 99933 पर सम्पर्क करें। 2018 में शंखेश्वर महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ निकालने की योजना है। अर्बुदाचल पर ग्रंथ का विमोचन भी होगा।

कालधर्म....

✻ दक्षिण केसरी आचार्य श्री स्थुल-भद्रसूरीजी म.सा. के शिष्यरत्न 108 ओली के आराधक पूज्य आचार्य श्री कल्पयश सूरीश्वरजी म.सा. का कालधर्म 16 नवंबर को हो गया। 20 नवंबर को गुणानुवाद सभा नगर पेठ में आचार्य श्री चंद्रयश सूरीजी की निश्रा में हुई।

✻ पूज्य साध्वी श्री चन्द्रयशा श्रीजी म.सा. का कालधर्म ऊंझा में हुआ। आप सागर समुदाय से थे। 117 बार चौविहार छट्ठ यात्रा करके आपने 117X7=819 यात्रा की छट्ठ यात्रा का पारणा आप एक यात्रा करने के बाद ही करते थे। अंतिम यात्रा आपने अट्ठम तप करके 15 यात्रा की आपने 944 बार दादा श्री आदिनाथ प्रभु के भावपूर्वक दर्शन किये।

✻ पूज्य साध्वी श्री हितोदया श्रीजी म.सा. का कालधर्म ऊंझा में 4 नवंबर को हो गया। आप सागर समुदाय से थे।

हमारे तीज-त्यौहार

1- मृगशीर्ष-सुदी-6	सोमवार	5/12/2016	पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा का दीक्षा दिन
2- मृगशीर्ष-सुदी-11	शनिवार	10/12/2016	मौन एकादशी, न्यायविशारद महोपाध्याय श्री यशोविजयजी का स्मृति दिन
3- मृगशीर्ष-सुदी-15	मंगलवार	13/12/2016	पूनम, रोहिणी
4- पोष-वदी-3	शुक्रवार	16/12/2016	धनार्क कुर्मुता आरंभ
5- पोष-वदी-10	शुक्रवार	23/12/2016	श्री पार्श्वनाथ प्रभु का जन्म कल्याणक
6- पोष-वदी-11	शनिवार	24/12/2016	श्री पार्श्वनाथ प्रभु का दीक्षा कल्याणक

पंचक- आरंभ-मृगशीष सुद्दी-6, दिनांक 5/12/2016, सोमवार, समयः- 23.08 बजे
समाप्त-मृगशीष सुद्दी-11, दिनांक 10/12/2016, शनिवार, समयः-8.30 बजे

पुष्प नक्षत्र- आरंभ-पोष वुद्दी-3, दिनांक 16/12/2016, शुक्रवार, समयः-14.26 बजे
समाप्त-पोष वुद्दी-4, दिनांक 17/12/2016, शनिवार, समयः-13.10 बजे

✻ अरिहंत की आज्ञा की आराधना निकाचित कर्मों को कभी नष्ट न भी कर सके। पर उन निकाचित कर्मों के अनुबंध को तो अवश्य नष्ट करती है। कर्म से भी अनुबंध खतरनाक है। निकाचित कर्मों की शक्ति सुख-दुःख देने तक सीमित है पर सुख-दुःख के उदय में आसक्ति तो अनुबंध के घर की है। जहां सुख की आसक्ति और दुःख के प्रति अनादर भाव नष्ट हो जाय वहां निकाचित कर्म आत्मा का अंशमात्र भी अहित नहीं कर सकते। इसी कारण अरिहंत की आज्ञा की आराधना में समय मात्र का भी प्रमाद नहीं करना चाहिये।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम २५ सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

पेड़ पर एक बंदर बैठा जाड़ेसे सिकुड़ रहा था। उसके पास ही एक टहनी पर बया नामक पक्षी का घोंसला था। बया ने बंदर की दुर्दशा देखकर उससे कहा- ए बंदर! तेरे हाथ-पांव मनुष्य के समान है, फिर भी तू इस प्रकार कष्ट पाता है, अपने लिए एक घोंसला क्यों नहीं बना लेता? देख, मैं तो एक छोटा-सा पक्षी हूं, फिर भी मैंने अपने लिए एक घोंसला बना लिया है और सुख से रहता हूं। बंदर को इसका कहना बहुत बुरा लगा और हाथ मारकर उसका घोंसला तोड़ डाला। अपात्र को शिक्षा देने से कोई लाभ नहीं होता।

सादर आमंत्रण

✻पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चातुर्मास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें। ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सके।

✻आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव,मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻अंक आपके तक नियमित रूप से नवीन स्वरूप के साथ १० तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक